सेनबोसेक

तिमाही बुलेटिन खण्ड 48 • संख्या 2 • अप्रैल–जून 2009

स्कूलों में सुरक्षा

सहोदय कॉम्प्लेक्स के उत्तर पश्चिमी दिल्ली अध्याय के वार्षिक सम्मेलन में, अध्यक्ष एवं सचिव सीबीएसई, श्री विनीत जोशी और उनके साथ डॉ. संगीता भाटिया तथा श्रीमती मुक्ता मिश्रा जिसमें ''**सुरक्षित स्कूल : सुरक्षित भारत**'' के मुद्दे पर चर्चा की गई

सेनबोसेक

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का तिमाही बुलेटिन

खण्ड – 48 संख्या – 2 अप्रैल–जून 2009

परामर्शदात्री समिति

विनीत जोशी, आई.ए.एस.

अध्यक्ष एवं सचिव

एम. सी. शर्मा

परीक्षा नियन्त्रक

चित्रलेखा गुरूमूर्ति

निदेशक (शैक्षिक)

पीतम सिंह

एच. ओ. डी. (परीक्षा और ए.आई.ई.ई.ई.)

शशि भूषण

एच. ओ. डी. (एडूसैट)

सम्पादकीय मंडल

डॉ. साधना पाराशर

शिक्षा अधिकारी

अलहिलाल अहमद

सहायक शिक्षा अधिकारी

सेनबोसेक में प्रकाशित किसी लेखक के विचार लेख / योगदान बोर्ड के दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व नहीं करते है।

सचिव, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, शिक्षा सदन–2, सामुदायिक केन्द्र प्रीत विहार, दिल्ली – 110092 द्वारा प्रकाशित और चन्दू प्रेंस, डी. 97 सकरपुर, दिल्ली – 110092, द्वारा मुद्रित

विषयवस्तु

अध्यक्ष की ओर से 3

फीडबैक मंच 5

लेख

सुरक्षित विद्यालय, सुरक्षित भारत – डॉ. साधना पराशर 8

विद्यालयों में आपात स्थिति में सामान्य चिकित्सा उपलब्ध कराना – डॉ. जितेंद्र नागपाल 14

स्कूलों में सुरक्षा का आपेक्षिक महत्त्व – श्रीमती ज्योति गुप्ता 18

स्कूलों में सुरक्षा एवं स्वास्थ्य – एक सामान्य परिदृश्य – महालक्ष्मी वी 21

स्कूल में ''साइबर बुलीइंग'' का सामना करना – सुश्री ज्योति चौधरी 24

स्कूल में सुरक्षा – राजीव शर्मा 27

नवोदय विद्यालयों में विद्यार्थियों की सुरक्षा – के.एल. नागराजू 30

''सुरक्षित विद्यालयों'' के विषय में अन्य प्रधानाचार्यों का क्या कहना है 32

अन्य शिक्षक ''स्कूल सुरक्षा'' के विषय में क्या कहते हैं 33

सर्वोत्तम अभ्यास करते विद्यालय 35

प्रसार माध्यम की कतरनें (अंग्रेजी) 37

सुरक्षा के विभिन्न आयामों की जांच सूची 39

कार्यक्रमों के विवरण 44

विद्यालयों से समाचार 47

सहोदय गतिविधियां 55

हरित पृष्ठ 60

शैक्षणिक अपडेट 62

क्रीड़ा जगत 64

सीबीएसई द्वारा प्रकाशित ''स्कूल हेल्थ मैनुअल'' के कुछ अंश 66

सी. बी. एस. ई. परिपत्र

अध्यक्ष की ओर से

"उपचार से बेहतर रोकथाम" एक ऐसी लोकोक्ति है जो लगातार दोहराई जाती है परंतु अमल में नहीं लाई जाती। सुरक्षित विद्यालयों की आवश्यकता उत्तरोत्तर स्वयं प्रमाणित होती जा रही है। विद्यालय के विषय में मेरी संकल्पना है कि एक ऐसा सुरक्षित स्थान जहां लिंग, वर्ग, धर्म, भाषा या संस्कृति के अंतर से निरपेक्ष, प्रत्येक बच्चा अपनेपन का अहसास करें और अपनी पहचान एवं आत्म सम्मान विकसित करें। यह एक ऐसा स्थान है जहां शिक्षक लिंग, वर्ग, धर्म, भाषा या संस्कृति के कारण आने वाले पक्षपात से रहित शिक्षा प्रदान करें।

सुरक्षा के विभिन्न पक्ष हैं जिसमें शारीरिक, भावनात्मक और सामाजिक पक्ष निहित हैं। भौतिक परिपेक्ष्य में सुरक्षा के विषय वाद–विवाद, झगड़े से लेकर रेगिंग और मारने पीटने तक पहुंचते हैं जो कभी कभी दंगों का रूप ले लेते हैं। खेल के मैदान में चोट लग सकती है तो ऐसी आपदा भी आ सकती है जो प्रकृति हो या मानव निर्मित। सुरक्षा के भावनात्मक परिप्रेक्ष्य उत्पीड़न, मारना पीटना, लिंगभेद का दबाव, या गाली–गलौच से उत्पन्न होते हैं।

मेरे नौ वर्षीय पुत्र ने विद्यालय जाने से इंकार कर दिया क्योंकि एक वरिष्ठ विद्यार्थी खेल के मैदान में उसे और उसके मित्रों को बाध्य करता था कि वे उसकी गेंद को उठाकर लाएं। मुझे पूरा विश्वास है कि यह एक आम दृश्य है और विकास की प्रक्रिया का एक भाग है परंतु बच्चे की चिंता को चाहे वह कैसा भी छोटा विषय हो किसी भी परिस्थिति में अनदेखा न किया जाए। माता–पिता, शिक्षकगण और परामर्शदाता निकटता एवं सहयोग से काम करें तथा सुनिश्चित करें कि प्रत्येक बच्चा विद्यालय के परिवेश में सुरक्षा का अहसास करे। भावनात्मक संतुलन तब ही प्राप्त हो सकता है जब बच्चे का संसार आनंद और प्रसन्नता से पूर्ण हो तथा उसे समस्त क्षेत्रों में रचनात्मक होने की स्वतंत्रता प्राप्त हो।

ऐसे बच्चे भी हैं जो विकलांग हैं परंतु वे भी अन्य बच्चों के साथ अध्ययन कर रहे हैं। यह अनिवार्य है कि हम इन सब बच्चों की सुरक्षा के निमित्त चिन्तित एवं संवेदनशील हों। हमें यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि हम विद्यालयों में सुरक्षा योजना का पालन करें जिसमें शारीरिक, आधारभूत संरचना संबंधित तथा भावनात्मक पक्ष हो प्रत्येक स्कूल में परामर्शदाता, डॉक्टरों और नर्सों की उपस्थिति द्वारा उपचार की व्यवस्था तथा निकट के अस्पताल से सम्बन्धता हो तथा समाज में शांति और मेल–मिलाप के लिए जागरूकता लाने वाले कार्यक्रम भी सम्मिलित हों।

सीबीएसई में अपने परिपत्रों द्वारा विद्यालयों को लगातार परामर्श देता आ रहा है कि शारीरिक दंड देना बंद कर दें और बच्चों के प्रदर्शन एवं व्यवहार में सुधार लाने के लिए आत्मविश्वास का विकास एवं सकारात्मक प्रयास करें। प्रत्येक चरण में माता–पिता का सहयोग महत्त्वपूर्ण होता है, अतः उन्हें शिक्षा–अध्ययन में साझेदार समझना चाहिए। मंडल ने चार खण्डों का **"कम्प्रीहेंसिव स्कूल हेल्थ मैनुअल"** भी प्रकाशित किया है जिसमें छः मुख्य विषय हैं जिनमें से एक विषय है, **"बीइंग रिस्पॉसिबल एंड सेफ"** (उत्तरदायी एवं सुरक्षित रहना) इन खण्डों में विभिन्न स्तरों के लिए वर्गीकृत कार्यकलाप हैं और इन्हें विद्यालय के पाठ्यक्रमों का अनिवार्य भाग होना चाहिए। मंडल ने अपने आठ

क्षेत्रीय कार्यालयों द्वारा प्रत्येक विद्यालय को एक सेट निःशुल्क दिया है। संशोधित मैनुअल प्रकाशनाधीन है और शीघ्र ही, **शिक्षा सदन, 17 इंस्टीट्यूशनल एरिया, राउज़ एवेन्यू, दिल्ली 110002** के पुस्तक भंडार में उपलब्ध होंगे।

सेनबोसेक के वर्तमान संस्करण में विद्यालयों की सुरक्षा के विभिन्न क्षेत्रों की चर्चा की गई है और इस दिशा में उत्तर पश्चिमी दिल्ली के सहोदय स्कूल कॉम्प्लेक्स द्वारा पहला कदम उठाया गया है। उन्होंने मुझे "**सेफ स्कूल – सेफ इंडिया**" विषय पर आयोजित प्रधानाचार्यों के सम्मेलन में आमंत्रित किया था। इस सम्मेलन से उभर कर आई सुरक्षा के विभिन्न क्षेत्रों की परीक्षण सूची जिसका उपयोग सब विद्यालय अपने विद्यालयों में पूर्वकालिक योजना बनाने में कर सकते हैं।

मैं सब विद्यालयों को शुभ यात्रा कहता हूं – वर्षों की एक ऐसी यात्रा जिसमें वे अपने पास आने वाले बच्चों को वयस्क बनाते हैं।

विनीत जोशी
अध्यक्ष एवं सचिव
सीबीएसई

फीडबैक मंच

आदरणीय महोदय/महोदया

''इन्क्लूसिव एजुकेशन'' पर सेनबोसेक प्रकाशन को देखकर मैं अत्यधिक उत्साहित थी। मैं 1993 में डॉ. फिलिप जॉन के नेतृत्व में विशेषज्ञों के दल द्वारा आयोजित कक्षा में उपस्थित हुई थी। इसका विषय था, ''स्पेसिफिक लर्निंग डिसएबिलिटी इन चिल्ड्रन'' तब से ही मैंने बच्चों में ऐसी समस्याओं की पहचान और उपचार का अपना अन्वेषण आरंभ कर दिया। मुझे यह स्वीकार करते हुए संतोष है कि हमारे विद्यालय ने इसे अभियान बना लिया है और विद्यालय में अनेक मानसिक स्वास्थ्य संबंधित कार्यक्रम सफलतापूर्वक आयोजित किए हैं जिससे ऐसे विद्यार्थियों को कभी यह आभास नहीं हुआ कि वे विकलांग है ब्लकि उन्हें यह समझ आ गया कि वे ''डिफरेंटली एबल्ड'' या भिन्न क्षमताओं वाले हैं।

मैं कुछ कार्यक्रमों का यहां उल्लेख कर रही हूं जो हमने इन विद्यार्थियों के आत्म सम्मान को बढ़ाने में और उनके माता–पिता द्वारा उनके प्रति सकारात्मक व्यवहार करने में सहायता हेतु किए हैं।

- शैक्षिक उपलब्धियों का वर्गीकरण करना निम्न कक्षाओं में भी वर्जित है।
- मॉनीटरों की नियुक्ति शैक्षिक वरीयता की अपेक्षा नेतृत्व के गुणों के आधार पर और *'सबको बराबर अवसर'* की नीति के आधार पर की जाती है।
- शिक्षकों को एसएलडी के आरंभिक निदान का प्रशिक्षण दिया जाता है और उन्हें ऐसे विद्यार्थियों की सूचना प्रधानाचार्य को तुरंत देनी होती है। इन बच्चों के माता–पिता को व्यक्तिगत परामर्श प्रदान किया जाता है।
- प्रत्येक विद्यार्थी को अपने बौद्धिक स्तर से ऊपर उठने में सहायता प्रदान की जाती है। उदाहरण, एक दस वर्षीय बच्चा यदि कक्षा दो की पुस्तक पढ़ने में सक्षम नहीं तो माता–पिता को परामर्श दिया जाता है कि वे अपने बच्चे को सिखाने में शिक्षकों को सहयोग दें।
- ये विद्यार्थी साधारणतः सामान्य कोटि या उच्च कोटि या कभी कभी उच्च बुद्धि मात्रा के होते हैं। उनकी समस्या लिखने या पढ़ने की होती है। ऐसे बच्चों को अपने आयुवर्ग की जानकारी से वंचित नहीं करना चाहिए। यह कार्य मौखिक संपर्क और मल्टीमीडिया द्वारा संभव होता है। उनका परीक्षण लिखित परीक्षा द्वारा नहीं किया जाना चाहिए वरन मौखिक परीक्षा ली जानी चाहिए। जब वे विकास के उस स्तर पर पहुंचें जहां वे पढ़ने और लिखने में तत्परता दिखाएं तो वे स्वयं ही सक्षम हो जाते हैं। परंतु वे जानकारी में अपने आयुवर्ग से पिछड़े नहीं होते हैं।
- माता–पिता के उचित सहयोग और विद्यार्थी के अनुशासन से हम एसएलडी को सुधार कर 13 वर्ष की आयु तक सामान्य बना सकते हैं। मेरी एक विद्यार्थी कक्षा 9वीं में है। वह लगभग सभी विषयों में 85 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करती है। यह एक स्पष्ट प्रमाण है कि हम बच्चों में

''समावेशी शिक्षा'' द्वारा परिवर्तन ला सकते हैं। ऐसे बच्चों, जो अन्यथा व्यक्त किए जाते हैं, में रुचि दिखाने के लिए सीबीएसई को बधाई !

सधन्यवाद,

श्रीमती अनु जॉर्ज,
प्रधानाचार्या,
मार डाइओनिसियस सीनियर सेकंडरी स्कूल,
ऋषि वेली, चेंगरूर पी.ओ
मल्लापल्ली
केरल 689594

प्रिय विनीत जी,

- आपकी बड़ी कृपा थी कि आपने 30 मार्च, 2009 के दिन अपनी उपस्थित से हमें सम्मानित किया क्योंकि उस ऐतिहासिक दिन आर्मी वेलफेयर एजुकेशन सोसायटी ने अपने फेकल्टी डेवलपमेंट एंड रिसर्च सेंटर का शुभांरभ किया था।

- आर्मी विद्यालयों के प्राथमिक शिक्षक – शिक्षिकाओं की कार्यशाला का आरंभ भी उसी दिन हुआ था। इस समय चौथी कार्यशाला की तैयारी चल रही है। श्री ओम पाठक के सक्षम नेतृत्व में ''टीचर्स सिटी'' के विभाग ने प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए सुनियोजित पाठ्यक्रम निष्पादित करने में अत्यधिक परिश्रम किया है। कार्यशाला का संचालन ''केस स्टडीज़'' पर आधारित है और प्रकृति में पारस्परिक विचार विमर्श का है। सहभागियों से प्राप्त प्रतिसूचना प्रोत्साहन से पूर्ण है। मेरे विचार में शिक्षक पूर्ण लाभ उठाकर अपने अपने विद्यालयों में अधिक उत्तम शिक्षक बनकर जाते हैं। आने वाले समय में वे अपने–अपने विद्यालय में ''परिवर्तन एजेंट'' का काम करेंगे।

- उद्घाटन समारोह में हमने जो परिचर्चा आरंभ की थी उसे जारी रखते हुए हम आज इस स्थिति में हैं कि कार्यशाला आयोजन हेतु एफ.डी.आर.सी. कॉम्प्लेक्स और छात्रालय उपलब्ध करा सकें (न लाभ – न हानि के आधार पर) सीबीएसई के तत्त्वावधान में शिक्षकों के लिए 1–19 जून 2009 और इसके बाद आवश्यकता के आधार पर जिसके लिए प्रशासनिक प्रबंध हेतु तीन माह की सूचना का निवेदन किया जाता है।

- आप कृपया शिक्षकों के विकास हेतु इन सुविधाओं के सदुपयोग की संभाव्यता का सर्वेक्षण करें।

मेजर जनरल मनमोहन सिंह
प्रबंध निदेशक
आर्मी वेलफेयर एजुकेशनल सोसायटी
दिल्ली कैंट – 110010

प्रिय श्री जोशी,

''लिबरल एजुकेशन इन आर्ट्स, साइंस, एंड ह्यूमेनिटीज़ स्टेट्स, रोल एंड फ्यूचर'' जो इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में सोमवार, 13 अप्रैल 2009 को आयोजित किया गया था, उस गोष्ठी में आपकी उपस्थिति हमारा सौभाग्य रहा। हमारे मध्य उपस्थित होकर अपने बहुमूल्य विचार बांटने के लिए आपको धन्यवाद। यह प्रशंसनीय था।

हम आपके साथ फिर भेंट करने की प्रतीक्षा में है।

शुभकामनाओं और आदर सहित

आपकी आभारी

कविता ए. शर्मा
निदेशक,
इंडिया इंटरनेशनल सेंटर

सुरक्षित विद्यालय, सुरक्षित भारत

डॉ. साधना पराशर*

प्रस्तावना

सुरक्षा एक बहुमुखी संकल्पना है और सुरक्षित विद्यालयों को "**सुरक्षित विद्यालय योजना**" का प्रतिपादन करना आवश्यक है। विद्यालय को सुरक्षित और स्वागत का स्थान होना चाहिए। जहां विद्यार्थी और शिक्षक आतंक या किसी प्रकार की धमकी से मुक्त स्वतंत्र वातावरण में शिक्षण एवं अध्ययन प्रक्रिया में व्यस्त हों।

यह अंतर्ग्रहण करना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है कि 10–15 वर्ष आयु वर्ग के विद्यार्थी विशेष करके दुर्घटना संभाव्यता की विस्तृत सीमा में होते हैं क्योंकि स्वभाव से वे हर बात में उत्तेजित हो जाते हैं और इस प्रक्रिया में वे सुरक्षा को दांव पर लगा देते हैं। सुरक्षा का अर्थ है दुर्घटना या नुकसान की जोखिम या चोट लगने से बचाव करना। इस प्रकार हमारे लिए यह महत्वपूर्ण है कि उन्हें सुरक्षित रहना और चोट लगने से बचना सिखाएं।

सुरक्षा खतरों और नुकसान से मुक्ति है तो रोकथाम सुरक्षा का एक महत्त्वपूर्ण अवयव है। प्रत्येक व्यक्ति को जानना है कि जोखिम भरी परिस्थितियों में सुरक्षा का व्यवहार कैसे करें। आपातकालीन परिस्थिति में उत्तरदायित्व से पूर्ण कार्य करने के द्वारा कभी कभी जीवन बचाया जा सकता है। उदाहरणार्थ, प्रत्येक विद्यालय में आग लगने या प्राकृतिक आपदा की स्थिति में बच निकलने की योजना होना अनिवार्य है। सुरक्षा का वहां भी ध्यान रखना है जहां विद्यार्थी कोई नया कार्य कर सकते हैं, उदाहरणार्थ, साइकिल चलाना सीखना, प्रयोगशाला में प्रयोग करते समय, खाना पकाना सीखते समय, विद्यार्थियों को नई तकनीक सीखने की आवश्यकता है। उदाहरणार्थ, कुछ साधारण मार्गदर्शिकाओं का पालन करना जैसे मोमबत्ती को जलता न छोड़ें। इससे अनेक अग्नि कांड बचाए जा सकते हैं।

सुरक्षित विद्यालयों की संकल्पना

सुरक्षित विद्यालय अपने आप को सुरक्षित स्थान बनाने की संकल्पना विकसित कर सकते हैं जहां प्रत्येक बच्चे को अपनापन और अपनी पहचान मिले, अपना व्यक्तित्व विकसित कर पाए जहां लिंग भेद, वर्ग, धर्म, भाषा या संस्कृति में अंतर न हो। विद्यालय कार्मिक माता–पिता और विद्यालय के भीतर और बाहर के समुदाय के लिए भी ऐसा ही सुरक्षित वातावरण तैयार करें।

---

* शैक्षिक अधिकारी, सीबीएसई, दिल्ली।

सुरक्षा के आयाम

स्कूल में व्यापक सुरक्षा

भावनात्मक पक्ष	शारीरिक पक्ष	सामाजिक पक्ष
उत्पीड़न, मारना पीटना, रेगिंग	खेल के मैदान में झगड़े, दंगे, चोट	विद्यार्थी, शिक्षक और कर्मियों में परस्पर संबंधों की उत्तमता
प्रयोग, नशा	आपदा, भूकंप, आग	शिक्षकों और कर्मियों द्वारा विद्यार्थियों के साथ बराबरी और निष्पक्षता का व्यवहार
साथियों के प्रति नकारात्मक भाव	यातायात जोखिम	शिक्षकों और कार्मियों द्वारा प्रतिस्पर्धा और सामाजिक तुलना

स्कूल सुरक्षा के आयाम

आधारभूत और इमारत की सुरक्षा के संबंध में

अनिवार्य है कि विद्यालय की इमारत नगर निगम के भवन निर्माण मानकों को पूरा करे। इमारत की कम से कम दो दिशा में विद्यालय का पता और फोन नंबर स्पष्ट दिखाई दे। विद्यालय को उचित तल योजना और कक्ष संख्या की योजना बनानी चाहिए। विद्यालय में (गैस, बिजली पानी आदि) को बंद करने के स्थानों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करे। प्रवेश/निकास द्वार उचित निगरानी एवं नियंत्रण में हो।

बच्चे जोखिम में

बच्चे अपने काम के घंटों का लगभग एक चौथाई भाग विद्यालय या विद्यालय की संपदा में व्यतीत करते हैं। अतः यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि बच्चों को 10–25 प्रतिशत अवांछित चोटें प्रतिवर्ष विद्यालय में या उसके आस पास ही लगती है। चोट लगने के सर्वाधिक सामान्य स्थल खेल के मैदान शारीरिक प्रशिक्षण कक्षाएं, और व्यवस्थित खेलकूद कार्यक्रम और स्कूल बसें होते हैं।

खेल के मैदान की जोखिमें

5–14 वर्ष के बच्चों में विद्यालय में जो चोटें लगती हैं वे सामान्यतः विद्यालय के खेल के मैदान में लगती है। एक स्रोत के अनुसार अधिकांश चोटें (79 प्रतिशत) गिरने से लगती हैं। गिरना भी खेल के मैदान में साधन संबंधित गहरी चोटों में (सिर की चोट और हड्डी टूटना) 90 प्रतिशत चोटों का और 24 प्रतिशत घातक चोटों का कारण है। चोट लगने का खतरा चार गुणा अधिक हो जाता है जब बच्चा खेल के मैदान में किसी साधन पर से जो डेढ़ मीटर (लगभग 5 फुट) ऊंचा है उस पर से गिरता है।

कारण जो भी हों बच्चों पर यदि निगाह न रखी जाए तो चोट लगने की संभावना अधिक होती है। निगरानी की कमी खेल के मैदान की 40 प्रतिशत चोटें होती है। हाल ही के अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि बच्चे जब पार्कों में खेलते हैं तो स्कूल के खेल के मैदान की अपेक्षा वयस्कों की अधिक निगरानी में होते है। (32 प्रतिशत समय)

खेलकूद संबंधित जोखिमें

खेलकूद में लगने वाली चोटें गंभीर हो सकती हैं। रीढ़ की हड्डी की चोटों में 75 प्रतिशत चोटें स्कूल में खेलकूद के समय की होती हैं। विद्यालय द्वारा आयोजित खेलकूद में फुटबॉल में लगने वाली चोटें सब से अधिक हैं, इसके बाद, बास्केट बॉल, क्रिकेट, कुश्ती, और जिमनास्टिक। आयोजित खेलों में लगने वाली चोटों में अधिकांश घटनाएं (60 प्रतिशत) खेल की अपेक्षा अभ्यास के समय होती है।

यद्यपि चोट लगने की जोखिम खेल–कूद में भाग लेने वाले विद्यार्थियों में तुलनात्मक रूप से अधिक होती है, शारीरिक प्रशिक्षण कक्षाओं में लगी चोटें कुल योग में अधिक है। ***एमएचआरडी – सीबीएसई – बीसी फिज़िकल एजुकेशन इनिशिएटिव*** का अंग होने के कारण बोर्ड ''***फिज़िकल एजुकेशन* कार्ड**'' का विमोचन करने जा रहा है जिसमें शारीरिक प्रशिक्षण के समय सुरक्षा उपायों का स्पष्ट विवरण दिया गया है।

दुराचार (शारीरिक /भावनात्मक / सामाजिक)

साथियों और शिक्षकों द्वारा मारना पीटना या मानसिक उत्पीड़न की घटनाएं होने की संभावना है जिनके कारण छात्र कक्षा में ध्यान नहीं लगा पाता है। विद्यार्थी बिना अनुमति कक्षा से अनुपस्थित रहने लगता है, विद्यालय बदलने पर बाध्य हो जाता है या पढ़ना ही छोड़ देता है। कुछ असामान्य स्थिति में विद्यार्थी नशे का आदि हो जाता है या तनावग्रस्त मानसिकता विकसित कर लेता है।

विद्यालय सामान्यतः उत्पीड़ित विद्यार्थियों की सहायता करने में विफल होता है क्योंकि विद्यार्थी गड़बड़ा जाता है। झिझक, और निराशा के कारण विद्यालय के अधिकारियों से शिकायत नहीं करते।

स्कूल बस से संबंधित जोखिम

अधिकांश चोटें बच्चों को उस समय लगती है जब बस में चढ़ते या उतरते हैं क्योंकि बस के दस फुट के दायरे में चालक का ***"ब्लाइंड स्पॉट"*** होता है। विशेष करके छोटे बच्चे इससे अनभिज्ञ रहते हैं और सोचते हैं कि वे बस को देख सकते हैं तो चालक भी उन्हें देख सकता हैं।

विद्यालय सुरक्षा योजना के सात चरण

संकल्पना सृजन

आंकड़े एकत्रित करें और विश्लेषण करें

परिवर्तन के क्षेत्र पहचानें

लक्ष्य तय करें

महत्त्वपूर्ण कार्यनीतियां चुनें

उन्नति का मूल्यांकन करें और महत्त्व निर्धारण करें

'हेल्थ एंड वेलनेस क्लब' के अधीन मूल दल के लिए सदस्यों को पहचानें

रोकथाम और हस्तक्षेप

- **माता–पिता द्वारा सुरक्षा**

"आज तुमने स्कूल में क्या किया ?"
सचेत रहना और शामिल होना बच्चों को विद्यालय में लगने वाली चोटों से बचाने में बड़ा अंतर उत्पन्न करता है। माता–पिता अपने बच्चे के साथ विद्यालय में पूरा समय रह नहीं सकते इसलिए उन्हें परामर्श दिया जाता है कि वे सुरक्षित अभ्यासों का पक्ष लें और अपने बच्चों को सिखाएं कि वे अपने आप को कैसे बचा सकते हैं।

संभावित जोखिमों का निवारण :
विद्यालय चोट लगने से बचाने के लिए अपने खेल के मैदानों का निरीक्षण लगातार करता रहे, कि कोई उपकरण / साधन जंग लगा या टूटा तो नहीं है और सतह उभरी हुई तो नहीं। कोई भी वस्तु जो लगाई जाए उसे विद्यार्थी की आयु के अनुसार और जोखिम से युक्त होना चाहिए। जिन माता–पिता के बच्चे खेलकूद में भाग ले रहे हैं, वे समन्वयक या प्रशिक्षक से बात करके सुनिश्चित करें कि शारीरिक और मनोवैज्ञानिक अवस्था, उचित सुरक्षा उपकरण, सुरक्षित खेल का वातावरण, पर्याप्त वयस्क निगरानी, सुरक्षा नियमों का पालन तथा आपातकालीन चिकित्सा प्रबंध उपलब्ध हैं। विद्यालयों के लिए यह भी अति आवश्यक है किसी खेल को खेलने वाले विद्यार्थियों का निपुणता के स्तर पर, वजन और शारीरिक विकास के आधार पर उचित वर्गीकरण किया जाए विशेष करके ऐसे खेलों में जहां खिलाड़ियों का एक दूसरे से संबंध होता है।

बच्चों को सुरक्षा की शिक्षा दें

शिक्षक और संभवतः माता–पिता बच्चों को खेल के मैदान के उचित आचरण की शिक्षा दें, उन्हें विशेष करके कहा जाए कि धक्का न दें, बलपूर्वक आगे न बढ़ें और भीड़–भाड़ न करें। उन्हें यह भी समझाना होगा कि उनके आयु वर्ग के लिए कौन सा साधन उचित रहेगा। बच्चों को उत्प्रेरित किया जाए कि वे बस स्टॉप पर समय से पहले पहुंचें। सड़क से दूर रहें और बस में चढ़ने से पहले उसके पूरी तरह रुकने की प्रतीक्षा करें। बच्चों को यह भी स्मरण कराया जाए कि वे बस में बैठे ही रहें और चलती बस में से हाथ और सिर बाहर न निकालें।

- **विद्यालय में सुरक्षा सुनिश्चित करने के संभावित उपाय**

विद्यालय खास–खास शिक्षकों को, जो विद्यालय के आरंभ और अंत तक उत्तरदायित्व वहन करें दायित्व का भार सौंपें। शिक्षक मैदान, जंगलों, बाहरी उपकरण, प्रकाश व्यवस्था आदि के संबंध में सुरक्षा की चेतावनी दें। अतिरिक्त सुरक्षा उपायों में ''नो ट्रेसपासिंग'' के बोर्ड द्वारा दिन–रात किसी को भी इमारत की निकटता में आने से रोका जाए। छत पर चढ़ने या ऊंचे स्थानों में जाने से रोकना, अतिथि नियंत्रण, कक्षा के समय विद्यार्थियों का आवागमन, कर्मी पहचान, ''ब्लाइंड स्पॉट'' की चौकसी आदि।

नीतियां एवं कार्यविधि :

विद्यालय विद्यार्थियों और शिक्षकों की आचरण अपेक्षाओं की स्पष्ट नीतियां प्रतिपादित करें। विद्यालय द्वारा मानववादी अनुशासन नीति और ''हेल्थ एंड वेलफेयर क्लब'' के सुरक्षा संबंधित मूल दल का निर्माण करना आवश्यक है कि विद्यालय की सुरक्षा संबंधित गतिविधियों का नियंत्रण एवं पर्यवेक्षण किया जा सके।

कार्यक्रम :

विद्यालय की सुरक्षा को खतरे में डालने वाली परिस्थितियों का सामना करने के लिए कर्मियों के लिए सेवाकाल में ही नियमित प्रशिक्षण दिया जाए। जोखिम में पड़े विद्यार्थियों के लिए हस्तक्षेप कार्यनीति की योजना बनाई जाए और उन विद्यार्थियों के लिए सकारात्मक आचरण सहयोग प्रदान किया जाए जो बुलीइंग पीड़ित हैं।

पाठ्यक्रम :

सुरक्षा के विषयों को अलग नहीं सिखाना चाहिए। वरन उन्हें मूल विषयों में समाहित करने से बेहतर परिणाम प्राप्त होते हैं। सामाजिक युक्तियां, वैमनस्य, क्रोध, बुलीइंग विरोध / सताव आदि को ***''कम्प्रीहेन्सिव स्कूल हेल्थ प्रोग्राम''*** और ***''हेल्थ क्लब्स''*** में अपनाया जाना चाहिए। आपदा प्रबंधन में प्रकरण अध्ययन का कार्य सौंपा जाए। आग से, भूकंप से, सुनामी तथा अन्य आपदाओं से सुरक्षा पर परिचर्चा विज्ञान की कक्षा में की जाए।

माता–पिता और समुदाय की सहभागिता

विद्यालय की सुरक्षा के बारे में जानकारी के प्रचार के कार्यक्रमों में माता–पिता और समुदाय को अग्रणी रूप से सहभागी किया जाए। समुदाय आगे बढ़कर विद्यालय के सुरक्षा कार्यक्रमों का आयोजन करवाएं और अपना सहयोग स्वेच्छा से दे।

अभ्यास :
विद्यालय को आपात स्थिति में खाली करवाने के नकली अभ्यास नियमित अंतराल से आयोजित किए जाएं जो कक्षा और विद्यालय स्तरों पर अलग–अलग हों।

वार्षिक पुनरावलोकन
विद्यालय अपनी सुरक्षा नीतियों की व्यावहारिकता और दक्षता का वार्षिक मूल्यांकन करें।

विद्यालय की सुरक्षा नियमावली संपादित की जाए
विद्यार्थियों, शिक्षकों और कर्मियों को सुरक्षा एवं बचाव विषयों से परिचय कराने के लिए अलग–अलग नियमावालियों का संपादन किया जाए। प्राथमिक विद्यालय और उच्च माध्यमिक विद्यालयों के लिए आयु के अनुरूप नियमावली तैयारी की जाना चाहिए।

स्वास्थ्य एवं सुरक्षा प्रतिरूप

उद्देश्य
जानकारी में संवेदनशील उद्देश्य निहित होते हैं। वे जागरूकता लाने में और सुरक्षा मानकों में लापरवाही के कारण होने वाली दुर्घटनाओं के कारण एवं प्रभावों की जानकारी प्रदान करते हैं। जानकारियां विद्यार्थियों के आयु वर्ग के अनुरूप उपलब्ध करवाई जा सकती हैं।

यह जनाना कि कैसे करें, इसमें निहित होते हैं कृत्रिम व्यवहार के उद्देश्य या दुर्घटना से बचने के लिए सावधानियां। खाली करने के अभ्यास और अन्य प्रयोगात्मक उदाहरण विद्यालयों में किए जाएं कि बच्चों को सकारात्मक अनुभवों द्वारा क्रियान्वयन में निपुणता प्राप्त करने में सहायता मिले।

यह जानना कि कैसे व्यवहार करें इसमें व्यवहार संबंधित उद्देश्य निहित होते हैं जो आपात स्थिति में कैसे काम करें उसके उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

अब समय है कि रुकें, सोचें और समर्पण एवं कर्मो द्वारा छोटे बच्चों को गर्म जोश वाले, सुरक्षित वातावरण उपलब्ध कराने की आवश्यकता को फिर से स्वीकार करें। जब तक कि हम परिश्रम से प्रयास नहीं करेंगे तो अवश्यंभावी आपदा को रोक नहीं पाएंगे। कार्यकारी समूहों को बलवर्धन प्रदान करने के द्वारा सहकारी अगुआई ही एक मात्र मार्ग है कि आगे बढ़ें और सुरक्षित रहें।

> विद्यालयों में हज़ारों छोटे बच्चे दिन के कई घंटे सक्रिय पारस्परिक व्यवहार हेतु एकत्र होते हैं। यह महत्त्वपूर्ण है कि विद्यालय विद्यार्थियों के सुरक्षित आवास का उत्तरदायित्व उठाए, जब तक वे विद्यालय में है। ऐसा कहा जाता है कि दुर्घटनाएं घटती नहीं, की जाती हैं। प्रगतिशील योजना प्रतिपादन, प्रभावी निष्पादन कार्यनीतियां, सुरक्षा के प्रति उचित दृष्टिकोण का विकास, इस क्षेत्र में सेवारत संस्थाओं का सहयोग एवं साथ, विद्यालयों में सुरक्षा सुनिश्चित करने में महत्त्वपूर्ण हैं।
>
> विद्यालयों में सुरक्षा पर सीबीएसई पत्र सं. 28/2004, जुलाई, 26, 2004

विद्यालयों में आपातस्थिति में साधारण चिकित्सा उपलब्धता

डॉ. जितेंद्र नागपाल*

"विद्यालय में बच्चों को स्वास्थ्य पर शिक्षा देना सर्वोच्च प्राथमिकता माना जाए, न केवल उनके स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से ब्लकि, शिक्षा के दृष्टिकोण से, क्योंकि उन्हें शिक्षा ग्रहण करना है इसलिए उनका स्वास्थ्य अच्छा होना है।"

वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गनाइजेशन

- **स्वास्थ्य को बढ़ावा देने वाले विद्यालय के लिए डब्ल्यू.एच.ओ. का प्रगतिशील अध्यादेश ......**

  - वह जो रहने के लिए, सीखने के लिए और काम करने के लिए स्वस्थ संस्थान स्वरूप लगातार अपनी क्षमता को बढ़ाता रहता है।
  - वह विद्यालय के बच्चों, कर्मियों, परिवारों और समुदाय को अपनी देखभाल खुद करने में सहायता प्रदान करते हुए स्वास्थ्य निर्माण और रोग एवं अयोग्यता के महत्त्वपूर्ण कारणों को सामने रखने पर ध्यान केंद्रित करता है।
  - वह बच्चों को संपन्न बनाता है कि वे अपने स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाली और स्वास्थ्य में योगदान देने वाली परिस्थितियों के संबंध में जानकारी से पूर्ण निर्णय ले पाएं।

- **हमें विद्यालयों में चिकित्सा आपात स्थिति को संभालने की आवश्यकता क्यों है?**

व्यापक स्कूल स्वास्थ्य नीति और कार्यक्रम का भाग होने के कारण विद्यालय आपात स्थिति को संभालने के लिए तैयारियों में विकास करें। बच्चे जब स्कूल में होते हैं तब चोटों / दुर्घटनाओं के लिए अत्यधिक असुरक्षित होते हैं। छोटी मोटी चोटें तो लगती रहती हैं परंतु कभी कभी गंभीर दुर्घटनाएं हो जाती हैं जैसे हड्डी टूटना, अधिक रक्त बहना, दम घुटना, बेहोश हो जाना, तेजाब से जल जाना, बिजली का झटका लगना या डूब जाना आदि।

स्वास्थ्य संबंधित आपात स्थिति किसी भी विद्यालय में किसी भी समय उत्पन्न हो सकती हैं। बच्चें अनेक स्थितियों में जैसे खेल का मैदान या प्रयोगशाला आदि में गंभीर रूप से बीमार हो सकते है या चोट लगा सकते हैं उग्रता और गुस्से की स्थिति में उनका जीवन अधिक जोखिम में होता है। **यह कहने की आवश्यकता नहीं कि बच्चे जिन्हें विशेष आवश्यकताएं हों या स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना पड़ता हो, उन पर आपात स्थिति स्वास्थ्य रक्षा प्रावधानों के अतिरिक्त ध्यान देने की आवश्यकता है**। यहां तक स्टाफ कभी कभी भी दिल, श्वास और मस्तिष्क संबंधित किसी भी बीमारी से अकस्मात ही प्रभावित हो सकते हैं जो चिकित्सा आपात सेवाओं का ध्यान केंद्र बनें।

---

* प्रोग्राम डायरेक्टर – एक्सप्रेशन इंडिया – द लाइफ स्किल एजुकेशन एंड स्कूल वेलनेस प्रोग्राम एक्सप्रेशन्स इंडिया

❖ विभिन्न आपात स्थितियां क्या हैं?

- **जीवन को संकट में डालने वाली या संभावित विकलांगता।** ऐसी आपात स्थिति मिनटों में ही मृत्यु या विकलांगता ला सकती है। इस कारण तात्कालिक सहायता; चिकित्सा देखभाल और अस्पताल की सेवा आवश्यक होती हैं।

- **गंभीर या संभावित जीवन घातक या विकलांगता।** क्योंकि ये शीघ्र ही जीवन को घाव करने या स्थायी हानि पहुंचाने का परिणाम सिद्ध होती हैं, इन्हें शीघ्र–अति शीघ्र संभालना आवश्यक है।

- **गैर जीवन घातक** ये वे चोटें और रोग है जो व्यक्ति विशेष के सामान्य स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं, उदाहरणार्थ, *बुखार, पेद दर्द, सिर दर्द, दौरा पड़ना, हड्डी टूटना, कट जाना* आदि। रोगी का तुरंत ही मूल्यांकन करके विधिवत अग्रिम सहायता के लिए ले जाना चाहिए।

❖ आपातकालीन तैयारियों में विद्यालयों की उभरती भूमिका ?

पहला चरण, तैयारी का है, आपातकालीन तैयारी के प्रति प्रतिक्रिया दिखाने के लिए विद्यालय के कर्मियों की अगुआई हेतु लिखित शिष्टाचार के विकास की आवश्यकता है लिखित योजनाएं कंप्रीहेन्सिव स्कूल **हेल्थ प्रोग्राम** के अभिन्न अंग है। तब **स्कूल आपातकालीन प्रत्युत्तर प्रोटोकोल्स** (एसईआरपी) का लक्ष्य है।

- **रोकथाम**
- **जोखिम घटाना**
- **प्रबंधन**

दूसरा, ऐसी प्रतिक्रिया में विद्यालय कर्मियों की गुणवत्ता का मूल्यांकन और उनको प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है। शारीरिक और मनोवैज्ञानिक आपात स्थिति में **प्राथमिक चिकित्सा** ''कंप्रीहेन्सिव स्कूल हेल्थ प्रमोशन'' में अनिवार्य स्वरूप प्रकाश में लाया जाए। शिक्षा विशेषज्ञों, नीति निर्धारणकर्ताओं, और स्वास्थ्य रक्षा देने वालों द्वारा मतैक्य का विकास संपूर्ण विश्व में इस संबंध में विद्यालय आधारित प्रभावशाली कार्यों का प्रतिपादन एक महत्त्वपूर्ण चरण है।

तीसरा, महत्त्वपूर्ण स्वास्थ्य रक्षा क्षेत्रों में प्रसार, अनुसंधान और प्रशिक्षण हेतु **'हेल्थ एंड वेलनेस क्लब'** के संचालन को सुदृढ़ बनाने की आवश्यकता है। विद्यालय के व्यवस्थापक, विद्यालय की नर्स और डॉक्टर के परामर्श से विद्यालय के परिसर और विद्यालय के कार्यक्रमों में होने वाली दुर्घटनाओं की परिस्थिति के संबंध में नीतियों एवं मार्गदर्शिकाओं का प्रतिपादन करें। सामान्य रूप में ये नीतियां तीन बातें प्रकट करें :

- विद्यार्थियों और कर्मियों में आपात स्थिति और चोटों की जोखिम कम करने और उनसे बचाव करने में विद्यालय की भूमिका।
- कर्मिकों के प्रशिक्षण एवं निर्देशों और आपात स्थिति के संबंध में उपलब्ध साधनों के साथ आपात स्थिति को संभालने में विद्यालय की तैयारी।
- विद्यालय घटनाओं का आदान प्रदान कैसे करेगा – भीतरी (रिकॉर्ड रखने के द्वारा) बाहरी (माता – पिता और स्वास्थ्य रक्षक कर्मियों को)

❖ **विद्यालय में सामान्य स्वास्थ्य रक्षा आपात स्थितियों के कुछ उदाहरण**

- नाक से बहुत खून बहना
- मूर्छा एवं दौरे
- आंख की चोट
- तीव्र पेट–दर्द
- बच्चों की कान/आंख/दांत की शिकायत
- सिर की चोट
- प्रयोगशाला में जल जाना
- तेज बुखार
- कीट/सांप/कुत्ते का काटना
- दुर्घटनावश विषैली वस्तु खाना/पीना
- अन्य चोटें घाव और रक्तस्राव

❖ **मेडिकल आपात स्थिति की जोखिम में बच्चे**

❖ **आपात स्थितियां**

- दमाग्रस्त बच्चा
- नाबालिग मधुमेह ग्रस्त बच्चा
- मिर्गी से ग्रस्त बच्चा
- अज्ञात एलर्जी
- मस्तिष्क रोग
- हृदय में छिद्र
- गठिया ग्रस्त बच्चा
- गंभीर रूप से रोग ग्रस्त बच्चे का मूल्यांकन
- बेहोश बच्चा

❖ **विद्यालयों में आपात स्थिति में प्राथमिक चिकित्सा की भूमिका क्या है?**

सेंट जॉन एम्बुलेंस बिग्रेड द्वारा प्राथमिक चिकित्सा की परिभाषा है, दुर्घटना ग्रस्त व्यक्ति या अकस्मात रोगग्रस्त व्यक्ति को चिकित्सा सहायता प्राप्त करने से पूर्व दिया गया उपचार। प्राथमिक चिकित्सा के मुख्य क्षेत्र हैं :

क) जीवन बचाना
ख) ठीक करने का प्रयास करना
ग) स्थिति बिगड़ने से बचाना

आपात स्थिति सामग्री जिसे *''फर्स्ट एड बॉक्स''* कहते हैं, उसे प्रत्येक विद्यालय में उपचार के लिए निर्धारित सुरक्षित स्थान में रखना चाहिए। ये सामग्री कर्मी स्वयंसेवकों और आपात स्थिति रक्षा नियुक्त व्यक्तियों के प्रशिक्षण हेतु सरलता से उपलब्ध होनी चाहिए।

मूल रूप से प्राथमिक चिकित्सा सामग्री हैं : *बैंड एड, अलग–अलग ताप के संक्रमण रहित गॉज़, संक्रमण रहित आंखों की पट्टियां, अलग–अलग नाप की पट्टियां, क्रेप पट्टी त्रिकोण पट्टी, रूई, पिन, पक्कड़, कैंची, रक्तबंध, छोटी टॉर्च, टंग बाइट, टेप, संक्रमण रहित दस्ताने।*

फर्स्ट एड बॉक्स में दवाइयां : *डेटाल/सेवलान/बेटाडीन, आइसो प्रोपिव एल्कोहल, दर्द की गोलियां/स्प्रे, एलर्जी की गोलियां/सीरप, बुखार की गोलियां/सीरप, एस्थलीन इनहेलर, कोलिवोन गोलियां/पेय/पेट जलन का पेय, ओआरएस घोल और ग्लूकोस पाउडर।*

यह बुद्धिमानी होगी कि प्रत्येक विद्यालय एक *"स्कूल हेल्थ कमेटी"* का गठन करें जो कि सर्वांगीण स्वास्थ्य देखभाल और आपात स्थितियों का वार्षिक अवलोकन एवं जोखिम का मूल्यांकन करे।

स्थानीय स्वास्थ्य सुरक्षा सेवा / अस्पताल आदि से संबंध

माता–पिता अपने बच्चे की दुर्बलता (जीर्ण रोग या उग्र रोग) से सम्बन्धित पूर्ण सूचनाएं विद्यालय के संबंधित कर्मी को किसी भी समय, हेल्थ कार्ड या अन्य रिकॉर्ड में दर्ज कराएं।

स्वस्थ बच्चे – स्वस्थ भारत

स्कूलों में सुरक्षा का आपेक्षिक महत्त्व

श्रीमती ज्योति गुप्ता*

"मुझे अपनी स्वतंत्रता का अधिकार है और मुझे मेरे हृदय, मेरे सिर और मेरे शरीर को चोट पहुंचाए बिना सीखने का काम करने और खेलने का अधिकार है।" क्रिस्टीना मेटीसे, डेवलपमेन्टल गाइडेन्स प्रोग्राम में प्राथमिक परामर्शदाता।

अपने बच्चों का औपचारिक स्कूल शिक्षा में कदम रखना माता–पिता के लिए बड़ा ही भावनात्मक समय होता है। शिक्षण संस्थानों द्वारा विद्यार्थी के जीवन में भाग्य निर्धारण की भूमिका निभाने का बोध माता–पिता के मन में विश्वास जगा देता है कि वे अपने बच्चों की शिक्षा के लिए उन्हें पूरी तरह से अपरिचित जनों के हाथ में छोड़ दें। माता–पिता और समाज के मन में स्कूल की जो समझ है वह मात्र एक इमारत नहीं वरन एक ऐसा पोषक स्थान है जो विद्यार्थियों के शिक्षण वर्ष पूरा होने पर उन्हें अन्ततः प्रबुद्ध एवं सफल व्यक्ति बना देता है।

जिस प्रकार का विश्वास और भरोसा स्कूलों में रखा जाता है तो यह स्कूलों का संपूर्ण उत्तरदायित्व है कि वे ऐसा वातावरण उपलब्ध कराएं जो बच्चे के विकास में सहायक हो, ऐसा वातावरण जो समस्त विद्यार्थियों को सर्वोत्तम शैक्षिक, वैयक्तिक और सामाजिक क्षमता उपलब्ध करने में सहायक हो। स्कूल का मुख्य कार्य निःसंदेह, अपने विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करना है। तथापि शैक्षिक सफलता विद्यार्थी की शारीरिक, मानसिक और मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य पर निर्भर करती है। यदि विद्यार्थी स्कूल में अपनी सुरक्षा और कल्याण के विरुद्ध जोखिम के संकट को देखता है तो उससे शिक्षा के परिणाम की आशा करना अपरिपक्वता होगी। स्कूल में अशोभनीय या कटु अनुभव बच्चे को जीवन भर के लिए चोट पहुंचा सकता है।

इस स्थिति में यह मानना अनिवार्य है और इसे स्वीकार किया जाए कि स्कूल सदैव सुरक्षित स्थान सिद्ध नहीं हुए हैं। यद्यपि बच्चे की शारीरिक सुरक्षा का संकट सबसे अधिक प्रमुख विषय है, बच्चे के मानसिक और मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य को महत्त्व समझना भी अति आवश्यक है। सुरक्षित स्कूल बनाने में विद्यार्थी की शारीरिक सुरक्षा से अधिक कुछ होता है। उन्नति और विकास को बढ़ावा देने के लिए भाव पूर्ण वातावरण अपरिहार्य है। अपनापन, आत्म स्वाभिमान और स्वीकारणीय जो भाव पूर्ण वातावरण से विकसित होते है गंभीर रूप से सफलता और उपलब्धियों में योगदान देते हैं।

स्कूल की सुरक्षा को संकट में डालने वाली घटनाओं में चेतावनी भरी वृद्धि को देखते हुए यह आवश्यक है कि अतिशीघ्र इन विषयों पर चर्चा की जाए। प्रधान चुनौती तो यह है कि ऐसा वातावरण उपलब्ध करवाया जाए जो किसी भी प्रकार के वास्तविक या बोधात्मक संकट से मुक्त हो। शिक्षक और व्यवस्थापक होने के मेरे वर्षों के अनुभव से मुझे अनेक कारणों से अन्तर्दृष्टि और समझ प्राप्त हुई है जो सुरक्षा को संकट में डाल सकते हैं और विकास को बाधित कर सकते हैं। यद्यपि सुरक्षा के विषय

* प्रधानाचार्य, के. आर. मंगलम वर्ल्ड स्कूल, जीके –II, दिल्ली

स्कूल विशेष से संबंधित हैं और विभिन्न रूपों में हैं, कुछ विस्तृत मानदण्ड सब स्कूलों में प्रासंगिक माने जा सकते हैं। मेरा लक्ष्य है कि कुछ ऐसे मानदण्डों के बारे में बताऊं जो इस संकट को रोकने और सुरक्षित वातावरण विकसित करने में महत्त्वपूर्ण हैं।

- **उन क्षेत्रों को पहचानना जहाँ सुरक्षा विषय उपस्थित हैं।**
  सबसे पहला चरण यह है कि उन क्षेत्रों/कारणों को पहचाना जाए जो विद्यार्थी की सुरक्षा को संकट पहुचाते हैं। इस विषयों को सूचीबद्ध करते समय सावधानी बरती जाए कि स्कूल के भीतरी और बाहरी कारण दोनों को देखा जाए।

- **पूर्व योजना**
  क्रमवार एवं पूर्व योजना किसी भी आपदा को रोकने या उससे बचने में सफल होने के लिए महत्त्वपूर्ण है। तैयार रहना बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। सरकार द्वारा निर्धारित सुरक्षा संबंधित नियमों का पालन और सत्यापन स्कूलों का नैतिक दायित्व होता है। सुरक्षा के विषय में दिए गए प्रत्येक परामर्श का पालन करना अनिवार्य है। संकटकालीन परिस्थितियों में सुरक्षा की व्यवस्था के लिए आवश्यक स्रोत यथास्थान स्थित हों। स्कूल उन एजेन्सी के साथ सतत् संबंध बनाए रखे जो शिक्षकों और विद्यार्थियों को क्रीड़ा अभ्यास के क्षेत्र में सक्रिय हैं। ***निःशक्त छात्रों को आग लगने पर सुरक्षा प्रबंधन, भूकंप, बाढ़ प्रबंधन, संरचनात्मक एवं रचनात्मक सुरक्षा, आघात प्रबंधन किसी भी संस्थान की प्रधान प्राथमिकताएं होनी चाहिए।*** इंटरनेट सुरक्षा, साथियों दबाव के क्षेत्रों को भी अनदेखा न किया जाए। ***परामर्श सत्र*** और ***नुक्कड़ नाटक*** विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान करने और उनके भय दूर करने में प्रभावी रूप से काम में लिए जा सकते हैं।

- **समन्वित प्रयास**
  स्कूलों में सुरक्षा को बढ़ाने के लिए हिस्सेदारों की ओर से सच्चा एवं समन्वित प्रयास अति महत्त्वपूर्ण है।

शिक्षक गण – भाव प्रवण और मानसिक सुरक्षा शिक्षक द्वारा विकसित विश्वास योग्य संबंधों में उत्पन्न होती है। विद्यार्थियों के लिए अपने शिक्षक के साथ ***'विश्वास योग्य संबंध'*** का अनुभव मानसिक रूप से बहुत महत्त्वपूर्ण होता है और विद्यार्थी के सामने आने वाली किसी भी मानसिक समस्या पर विजय पाने में सहायक होता है। यह शिक्षक का शैक्षणिक उत्तरदायित्व है कि जैसे जैसे वह कक्षा में ***'शिक्षण परिस्थितियां'*** स्थापित करता है उसी प्रकार वह विश्वास और समझ का भी विकास करता जाए।

विद्यार्थी – सुरक्षा विषयों की चर्चा करते समय विद्यार्थियों को साझेदार बनाया जाए। तैयारी का आरंभ स्कूल की शिक्षा के प्रारंभिक वर्षों से ही किया जाना आवश्यक है क्योंकि यही वह आयु है जब बच्चे सबसे अधिक ग्राह्य होता है। यह अति आवश्यक है कि विभिन्न क्षेत्रों में उत्पन्न होने वाले संकटों के प्रति उनका अवबोधन और समझ तथा उनको विफल करने के साधनों का संवर्धन किया जाए। परामर्श कक्षाएं और नुक्कड़ नाटक विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान करने और उनके भय का निवारण करने में प्रभावी रूप से उपयोग में लिए जा सकते हैं।

अनेक स्कूलों ने विद्यार्थियों को सफलतापूर्वक यातायात के उत्तरदायित्वों में संलग्न किया है। इसी प्रकार, उनकी क्षमता सुरक्षा विषयों में काम में ली जा सकती है।

माता–पिता – बच्चे की किसी भी समस्या को समझने और उसके विषय चर्चा करने के लिए आवश्यक है कि माता–पिता और शिक्षक द्वारा परस्पर युगल प्रयास किया जाए। माता–पिता को पूरा अधिकार है कि उनके बच्चो के साथ स्कूल में जो भी हो रहा है उसे पूर्ण रूपेण अन्तर्ग्रहण करें और शिक्षकों का यह उत्तरदायित्व है कि वे पक्षपात से मुक्त होकर जानकारी दें। ऐसा संवाद जो केवल बच्चे के ही हित में है जो माता–पिता और शिक्षक के मध्य पारस्परिक विश्वास के अभाव में संभव नहीं।

अभिकरण/संस्थान – स्कूलों के इन क्षेत्रों में क्रियारत अभिकरणों के साथ सतत् संपर्क बनाए रखना चाहिए जिससे कि उन्हें आधुनिकतम् जानकारी रहे और इन विषयों के संबंध में अधिक समझ प्राप्त करते जाए। अन्य स्कूलों के साथ जानकारियों का आदान–प्रदान भी बहुत बड़ी सहायता का कारण हो सकता है। ***समुदाय से सहभागिता*** भी आवश्यक है।

- **प्रभावी क्रियान्वयन**

  शिक्षक विद्यार्थी दलों को विभिन्न क्षेत्रों में आपदा व्यवहार के लिए प्रशिक्षण देना आवश्यक है। उन्हें संकटमय परिस्थिति को सफलतापूर्वक संभालने में दक्ष होना चाहिए।

- **उचित अभिवृत्ति**

  सर्वोत्तम वांछनीय अभिवृत्ति के अभाव में सर्वोत्तम उपाय भी व्यर्थ हो जाता है। समस्या की गंभीरता और स्कूलों में हिस्सेदारों के लिए सुरक्षा को अपनाने के प्रति सफलता का संकल्प सुरक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करने के पक्ष में अदेशात्मक होगा।

  आइए हम सब विद्यार्थियों के लिए सुरक्षित वातावरण बनाने में सहयोग प्रदान करें। एक ऐसा वातावरण जो बच्चों को किसी भी प्रकार की आशंका या भय से अबाधित रह कर प्रेरित करे और साथ ही आगे बढ़ने के लिए बाध्य करे कि वे अपना सर्वोत्तम प्रयास उसमें लगा दें। सुरक्षा प्रत्येक स्कूल का आदर्श वाक्य होना आवश्यक है।

> बच्चे स्वयं शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के मध्य परस्पर विरोध को समाप्त करने की युक्तियां खोजें। शिक्षक अवश्य सुनिश्चित करें कि ऐसे ही नियम बनाए जाएं जो कम से कम हों और व्यवहार्य हों। बच्चों को नियम उल्लंघन के लिए अपमानित करना किसी को लाभ नहीं पहुंचाता है, विशेष करके तब जब नियम के उल्लंघन के उचित कारण हो।
>
> **एनसीएफ 2005**

स्कूलों में सुरक्षा एवं स्वास्थ्य – एक सामान्य परिदृश्य

महालक्ष्मी वी*

प्रस्तावना

स्कूल द्वारा सुरक्षित एवं हिंसा रहित रचनात्मक शिक्षण वातावरण उपलब्ध कराने को प्राथमिकता देना अनिवार्य है। स्कूल में सुरक्षा का व्यापक परिदृश्य होना अति आवश्यक है।

पर्यावरण संबंधित संकट – व्यर्थ उत्पादन से निकला प्रदूषण पर्यावरण के लिए बहुत बड़ा संकट का कारण है। जो स्कूल स्वच्छता की ओर पर्याप्त ध्यान नहीं देते हैं, वहां मलेरिया, डेंगू, चिकनगुनिया आदि रोगों के फैलने का और पानी से फैलने वाले रोग जैसे आन्त्रशोथ, दस्त, हैजा आदि के पैदा होने और फैलने का सम्भावित स्थान हैं। एक कहावत है कि पूरा स्कूल वहां के शौचालय के साथ पूरी तरह स्वच्छ होना चाहिए। इस कारण, ठोस वस्तुओं को फेंकना, गंदे पानी का निकास, सुरक्षित पेयजल की उपलब्धि आदि एक सुरक्षित स्कूल में अनिवार्य हैं। स्कूलों में वातानुकूलित प्रयोगशालाओं और सभा–भवनों में वायु की गुणवत्ता, पर यदि रचना एवं रख–रखाव के दौरान ध्यान न दिया जाए तो स्वास्थ्य के लिए बड़ा संकट उत्पन्न करती है।

प्रयोगशालाओं में सुरक्षा : प्रयोगशालाओं में अनेक प्रकार के रसायन। बिजली की संस्थापनाएं और यांत्रिकी उपकरण संकटपूर्ण और विषैले हो सकते है। कुछ रसायन कैंसर पैदा करने वाले भी हो सकते हैं। हमारे शरीर में रसायनों के अनेक प्रवेश मार्ग हैं – श्वास, भोजन, त्वचा, आंखें। इस कारण स्कूलों को रसायनों के संबंध में पर्याप्त सुरक्षा प्रदान करना आवश्यक है। उचित वायु संचार द्वारा रसायनों का शरीर में प्रवेश रोका जा सकता है तथा व्यक्तिगत सुरक्षा जैसे हाथों में दस्ताने पहनने से, आंखों में चश्मा लगाने से तथा अग्नि रोधक (पॉलीमर) वस्त्र पहनने से रसायन के जोखिम से बचा जा सकता है।

विद्युत से सुरक्षा : विद्युत से उत्पन्न संकट, अग्नि आपदा, विद्युत भारण और झटका लगना आदि होते हैं। कुम्बाकोणम आग दुर्घटना का मूल कारण बिजली के तारों का आपस में जुड़ जाना था। स्कूल की सुरक्षा के लिए अति महत्त्वपूर्ण है कि ऐसी विद्युत प्रणाली लगवाई जाएं जो सुरक्षा मानदण्ड पूरे करती है। तारों पर उचित भार, अतिभार सुरक्षा, सरकिट ब्रेकर आदि की सुविधा उपलब्ध की जाए।

अग्नि सुरक्षा : आग लगने से बचने के लिए पृथकीकरण, कक्षीकरण, चिंगारी ईंधन से दूर रखना आदि पर ध्यान देना आवश्यक है। हानि की रोकथाम में आग बुझाने के यंत्र और आसान निकास का होना महत्त्वपूर्ण है।

---

* प्रधानाचार्य, कैपिटल पब्लिक स्कूल, बैंगलोर

खेल के मैदान की सुरक्षा : खेल के मैदान में जंग लगे हुए लोहे दंड या धातु के नुकीले टुकड़े आदि विद्यार्थियों को क्षतिग्रस्त कर सकते हैं। रोकथाम में खेल के मैदान का उचित निरीक्षण एक उत्तम उपाय है।

स्कूल में मार–पीट : स्कूलों में मार–पिटाई के अत्यधिक प्रचार ने इस जटिल समस्या के निवारण की आवश्यकता का बोध बढ़ा दिया है। ऐसी दुर्घटनाओं का मूल कारण जानना बहुत कठिन है परन्तु रिपोर्ट के आधार पर इसका कारण बड़े–छोटे की भावना, सिनेमा का कुप्रभाव आदि है। परामर्श और नैतिक शिक्षा विद्यार्थियों की प्रकृति में परिवर्तन ला सकते हैं। माता–पिता भी अपने बच्चों को शिक्षा दे सकते हैं कि ऐसी दुर्घटनाओं का शिकार बनने से कैसे बचा जाए। बच्चों को सिखाया जाए कि उग्र होने की अपेक्षा विनम्र कैसे हों। बच्चे की सहायता की जाए कि वह अन्य विद्यार्थी द्वारा कही गई बात या उसके साथ किए गए व्यवहार स्वीकार न करना चाहे तो आत्म विश्वास की प्रतिक्रिया कैसे दिखाए। जो बच्चे आसानी से नहीं मानते उनके साथ दादाओं (गुंडों के समान व्यवहार करने वाले) बच्चे आसानी से धौंस नहीं दिखाते। अधिकांश बच्चे प्रतिशोध के भय से दादा लोगों (गुंडों के समान व्यवहार करने वाले) का विरोध नहीं करते हैं। परन्तु संकटमयी परिस्थितियां बढ़ सकती हैं और वयस्क का हस्तक्षेप प्रायः एकमात्र साधन रह जाता है कि समस्या को रोका जाए। परस्पर संपर्क का मार्ग खुला रखें कि बच्चे वयस्कों पर भरोसा रख पाएं। बच्चे को अधिक अवसर दें कि वह अपने मन की बात कहे, विशेष करके तब जब वह स्कूल के किसी कारण से चिन्तित है।

विद्यार्थियों और शिक्षकों में कार्य क्षमता का ज्ञान – कम्प्यूटर्स जैसी नई तकनीक के आ जाने से कार्य कुशलता की समस्या का उत्पन्न होना काफी हद तक संभव है। इनका मुख्य कारण है बैठने की मुद्रा, की–बोर्ड की स्थिति, माउस/ट्रैकबॉल का स्थान, कलाई की मुद्रा, मॉनीटर की ऊंचाई, लाइट के प्रभाव, कार्य के बीच अन्तराल, आंखों से मॉनीटर की दूरी, अधिक देर खड़े रह कर शिक्षण आदि। ***कारपल टनल*** रोग और ***रेनाल्ड सिन्ड्रोम*** दो मुख्य रोग हैं जो शारीरिक मुद्रा और अभ्यास से उत्पन्न होते हैं। अनेक मानदण्ड हैं जो अच्छी कार्य कुशलता के कार्य केन्द्र के विषय जानकारियां उपलब्ध कराते हैं। यदि कार्य करने के उचित अभ्यास आरंभ में ही विकसित कर लिए जाएं तो कम्प्यूटर के उपयोग और अधिक देर तक खड़े रहकर पढ़ाने से उत्पन्न शारीरिक समस्याओं में वृद्धि रोकी जा सकती है।

सुरक्षा और अनुशासन – अच्छी सुरक्षा और उचित अनुशासन प्रणाली अनेक चोटों और दुर्घटनाओं से बचाव करता है। घुसपैठियों के प्रति सतर्कता अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष :

हमारे स्कूलों की सुरक्षा और बच्चों की रक्षा माता–पिता, स्कूलों, जिला, तथा अन्य अनेक समुदायों के सहभागियों के समर्पण की मांग करते हैं।

स्कूल में सुरक्षा की शिक्षा भी उसी स्तर पर प्रदान की जाए जिस स्तर पर आपदा प्रबंधन और पर्यावरण सुरक्षा के विषयों की शिक्षा प्रदान की जाती है। स्कूल सुरक्षा नीतियों का प्रतिपादन कर सकते हैं जिनमें निम्नलिखित सभी विषय या उनमें से कुछ अवश्य हों।

- सरकारी नियमों और भवन संहिता का पालन करने की वचनबद्धता।
- सुरक्षा शिक्षा की एक शर्त है – विद्यार्थियों, माता–पिता और शिक्षकों द्वारा अधिक उत्तरदायित्व। माता–पिता घर में बच्चों को सुरक्षा संबंधी व्यवहार की शिक्षा दे सकते हैं। सुरक्षा विद्यार्थियों के लिए प्राथमिकता है और स्कूल प्रबंधन उत्तरदायित्व उठाए।
- विद्यार्थी को यदि स्कूल में अध्ययन करते समय सुरक्षा की कमी का आभास हो या उसे आभास हो कि उसकी सुरक्षा या कल्याण संकट में है तो वह किसी भी समय शिक्षक से संपर्क कर सकता है।
- स्कूल रोग और मार–पीट के लिए अतिरिक्त जांच भी करवा सकते है जिससे कि स्कूल हिंसा मुक्त शिक्षा का स्थान हो।

''साइबर बुलीइंग'' का सामना करना

सुश्री ज्योति चौधरी*

हर एक व्यक्ति यही चाहता है कि शिक्षा के लिए स्कूल एक सुरक्षित स्थान हो। एक सुरक्षित शारीरिक, सामाजिक और मानसिक वातावरण, जिसमें सांस्कृतिक मूल्य होते हैं, क्रियाविधि एवं नीतियां विद्यार्थियों के शिक्षा–प्राप्ति की मनोवृत्ति और स्वास्थ्य के लिए अत्यधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

स्कूल में सुरक्षा के संदर्भ में चिन्ता का एक बहुत महत्त्वपूर्ण विषय जिस पर मेरा ध्यान हाल ही में गया, वह है **''स्कूल में दादागिरी''** दादागिरी चाहे व्यक्तिगत हो या कम्प्यूटर पर दादागिरी ही है। हमें ''साइबर बुलीइंग'' के समाचार सुविदित हैं तकनीक के परदे के पीछे छिपे दादा लोग पकड़े जाने के डर से अन्य जन को सताते हैं।

''साइबर बुलीइंग'' शब्दों का प्रतिपादन कनाडा के शिक्षा विशारद बिल बलेसी ने किया था परन्तु यह समस्या किसी एक राष्ट्र तक ही सीमित नहीं है। निःसंदेह अनेक राष्ट्रों में शिक्षण संस्थान दादागिरी की घटनाओं की सूचना दे रहे हैं जो ई–मेल, फोन, लिपि, चेट, ब्लॉग और वेबसाइट पर घट रही है। दादागिरी की ये घटनाएं जो साइबर पर हो रही हैं उनका वास्तविक स्कूल जगत पर बुरा प्रभाव पड़ सकता हैं जैसे विद्यार्थी का स्कूल से अनुपस्थित रहना, कम अंक लाना, चिन्तित रहना, क्रोधित हो जाना, और अनेक अन्य इससे भी बुरे प्रभाव।

बच्चे साइबर पर दादागिरी क्यों करते हैं?

दादागिरी तो सदा हो रही है, परंतु साइबर पर दादागिरी भिन्न है क्योंकि इसमें दोषी का नाम गुप्त रहता है, इस कारण यह आमने–सामने की दादागिरी से अधिक आसान है। इसमें पकड़े जाने की संभावना बहुत कम है।

दादा लोग स्वभाव से ही उकसाने वाले होते हैं और साइबर में दादा लोग उन विद्यार्थियों की सहभागिता को उकसाने में सफल होते हैं जो वास्तविक संसार में ऐसा करने का साहस नहीं जुटा पाते। वे बच्चे जो वास्तविक जीवन में सीधे साधे बने खड़े रहते हैं वे अधिकतर ऑनलाइन अन्य को पीड़ा पहुंचाने में सहयोगी बन जाते हैं।

साइबर बुलीइंग का सामना कैसे करें?

अब हमें साइबर बुलीइंग (दादागिरी) के बारे में क्या करना है? हम इसे कैसे रोकें?

- सर्वप्रथम, साइबर दादा के प्रहार पर प्रतिक्रिया नहीं दें।
- अपने विद्यार्थियों को इसके विरुद्ध आवाज़ उठाने का अवसर दें

* परामर्शदाता, सलवान पब्लिक स्कूल, गुड़गांव

एक ऐसा निकाय जो पीड़ित जन को दादागिरी की घटना का खुलासा करने का प्रोत्साहन दे। इससे रिपोर्टिंग और प्रबंधन द्वारा आपके स्कूल को दादागिरी का सामना करने के अनोखे, नए और परिहार्य साधन प्रदान ही नहीं करता वरन् उसमें आपकी सहायता भी करता है।

इस निकाय में घटना प्रबंधन द्वारा दादागिरी की सीधी और गुप्त घटनाएं निहित की गई है जिनमें बृहत कारणों को भी अंकित किया गया है।

पहला चरण है कि साइबर बुलीइंग के प्रति प्रतिक्रिया दिखाने को समाप्त करें। उनके ई–मेल, डाक, संदेश आदि का उत्तर न दें। दादा तो यही चाहता है, वे आपको भी भागीदार बनाना चाहते हैं। वे आपको प्रतिक्रिया देने के लिए बाध्य करते हैं।

यदि आप किसी भी प्रकार भाव प्रवण प्रतिक्रिया दिखाते हैं या उन्हें यह चेता देते हैं कि वे सफल हो रहे हैं और आपको परेशान करने में सफल हो गए तो यह उनके लिए प्रोत्साहन का कारण है।

याद रखें ! दादा लोग आत्मसम्मान की कमी से ग्रस्त होते हैं और वे अपने मन को सान्त्वना देना चाहते हैं। इसकी अपेक्षा कि कोई सकारात्मक काम करें या किसी अन्य काम में सफलता प्राप्त करें या कोई नया मित्र बनाएं, उन्होंने यह सीखा है दूसरों को वश में करना, उनके साथ दुव्यवहार करना और उनको जीर्ण शीर्ण करना उन्हें शांति प्रदान करता है। इससे उन्हें वशीकरण और अधिकार का झूठा बोध होता है जो वास्तविक जीवन में उनके पास हैं नहीं। इनमें से अधिकांश जन निर्बल होते हैं। साइबर बुली के साथ भी यही सत्य है।

यदि आपकी प्रतिक्रिया उन पर यह प्रकट कर कि आप क्रोधित हैं, अप्रसन्न हैं या भयभीत हैं तो वे प्रसन्न होंगे क्योंकि उन्होंने आपकी मानसिक अवस्था को अपने वश में करने में सफलता पा ली है। यदि आपकी स्थिति ऐसी है तो भी आप उन्हें इसका आभास दिला कर उन्हें संतुष्ट एवं प्रोत्साहित न कीजिए।

यह अति महत्वपूर्ण है कि आप मानसिक प्रतिक्रिया न दिखाएं क्योंकि इस प्रकार आप उत्तर देंगे जिसका पछतावा आपको आगे चलकर होगा। एक बार भेजा गया संदेश पुनः वापस लेना असंभव होता है।

स्कूलों में साइबर बुलीइंग :

लिंगभेद पर अन्वेषण

किंग ली, शिक्षा विभाग, कलगेरी विश्वविद्यालय, कलगेरी, एबी कनाडा

यह अध्ययन साइबर बुलीइंग के संदर्भ में किशोरों अनुभव का स्वरूप और परिमाण की जांच करता है। तीन उच्च माध्यमिक स्कूलों में 264 विद्यार्थियों का सर्वेक्षण किया गया। इस लेख में साइबर बुलीइंग से तात्पर्य है, इलेक्ट्रॉनिक संचार माध्यम द्वारा दादागिरी। निष्कर्ष यह निकला कि लगभग आधे विद्यार्थी दादागिरी से पीड़ित थे और चार में से एक साइबर बुलीइंग का पीड़ित था। आधे से अधिक विद्यार्थियों ने व्यक्त किया कि वे किसी न किसी और को भी जानते हैं जो साइबर बुलीइंग से पीड़ित था। लगभग आधे साइबर दादा इलेक्ट्रॉनिक साधनों के उपयोग द्वारा अन्य लोगों को कष्ट दे रहे थे। पीड़ितों और दर्शकों में से अधिकांश ने वयस्कों से शिकायत नहीं की थी। जब लिंग भेद का प्रश्न आया तब दादागिरी के संबंध में महत्त्वपूर्ण अंतर पाया गया। बालिकाओं की अपेक्षा बालक संख्या में अधिक थे। दूसरी ओर बालकों की अपेक्षा बालिकाओं ने अधिकतर वयस्कों से शिकायत की।

स्रोत : स्कूल साइकोलॉजिकल इंटरनेशनल खंड 27, सं. 2, 157–170–92006

साइबर बुलीइंग को रोकने के लिए कार्यनीतियों का विकास

- शिक्षकों को भरोसेमंद माना जाता है इसलिए उन्हें अपने छात्रों, माता पिता और सहकर्मियों को लिखे गए ई–मेल में सर्वाधिक आदर्श नैतिक साइबर दर्शाना चाहिए और उनका व्यवहार पूरी तरह विशिष्ट व्यावसायिक होना चाहिए।
- कार्यस्थल पर शिक्षकों को परामर्श दिया जाता है कि वे अपना ''पासवर्ड'' किसी को न दें और न ही अपने कम्प्यूटर चलते छोड़ें और न ही विद्यार्थियों के साथ कंप्यूटर अकेला छोड़ें।
- इलेक्ट्रॉनिक साधन में कोई ऐसी बात न डालें जिसे आप अपने सहकर्मियों और विद्यार्थियों को भी नहीं दिखाना चाहते हों।
- यूनिफॉर्म रिसोर्स लोकेटर के साथ संदेशों की प्रतिलिपि बना लें और उल्लेख कर दें कि व्यवहार अस्वीकार्य है तथा आग्रह करें कि प्रेषक आगे से संदेश न भेजे। प्रेषण के साथ संबंध न रखें क्योंकि ऐसे में स्थिति बिगड़ेगी।
- यदि साइबर दादा विद्यार्थी है तो उसके माता–पिता से संपर्क करें।
- मोबाइल फोन को घातक हथियार समझें और स्कूल समय में उनके उपयोग पर प्रतिबन्ध लगायें।
- सामाजिक नेट साइट के उपयोग में सावधानी की आवश्यकता को अत्यधिक ध्यान रखें क्योंकि आपका संदेश आपके नियोजक और विद्यार्थियों के परिदृश्य में हैं।

> ''किसी माता–पिता के लिए अपनी संतान से अधिक मूल्यवान और कुछ नहीं, तथा हमारे भविष्य के लिए हमारी संतान की सुरक्षा से अधिक महत्त्वपूर्ण अन्य कुछ नहीं।''
>
> **बिल क्लिंटन**

स्कूल में सुरक्षा

राजीव शर्मा**

आदर्श रूप में स्कूल एक ऐसा स्थान होता है जहां बच्चे शिक्षा ग्रहण करने के आनंद का अनुभव करें और शिक्षक शिक्षा ग्रहण करने में उनकी सहायता की स्वतंत्रता का आनंद लें। बच्चे के पनपने की वास्तविक क्षमता और विपुल विकास की यथार्थ क्षमता के लिए सुरक्षा का बोध अपरिहार्य है। परंतु हमें इसके विपरीत ही सुनने को मिलता है कि स्कूल की इमारत के गिर जाने से बच्चे जीवित दब गए, तंबू आग में जलकर राख हो गया, स्कूल बस दुर्घटनाग्रस्त हो गई, शिक्षक के दुर्व्यवहार से बच्चा आतंकग्रस्त है। इसके अतिरिक्त दादागिरी और मार–पीट की अनेक अप्रकट घटनाएं हैं जिनका गंभीर मानसिक परिणाम होता है।

तत्काल प्रतिक्रिया :

दुर्भाग्य से स्कूलों में सुरक्षा के परिप्रेक्ष्य में न तो स्कूल प्रबंधन द्वारा और न ही सरकार द्वारा ध्यान दिया जाता है। शिक्षा के क्षेत्र में संसाधनों – आधारिक संरचना और मानवीय, दोनों की कमी स्कूलों में अपूर्ण ध्यान देने का सबसे बड़ा संभावित कारण है। असुरिक्षत स्कूल इमारतें, संकटमय वातावरण और प्रशिक्षित कर्मियों की कमी स्कूलों को बाध्य करती हैं कि वे सुरक्षा मानकों को गंभीर रूप से अनदेखा करें। मनुष्यों की आंखें तब खुलती हैं जब दुर्घटना हो जाती है। वे कुछ समय चिंता प्रकट करते हैं, टी. वी. आदि पर सुरक्षा प्रणाली पर प्रश्न उठाते हैं और फिर हमारे करोड़ों बच्चों को शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के असंख्य संकट में जाते हुए देख कर भी दोबारा निश्चिन्त हो जाते हैं।

सुरक्षा मानकों को अनेदखा करना :

यदि हम यह कहें कि भारत में अधिकांश स्कूलों में विद्यार्थियों की सुरक्षा की कोई नीति नहीं है तो यह एक कठोर वक्तव्य नहीं होगा। रोकथाम के साधन और सुरक्षा अभ्यास लगभग हैं ही नहीं। स्कूल की शिक्षा प्रणाली पर लगातार बढ़ते दवाब के साथ साथ जागरूकता की और सत्यनिष्ठ प्रयासों की कमी परिस्थिति को बद से बदतर बना रही है। शिक्षा मंडल और शिक्षा विभाग द्वारा निर्धारित सुरक्षा मानक प्रायः अनदेखा किए जाते हैं। प्रभावी स्कूल निरीक्षण प्रणाली में कमी स्कूल प्रबंधनों के लिए आसान बना देती है कि स्कूलों के सुरक्षा मानकों को अनदेखा करें। इसका अर्थ यह हुआ कि हम ज्वालामुखी पर बैठे प्रतीक्षा कर रहे हैं कि दुर्घटना घटे और मन में विश्वास यह होता है कि हमें कोई हानि नहीं होगी।

परिस्थिति का विकराल रूप :

शिक्षा का अधिकार अधिनियम के कारण स्कूल जाने वाले बच्चों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। अधिकांश बच्चे सरकारी स्कूलों में जाते हैं जो लगभग नहीं के बराबर आधारभूत संरचना उपलब्ध कराते हैं। अस्वच्छ जल के निकास में स्वच्छता की कमी, शुद्ध पेय जल का उपलब्ध न होना,

* प्रधानाचार्य, स्प्रिंगडेल सीनियर स्कूल, एफ. सी. रोड, अमृतसर

गन्दे शौचालय – विशेष करके लड़कियों के लिए और इमारत का अनुचित रखरखाव प्रायः बच्चों को भौतिक तत्वों की दया का पात्र बना देते हैं।

जनसंख्या वृद्धि और शिक्षा के प्रति जागरूकता में बढ़ने से निजी स्कूलों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि हो गई है। इन स्कूलों में भी अधिकांश की स्थिति अच्छी नहीं है। इन स्कूलों की समस्या है स्थान की कमी का दबाव और आधारभूत संरचना की कमी। इससे बढ़कर, इन विद्यालयों का मुख्य उद्देश्य होता है अधिक से अधिक लाभ कमाएं और इस कारण सुरक्षा एक किनारे कर दी जाती है। बच्चे बंद कमरों में घंटों बैठे रहते हैं जहां हवा की गुणवत्ता और स्वच्छता में कमी होती है जो उनके स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव डालती हैं। ऐसे विद्यालयों में आग, भूकंप तथा अन्य प्राकृतिक विपदाओं के सामान्य संकट से सुरक्षा का कोई प्रावधान नहीं होता है।

परिवहन :

शहरी और अर्ध–शहरी क्षेत्रों में बच्चे के स्कूल जाने के लिए उपयोग में आने वाली बसें अच्छी स्थिति में नहीं होती हैं और ऑटो रिक्शा चालकों को उचित प्रशिक्षण प्राप्त नहीं होता है जिसके कारण बच्चों को प्रतिदिन जान का संकट बना रहता है। हम ऐसे वाहनों की दुर्घटनाओं का विषय प्रायः सुनते रहते हैं परंतु स्थिति सुधारने के लिए नहीं के बराबर ही कार्य किया जाता है।

मानसिक सुरक्षा :

इन आधारभूत संरचनाओं और संसाधनों की कमी के अतिरिक्त सुरक्षा का मुख्य संकट है सामाजिक और मानसिक वातावरण। जो बच्चे दादा विद्यार्थी के भय या अन्य भय के अधीन रहते है उसका विकास कुंठित होता है। भारत में विद्यालयों में आम तौर पर विवाद प्रबंधन प्रणाली या परामर्श का प्रावधान नहीं है। मानसिक समस्याओं के समाधान के लिए वहां कोई सहायता उपलब्ध नहीं है। अधिकांश स्कूल प्रबंधन यह कल्पना करते हुए कि सब अच्छा चल रहा है, मानसिक सुरक्षा के प्रश्न को अनसुना कर देते हैं।

विभिन्न प्रकार के निःशक्त बच्चों की उपेक्षा :

विद्यालयों में जहां तक सुरक्षा का प्रश्न है विशेष आवश्यकताओं से ग्रस्त बच्चे अधिकतर लाभ से वंचित रहते हैं। उनकी शारीरिक और मानसिक अवस्था के प्रति जागरूकता में कमी उनकी चिंता को बढ़ाकर उनके विकास को कुंठित करती है। समाविष्ट शिक्षा की नीति पर्याप्त अन्वेषण और निदान सुविधाओं तथा शिक्षक विशारदों की कमी से हानि उठा रही है। विद्यालय उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील नहीं रहते और विपरीत परिस्थितियों में सर्वाधिक जोखिम की संभावना बनी रहती है।

नई चुनौतियां :

बच्चों और युवाओं में मार–पीट और छेड़छाड़ बढ़ती जा रही है। महाविद्यालयों में 'रैगिंग' के चौंकाने वाले उदाहरण इन्हीं प्रवृत्तियों के परिणाम है जिन्हें विद्यालय–स्तर पर संभाला नहीं गया है। दादागिरी, नशा और अश्लील चित्र आदि विद्यालयों में सुरक्षा के संकट है। आतंकवाद आधुनिक युग का एक और अतिरिक्त संकट है। "ऑस्ट्रिच सिंड्रोम या शुतुरमुर्ग के समान सोचने" से ग्रस्त हम ऐसे

परिणामों की संभाव्यता को अस्वीकार कर देते हैं परंतु दुखी होने की अपेक्षा सुरक्षित हो जाना उचित है। इंकार और अनुचित संदेश भय और आतंकवाद को कम नहीं करते वरन प्रकोप को बढ़ाते ही हैं। हमें इन चुनौतियों का सामना करने के लिए अपने आपको तैयार करना है और निवारण की नीतियां स्थापित करना है।

क्या किया जाए :

इनका निवारण कैसे करें? हम स्वीकार कर लें, हम इन विद्यमान और उदय होती चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार नहीं हैं।'' इंकार करना और अनदेखा करने से कोई सहायता नहीं मिलेगी। सुरक्षा को सुनिश्चित करने का एकमात्र मार्ग है तैयार रहना। भय के निवारण की सर्वोत्तम विधि है, शिक्षा ग्रहण करना, संपर्क साधना और तैयारी करना न कि उसे अनदेखा करना।

प्रत्येक स्कूल में ***व्यापक स्कूल सुरक्षा नीति*** ही आज की आवश्यकता है। विद्यालय के प्रधानचार्य, शिक्षकगण, विद्यार्थी, माता–पिता और स्कूल के परामर्शदाता द्वारा गठित समिति प्रत्येक स्कूल में सुरक्षा के प्रत्येक क्षेत्र को देखने के लिए अनिवार्य है।

कुछ संरचनात्मक चरण जैसे बच्चों के आवागमन और खेलने के स्थान में कोने और तेज सिरों को गोल बनाना, बिजली के खुले तारों पर आवरण डालना, खिड़कियों पर गिल की दृढ़ता को जांचना, रसायन प्रयोगशाला का स्थान और रचना का पुनरावलोकन करना, अग्निशमन प्रणाली को उपयोगिता में रखना स्कूल वेन/ऑटो के स्टॉप निश्चित करना आदि संकट को बहुत बड़ी सीमा तक कम कर देते है परंतु सुरक्षा को स्थापित करना और सुरक्षा को स्वभाव बना लेने के लिए स्कूल में नियमित सुरक्षा अभ्यास की आवश्यकता है जिसमें कर्मियों और विद्यार्थियों दोनों की सहभागिता हो तथा परिसर में आवागमन के मार्ग और निकास मार्ग बनाए जाएं और व्यापक आपदा प्रबंधन योजना निधारित की जाए।

स्वास्थ्य एवं स्वच्छता कार्यक्रम विद्यालयों में विद्यार्थियों और शिक्षकों दोनों के स्वास्थ्य परीक्षण का उत्तरदायित्व संभालते हैं। वे सुनिश्चित करते हैं कि स्वच्छ पेय जल और बालिकाओं तथा बालकों के शौचालय अलग–अलग हों तथा स्वच्छ रहें। पोषण एवं मानसिक स्वास्थ्य के कार्यक्रमों में माता–पिता भी सहयोगी बनाए जाते हैं। दीर्घकालीन सुरक्षा स्थिरता के लिए शिक्षण पक्ष केंद्रीय भाग होता है। समस्त अंशस्वामियों बच्चे, कर्मी, वाहन चालक तथा माता–पिता आदि सभी शिक्षण सर्वोपरि सुरक्षा का एक महत्वपूर्ण भाग है। बच्चों में मूल्य प्रणाली को बलवर्धन प्रदान करने के लिए हमारे विद्यालयों में '***जीवन कौशल***' और समुचित शिक्षा मुख्य शिक्षा का भाग हैं जिससे कि हमारे बच्चे अपनी सुरक्षा के लिए साधन संपन्न हो जाए और अन्यों के लिए उनके मन में अनुकंपा उत्पन्न हो।

विद्यालय ही निश्चय वह स्थान है जहां बच्चों का भविष्य निर्माण किया जाता है कि इसलिए आज है विद्यालयों में सुरक्षा व्यवस्था में निवेश प्रणाली और मूल्यों का बलवर्धन दोनों में, आने वाले समय का रूप निर्धारण करेगा : सुरक्षा या असुरक्षा !

नवोदय विद्यालयों में विद्यार्थियों की सुरक्षा

के.एल. नागराजू*

नवोदय विद्यालय अपने अनोखी विशेषताओं के साथ हमारी शिक्षा प्रणाली में एक विशेष स्थान रखते हैं। ये आवासीय विद्यालय जो प्रतिभाशाली ग्रामीण विद्यार्थियों की आवश्यकतापूर्ति कर रहे हैं, देश के प्रत्येक जिले में स्थित हैं। गुणवत्ता पर बल के साथ निःशुल्क शिक्षा इन विद्यालयों का हॉलमार्क है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) पर आधारित केवल दो विद्यालयों के साथ एक साधारण शुरूआत की गई थी। यह संस्थान अब पूर्ण विकसित होकर 565 स्कूलों का एक विशाल तंत्र बन गया है जिसमें लगभग दो लाख विद्यार्थी अध्ययन कर रहे हैं।

जब विद्यालयों में विद्यार्थियों की सुरक्षा के मुद्दे पर विचार किया जाता है तब हम देख सकते है कि इस विषय पर नवोदय विद्यालय समिति ने बड़ी चिंता व्यक्त की और ध्यान दिया है। इस संबंध में संस्थान का तीस वर्ष से अधिक का अनुभव अन्य के लिए अत्यधिक लाभकारी हो सकता है। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि इस संस्थान को विद्यार्थियों की सुरक्षा पर और प्रभावी कार्यनीतियों के प्रतिपादन पर लगातार ध्यान देना पड़ा है। कार्य कठिन था परंतु उत्साही प्रवर्तकों ने कठिनाइयों के मध्य भी मशाल ऊंची उठाए रखी।

नवोदय विद्यालय अन्य निकायों की तुलना में विद्यार्थियों की सुरक्षा के व्यापक अभियान का दायित्व निभाते हैं। विद्यालय के आवासीय होने के कारण विद्यालय के कर्मियों पर बहुत बड़े उत्तरदायित्व का बोझ होता है। माता–पिता अपने बच्चों को विद्यालय के कर्मियों पर विश्वास करके इस आशा के साथ छोड़ते हैं कि उनका समस्त पक्षों में शारीरिक, सामाजिक, मानसिक और बौद्धिक कल्याण हो। वे विश्वास करते हैं कि उनक बच्चा सुरक्षित हाथों में है। कर्मियों को इस अपेक्षा के अनुरूप रहना होता है। अनके विभागों को प्रधानाचार्य के नेतृत्व में संयोजित प्रयास करना है कि विद्यार्थियों की सुरक्षा सुनिश्चित की जाए। शिक्षक की भूमिका कक्षा तक ही नहीं वरन् उससे बहुत विस्तृत है। वे बच्चों के साथ छात्रावास और खेल के मैदान में भी उपस्थित रहते हैं। चौबीस घंटे में किसी भी क्षण बच्चा अकेला नहीं छोड़ा जाता है।

दिन में कम से कम पांच बार उपस्थिति पुकारी जाती है। सब वहां उपस्थित होते हैं और जो भी काम करना है उसके लिए सक्षम होते हैं। जैसा अन्य आवासीय विद्यालयों में होता है, यहां बच्चों की देखरेख के लिए छात्रावास में अन्य सहायक वार्डन नहीं है। शिक्षक स्वयं ही छात्रावास के विभिन्न ''हाउस'' के प्रभारी होते हैं। इसके अनेक लाभ हैं। शिक्षक बच्चे को सामान्य रूप से समझ पाता है और उसकी शैक्षिक उन्नति की जानकारी रखता है। इन जानकारियों से प्रभारी को सहायता प्राप्त होती है कि वह बच्चों को अपने खाली समय का उचित उपयोग करने में सहयोग दे। विद्यालय और छात्रावास के शयनगार अलग–अलग नहीं परंतु एक दूसरे का विस्तार हैं।

विद्यार्थी के स्वास्थ्य को प्राथमिकता दी जाती है। प्रभारी विद्यार्थियों के साथ लगातार मेल जोल बनाए रखता है और विद्यार्थियों के स्वास्थ्य की निगरानी करता है। आवासीय नर्स सामान्य रोगों का उपचार करती है और आवश्यकता पड़ने पर प्राथमिक चिकित्सा भी प्रदान करती है। मेडिकल जांच कक्ष समस्त आवश्यकताओं के लिए पूर्णरूपेण साधन संपन्न है। यहां दैनिक आवश्यकता की दवाइयाँ उपलब्ध रहती हैं। उन परिस्थितियों में जहां डॉक्टर की आवश्यकता पड़े, विद्यार्थियों को तुरंत अस्पताल

* प्रधानाचार्य, जवाहर नवोदया विद्यालय, रामचंद्राघाट, पश्चिमी त्रिपुरा

ले जाया जाता है। इन विद्यालयों में चौबीस घंटे परिवहन उपलब्ध होता है और आवश्यकता होने पर विद्यार्थियों को राहत पहुंचाने में समय नहीं गंवाया जाता है। स्वास्थ्य की देखरेख यहां समस्या आधारित नहीं होती है। यह एक अभ्यास है जहां रोकथाम रोगोपचार से पूर्ववर्ती होती है। स्कूल का परिसर, स्कूल, रसोई, भोजन कक्ष और शयनगार आदि सब स्थान स्वच्छ रखे जाते हैं। खाद्य पदार्थ स्टाफ नर्स और खान–पान विभाग प्रभारी द्वारा जांचे जाते हैं कि गुणवत्ता सुनिश्चित की जाए। झाड़ियां और घास नियमित रूप से काटी जाती है कि मच्छर न पनपने पाएं और सांप आदि का खतरा न रहे। विद्यार्थियों में वैयक्तिक स्वच्छता और साफ–सफ़ाई का पूरा ध्यान रखा जाता है। प्रधानाचार्य, छात्रावास प्रभारियों तथा नर्स द्वारा नित्यक्रम निरीक्षण किए जाते हैं कि आवश्यक कार्यवाही के विषयों पर ध्यान दिया जाए।

दुर्घटना के संभावित कारणों को खोजा जाता है और उनके निवारण के प्रभावी उपाय किए जाते हैं। क्षतिग्रस्त बिजली के सॉकेट, उभरे हुए भूमिगत तार, पहुंच में आने वाले तार आदि को देखकर तात्कालिक सुधार किया जाता है। जलाशय जैसे पानी की टंकियां, तालाब, कुएं, नदियां, झील आदि के निकट विद्यार्थियों का जाना वर्जित किया जाता है। यदि विद्यार्थी जलाशयों के निकट हों तो कठोर पर्यवेक्षण का ध्यान रखा जाता है कि कोई दुर्घटना न घटे। सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए स्वच्छ प्रवाहित जल उपलब्ध कराया जाता है। जल स्रोतों के निकट स्नान करने की अनुमति नहीं दी जाती है।

शारीरिक सुरक्षा प्रदान करना मानसिक सुरक्षा की तुलना में बहुत आसान काम होता है। यह कार्य तभी कुशलतापूर्वक किया जा सकता है जब विद्यार्थियों के लिए **भावनात्मक सुरक्षा** जाल उपलब्ध करवाने की आवश्यकता के प्रति समस्त कर्मियों को संवेदनशील बनाया जाए। विद्यार्थियों की मानसिक आवश्यकता को पूरा करने के निमित्त समस्त कर्मीगण **दत्तक माता–पिता** की भूमिका निभाएं। एक और सामान्य घटना जो देखी गई वह है, गृह वियोग। आरंभ के कुछ दिन **अनुकूलन** का समय दिया जाता है जिससे कि विद्यार्थी नए वातावरण के अभ्यस्त हो जाएं। छात्रावास प्रभारी बच्चों के साथ बहुत अधिक समय बिताते हैं कि यह स्थान बच्चों द्वारा स्वागत का स्थान स्वीकार किया जाए। निराशा के प्रत्येक चिन्ह को देखा जाता है और यथोचित देखरेख की जाती है। एक बार जब नव आगंतुक विद्यार्थी सुनियोजित दिनचर्या का आनंद लेने लगते हैं तब उन्हें वातावरण घर के जैसा लगने लगता है। सर्वोत्तम देखरेख के उपरांत भी कुछ ऐसे विरल स्थिति होती हैं जिसमें बच्चों को विशेष ध्यान की आवश्यकता होती है। ये बच्चे गहन विषाद से ग्रस्त होते है और उनमें आत्महत्या की मानसिकता होती है। उन्हें उचित परामर्श दिया जाता है और सुनिश्चित किया जाता है। कि वे देखी गई समस्या का निराकरण करने का प्रयास करें।

विद्यार्थियों को जब भी यात्रा करना होती है तब विशेष ध्यान दिया जाता है, विद्यार्थियों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिए प्रवास नीतियों के कारण विद्यार्थियों का बड़ी संख्या में और लंबी दूरी तक प्रवास अपरिहार्य हो जाता है। विद्यार्थी एक स्थान से दूसरे स्थान खेल–कूद, प्रदर्शनियों आदि के लिए जाते हैं तो उनके साथ पर्याप्त संख्या में मार्गरक्षी भेजे जाते हैं, उचित यातायात व्यवस्था की जाती है और यात्राक्रम बड़ी सतर्कतापूर्वक तैयार किया जाता है।

उपरोक्त बातों के अतिरिक्त अनेक सामान्य सुरक्षा उपाय अपनाए गए हैं। द्वार से प्रवेश करने वाले व्यक्तियों का प्रवेश अंकित किया जाता है। अनधिकृत व्यक्ति का प्रवेश निषेध सुनिश्चित किया

जाता है। माता–पिता को अपने बच्चों से भेंट करने की अनुमति माह में केवल एक बार दी जाती है। शुद्ध पेय जल उपलब्ध करवाया जाता है जिससे कि पानी से होने वाले रोग दूर रहें। इस प्रकार विद्यालय का संपूर्ण तंत्र चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार किया जाता है।

"सुरक्षित विद्यालयों" के विषय में अन्य प्रधानाचार्यों का क्या कहना है

सुरक्षित विद्यालयों की विशेषता है, उनका सकारात्मक वातावरण, विद्यार्थी, कर्मी और माता–पिता का उच्च–स्तरीय सहयोग; विद्यालय से संलग्न विद्यार्थियों की उपस्थिति तथा विद्यार्थियों से काम और व्यवहार की उच्च अपेक्षा। विद्यार्थियों के मन में आत्म सम्मान, परस्पर आदर सम्मान तथा विविधता की सराहना की भावना होती है। सुरक्षित विद्यालयों में प्रवर्तनकारी नेतृत्व होते हैं – प्रधानाचार्य और विद्यालय बोर्ड जो मुद्दों पर तात्कालिक और प्रभावी कार्यवाही करें और माता–पिता की राय का स्वागत करें। स्कूल समुदाय के समस्त सदस्य योजना बनाने तथा सुरक्षा एवं सम्मान की विद्यालय संबंधित संस्कृति की रचना करें एवं उसे कायम रखें। प्रत्येक विद्यार्थी को कम से कम एक शिक्षक के साथ विश्वास योग्य संबंध हो

'संलग्नता' का व्यापक कार्यक्रम।

दिनेश जिंदल
एस.डी. विद्या मंदिर, हुडा, पानीपत

विद्यालय की सुरक्षा आज की शिक्षा का एक अंतरंग भाग है। वह ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न करती है जो स्कूल में सकारात्मक, सुरक्षित और स्वस्थ संस्कृति, परिवेश और वातावरण बनाती हैं। विद्यालय की सुरक्षा हर एक का उत्तरदायित्व है – विद्यार्थी, शिक्षक व्यवस्थापक, माता–पिता और समुदाय के सदस्य, परंतु उचित प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक का होना सुरक्षित विद्यालयों का रखरखाव सुसाध्य बनाता है।

सुरक्षा विद्यालयों में प्रचलित शारीरिक अनाचार से ही संबंध नहीं रखती परंतु इसका ध्यान केंद्र उन विभिन्न समस्याओं पर है जो आज दैनिक कार्य हो गई हैं जिन्हें गंभीरतापूर्वक देखे जाने की आवश्यकता है। उचित एवं सुरक्षित शारीरिक सुविधा की जोखिम के कारणों तनाव, क्रोध, भय, भेदभाव और विद्यालय के वातावरण में शिक्षा को बाधित करने के तथा अवनति के मुद्दे हैं, जो तात्कालिक ध्यान आकर्षण की मांग करते हैं।

सुरक्षा संबंधित मुद्दे, समस्या के क्षेत्रों, समस्याओं प्रकृति एवं गंभीरता की पहचान की युक्तियों के साथ होने आवश्यक है और इसके बाद विद्यालय की सुरक्षा को चुनौती देने वाले मुद्दों की रोकथाम और प्रबंधन। एक सुरक्षित विद्यालय का वातावरण विद्यालय के लिए एकल इकाई के रूप में आगे बढ़ते हुए सकारात्मक वैयक्तिक प्रदर्शन को अपनाता है।

मधुबाला चतुर्वेदी
केंद्रीय विद्यालय, ओ.एल.एफ. देहरादून

अन्य शिक्षक स्कूल सुरक्षा के विषय में क्या कहते हैं

आग से सुरक्षा

आग लगने के कारणों को उत्प्रेरित करती परिस्थितियों के निवारण में रोकथाम मुख्य है।

- बिजली से उत्पन्न होने वाले खतरों के कारणों का सुधारण कीजिए तथा प्लग आदि पर अधिक भार न डालें।
- स्कूल की मंजिल की योजना में निकास मार्ग स्पष्ट हों और कक्षा के द्वार पर ही हों।
- अग्नि सुरक्षा योजना स्थापित करें।
- आग लगने पर उचित उपकरण से उसे बुझाएं परंतु अपने आप को या अन्य किसी को खतरे में न डालें यदि आग तेजी से बढ़ रही है या आपके निकास को अवरूद्ध कर रही है तो आग बुझाने का प्रयास न करें। यदि आप अग्नि शमन उपकरण काम में लेना नहीं जानते हैं तो तुरंत बाहर आ जाएं।
- कक्षा के तथा सभागार के द्वार बंद कर दें जिससे कि वायु प्रवाह रुक जाए और धुंआ न उठे।
- आतंकित न हों। विद्यार्थियों से कहें कि अग्नि शमन कार्य प्रगति पर है अतः वे शांत रहें। आपका आत्मविश्वास और निर्णय अत्यधिक महत्वपूर्ण है जिससे आतंक रोका जा सकता है।
- आग पकड़ने वाले तरल पदार्थ संभाल कर रखें और उन्हें फेंकें तो अनुमोदित सुरक्षा पात्र काम में ले।

नीना सिंह, विज्ञान शिक्षिका
लिटिल वर्ल्ड स्कूल, तिलवाड़ा, जबलपुर

विद्यालयों में सुरक्षा सुनिश्चित करने का कार्य बड़े दायित्व का कार्य है तथापि, सुरक्षा सूची प्रबंधन, व्यवस्था, समन्वयकों, शिक्षकों और विद्यार्थियों की सहायता कर सकती हैं कि अनुभव की कमी में भी वे अपने विद्यालय में इसका पालन कर सकते हैं। स्कूल में चोट और जोखिमों से बचने की कुंजी है कि सुरक्षा और पर्यावरण संबंधित सुरक्षा योजना की स्थापना करना एक सुरक्षित स्कूल की स्थापना का उद्देश्य निरर्थक हो जाता है, यदि विद्यार्थियों को सुरक्षा उपायों का उपयोग न सिखाया जाए। हर समय सतर्क रहना; विद्यार्थियों को प्रशिक्षण देना और नियमित जांच विद्यालय को संपूर्ण विद्यालय समुदाय के लिए इस सुरक्षित स्थान बना सकते हैं।

लोरेटा एलिस (समन्वयक)
सेंट स्टीफन्स स्कूल
तोगन (पंजाब)

अन्य शिक्षक स्कूल सुरक्षा के विषय में क्या कहते हैं

विद्यालयों में सुरक्षा सुनिश्चित करने के दस–सूची कार्यक्रम

1. **प्राथमिकता** : विद्यार्थियों की सुरक्षा प्रत्येक विद्यालय और समुदाय के लिए प्राथमिकता हो।
2. **अग्रणी योजना एवं तैयारी** : असुरक्षित परिस्थिति के प्रति प्रतिक्रिया दिखाने के लिए विद्यालय के पास पूर्व स्थापित उपाय होना चाहिए।
3. **नियमित एवं निकट सहयोग** : विद्यालय का प्रबंधन, विद्यालय प्रधानाचार्य, शिक्षक, विद्यालय के कर्मी, माता–पिता, विद्यार्थी और समुदाय सबको इसमें सहभागी होना आवश्यक है और सुरक्षा भंग को रोकने के प्रयास में तथा आपातकालीन स्थिति में प्रतिक्रिया दिखाने में सहकारी होना है। माता–पिता और विद्यार्थियों को भी विद्यालय की सुरक्षा बढ़ाने के कार्यकलाप में सक्रिय भाग लेना हैं। विद्यालय को निकटतम अस्पताल के साथ संबंध बनाए रखना चाहिए कि आपातकालीन स्थिति को संभाला जाए।
4. **उत्तरदायित्व वहन** : विद्यालय द्वारा किसी व्यक्ति को नियुक्त किया जाए कि सुरक्षा संबंधित गतिविधि का समन्वय करें जिससे कि वातावरण सुरक्षित एवं स्वस्थ बना रहे।
5. **व्यवसायिक सहायता** : विद्यालय यह सुनिश्चित करें कि कठिन या उद्दंड विद्यार्थियों के लिए परामर्शदाताओं और मनोवैज्ञानिकों की सुविधा हो। ये व्यवसायिक अपने पास आने वाले विद्यार्थियों को सुरक्षा के विषयों की जानकारी दें और उनकी सहायता करें। पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त और प्रमाणित उपचिकित्सक या चिकित्सक पूरे दिन विद्यालय में उपलब्ध रहे ताकि किसी भी चिकित्सा संबंधित आपात स्थिति को संभाला जा सके।
6. **सुरक्षा का मानसिक पक्ष** : समस्त कक्षाओं के विद्यार्थियों को आवश्यक रूप से विवाद सुलझाने और अन्य जीवन कौशलों के विकास हेतु विशेष कक्षाओं में सहभागी होना चाहिए और यह तब ही संभव होगा जब विद्यालय आत्मसम्मान और अन्य लोगों के सम्मान को विद्यालय के कार्यक्रमों में बढ़ावा देने पर बल दे।
7. **प्रभावी तैयारी के लिए शिक्षकों का प्रशिक्षण** : शिक्षकों को प्रयोगात्मक शारीरिक, सामाजिक और मानसिक स्वास्थ्य के उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए स्वीकार्य और प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
8. **आधारभूत बातों पर स्थिर रहना** : विद्यालय एक निष्पक्ष, सुदृढ़, स्थिर अनुशासन नीति पर कायम रहे।
9. **सावधानी के उपाय** : विद्यालयों में सुविधाओं (बिजली के उपकरण, प्रयोगशाला के सामान आदि) का नियमित परीक्षण किया जाए और जोखिम मुक्त अवस्था सुनिश्चित की जाएं। विद्यार्थियों द्वारा इंटरनेट का उपयोग करते समय दुरुपयोग से बचाने के लिए अमोघ उपाय होना आवश्यक है।
10. **अंतरंग पहुंच** : सुरक्षा का विषय अपने आप में ही एक विषय न हो परंतु इसे स्कूल कार्यक्रम के प्रत्येक क्षेत्र में ध्यान रखा जाना चाहिए – भोजनकक्ष, व्यायाम शिक्षण, कक्षा, खेल के मैदान, स्कूल के बाद के कार्यक्रम आदि सभी में। विद्यालय के अधिक से अधिक कार्यक्रमों में जितना संभव हो सुरक्षा विषय को समाहित किया जाना चाहिए।

मोनिका श्रीवास्तव
गणित शिक्षिका
मदर टेरेसा स्कूल, प्रीत विहार

सर्वोत्तम अभ्यास करते विद्यालय

यूटोपिआ रीडिंग क्लब, के.वि.सं. 3, मुंबई

*वंदना मिश्रा

"पढ़ना मस्तिष्क के लिए वैसा ही है जैसा व्यायाम शरीर के लिए"।

इंटरनेट के घर–घर प्रवेश के कारण लगभग सभी नेट उपभोक्ताओं का पढ़ने का अभ्यास कम हो गया है। अब पुस्तकों का पढ़ना, अनेकों के लिए सर्वाधिक मनभावन काम नहीं रह गया है।

केंद्रीय विद्यालय सं. 3 कोलाबा, मुंबई के अपने बच्चों में पढ़ने की संस्कृति के जागृत करने के लिए हाल ही में एक पठन क्लब **"यूटोपिआ"** इस आशा से स्थापित किया गया है कि उसके द्वारा बच्चों के सर्वांगीण व्यक्तित्व के विकास में सहायता प्राप्त होगी।

पूर्व में अनेक विद्यार्थी पठन सामग्री के व्यापक संग्रह के उपरांत भी पढ़ने और पुस्तकालय सुविधा के सदुपयोग के अभ्यस्त नहीं थे। पुस्तकालय के कठोर अनुशासन के कारण पाठक क्लब आरंभ करने के विचार का उदय हुआ कि पढ़ना अधिक अनौपचारिक एवं अनुकूल वातावरण में हो पाए।

रीडिंग क्लब की तैयारी

"अनुभव आपसे कहता है क्या करें, आत्मविश्वास आपको करने की अनुमति देता है।"

- प्रतिक्रिया के आधार पर कक्षा सात, आठ और नौ से पाठक चुने गए।
- ऐसी पठन सामग्री तैयार की गई कि वह आकर्षक एवं मनोरंजक हो। उसका वर्गीकरण किया गया कि वह सीखने वाले की क्षमता, ज्ञान और रुचि के अनुरूप हो।

चित्र
केंद्रीय विद्यालय सं. 3, कोलाबा, मुंबई रीडिंग क्लब "**यूटोपिआ**" में पढ़ते हुए विद्यार्थी

चित्र
केंद्रीय विद्यालय सं. 3 कोलाबा, मुंबई रीडिंग क्लब "**यूटोपिआ**" द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यकलापों में भाग लेते हुए विद्यार्थीगण

- एक उपयुक्त स्थान चिन्हित किया गया और उसे 'यूरोपिआ रीडिंग क्लब' नाम दिया गया।
- विद्यार्थियों को पहचान पत्र दिए गए जिन पर क्लब का लोगो अंकित था।
- सभागम का समय निर्धारित किया गया – प्रति शुक्रवार सदस्य सीसीए कक्षा के समय एकत्रित होते थे।
- पुस्तकालय से आसान पठन सामग्री दी गई जिसे वाचनालय में रखा गया। वाचन सामग्री ऐसी भी जिससे उनका सांसारिक ज्ञान बढ़ता और उन्हें नए नए विचारों की शिक्षा प्राप्त होती तथा उन्हें गंभीर जीवन दक्षताओं से संपन्न किया जाता।

---

* वंदना मिश्रा टीजीटी (अंग्रेजी) के. वि. सं. 3, कोलाबा, मुंबई

- पारस्परिक क्रिया और अन्तःक्रिया लगातार की जाती थी – मूल्यांकन और प्रतिक्रिया।

'यूटोपिआ' के कार्यकलाप

मेरे अपने प्रयोगों से मैंने सीखा कि यह जान लेना ही पर्याप्त नहीं क्या करें, हमें उन ज्ञान पर कार्य करना है कि वांछित जीवन प्राप्त हो।

- पुस्तक आवरण का रूप तैयार करना।
- वाचन प्रतिस्पर्धा।
- सामान्य विषयों पर विचारों का आदान–प्रदान।
- वाद–विवाद, भाषण, नाटक, गाना, नृत्य।
- बाहरी कार्यकलाप : पुस्तक भंडारों में जाना।
- विद्यार्थियों को पढ़ने की प्रेरणा देने के लिए कार्यशाला का आयोजन किया गया – उदाहरण, अमर चित्र कथा।
- चित्र आधारित वार्तालाप।
- पोस्टर बनाना, 2008 की झलकों का संग्रह।
- शीर्षक पढ़ना, उत्पाद पर नाम, विज्ञापन, मार्गचिन्ह आदि का उपयोग आरंभ किया गया था।

उपसंहार

केंद्रीय विद्यालय सं. 3, कोलाबा में पाठकों का क्लब आरंभ करना एक महान अनुभव और आनंद रहा।

इसके सदस्यों को प्रेरणा दी गई कि वे स्वयं ही अपनी निर्धारित पाठ्य पुस्तकें पढ़ें, उन्हें अंतर्ग्रहण करें और समझें। पढ़ने से उन्हें निष्कर्ष निकालने में, विश्लेषण करने में और व्याख्या करने में सहायता मिली और पढ़ना आनंद का कारण बन गया।

स्टेप बाई स्टेप हाई स्कूल द्वारा बाल विवाह के विरुद्ध नुक्कड़ नाटक

बाल विवाह के विरुद्ध जागृति लाने के लिए विद्यार्थियों ने 21 जनवरी 2009 को नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया।

विद्यार्थी निकट के एक गांव में गए और बाल विवाह के विरुद्ध जागृति लाने के लिए महिलाओं तथा बच्चों से भेंट की। नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से विद्यार्थियों ने प्रदर्शन किया कि बाल विवाह बालिका के लिए शारीरिक ही नहीं मानसिक एवं मनोवैज्ञानिक रूप से भी कैसा विनाशकारी होता है। उन्होंने समस्या और उसके समाधान पर प्रकाश डालने के लिए नृत्य एवं गायन प्रदर्शन भी किया।

चित्र
बाल विवाह के कुप्रभाव के प्रति जागृति लाने के लिए विद्यार्थी नुक्कड़ नाटक का प्रदर्शन करते हुए।

प्रसार माध्यम की कतरनें (अंग्रेजी)

भारत में विद्यालयों के सुरक्षा मानदंडों पर सर्वोच्च न्यायालय के आदेश

एक महत्वपूर्ण आदेश में सर्वोच्च न्यायालय ने आज्ञा दी कि यदि इमारत में अग्नि सुरक्षा के उपाय और भूंकप विरोधी रचना न हो। तो किसी भी नए सरकारी या निजी स्कूल को मान्यता नहीं दी जाएगी पांच वर्ष पूर्व कुम्बकोणम तमिलनाडु के एक स्कूल में आग लगने से 93 बच्चों की हृदय विदारक मृत्यु से उत्प्रेरित न्यायमूर्ति एच. दलवीर भंडारी एस. बेदी द्वारा गठित पीठ ने कहा, ''**दुर्बल और आरक्षित इमारत में बच्चों को शिक्षा ग्रहण करने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता है।**''

कुम्बकोणम और डाबवाली, हरियाणा (1955) की आग दुर्घटना में बच्चों की मृत्यु की दर्दनाक, घटना का संदर्भ देते हुए पीठ ने कहा, ''हमारे देश के समस्त सरकारी और निजी विश्वविद्यालय में नेशनल बिल्डिंग कोड ऑफ इंडिया 2005 द्वारा निर्धारित सुरक्षा मानदंडों का पालन करना आदेशात्मक हो गया है।''

समस्त राज्य सरकारों के लिए अन्य आदेश है :

- समस्त वर्तमान सरकारी और निजी विद्यालय छः माह के भीतर अग्नि शमन उपकरण लगवाएंगे।
- विद्यालय की इमारतों को दहनशील और विषैले अवयवों से मुक्त रखा जाए या उनका सुरक्षित भंडारण किया जाए।
- विद्यालय की इमारत के रचनात्मक पक्ष का समय समय पर मूल्यांकन किया जाए।
- स्कूल कर्मी अग्नि शमन उपकरणों के प्रयोग में पूर्ण प्रशिक्षित हों,

टाइम्स ऑफ इंडिया, अप्रैल 14, 2009 के सौजन्य से

इंटरनेट सुरक्षा

गूगल इंडिया ने संपूर्ण भारत में इंटरनेट सुरक्षा अभियान का विमोचन किया है जो 'बी नेट स्मार्ट' कहलाता है। इस अभियान का उद्देश्य है कि युवा वेब उपभोक्ताओं को शिक्षित किया जाए कि इंटरनेट को समझदारी से कैसे काम में लिया जाए और ऑन लाइन पर सुरक्षित कैसे रहें। ''सूंपर्ण विश्व में भारत जैसे कहीं भी यह विचार नहीं है कि युवा पीढ़ी भावी पालक हैं। अतः यह महत्वपूर्ण है कि हमारी युवा पीढ़ी को उन समस्त साधनों से संपन्न किया जाए जो उन्हें उत्तम – जीवन निर्माण में सहायक होंगे। इंटरनेट युवाओं की जिज्ञासा का पोषण करता है – उन्हें नए नए प्रश्न पूछने के लिए और उनके ज्ञान की सीमा को विकसित करने में प्रेरित करता है। 'बी नेट स्मार्ट' अभियान उनकी ऑनलाइन सुरक्षा की ओर एक कदम है जबकि वे असीम संभाव्यताओं को खोजना जारी रखते हैं।''

'बी नेट स्मार्ट' एक परस्पर व्यावहारिक अभियान है जो कक्षा छः और उससे ऊपर के विद्यार्थियों पर ध्यान केंद्रित करता है। विद्यालय में व्यवस्थित किए गए सत्र ऐसे विषयों की चर्चा करते हैं जैसे गोपनीयता बनाए रखना और ऑन लाइन पर अपरिचित जनों से व्यवहार करने से दूर रहने से लेकर डाउनलोडिंग विषय, चित्र भेजना तथा ऑन लाइन चर्चा। विद्यार्थियों के अतिरिक्त, माता–पिता और शिक्षकों को भी इसकी शिक्षा दी जाती है जिनके विषय हैं इंटरनेट जागरूकता और बच्चों के साथ सहभागी होने की आवश्यकता।

इस अभियान को मुंबई में 18 फरवरी को मुंबई पुलिस के साथ विमोचन किया गया था। अब तक मुंबई पुलिस और गूगल ने 15,000 विद्यार्थी, 300 शिक्षकों तक पहुंचने और 30 विद्यालयों में 'बी नेट स्मार्ट' संदेश की सफलता पा ली है। सच तो यह है कि मुंबई पुलिस और गूगल कर्मी स्वयं सेवकों ने मुंबई के, अंग्रेजी, हिंदी, मराठी, गुजराती और उर्दू माध्यम विद्यालयों में जाकर भेंट की और उन तक शुभ संदेश पहुंचाए।

ऑन लाइन पर बच्चों की सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए माता–पिता, शिक्षकगण, अधिकारी और नियोजकों के सहयोगी प्रयास की आवश्यकता है। यह अभियान ऐसा ही एक सहकर्मी प्रयास है। गूगल और मुंबई पुलिस का लक्ष्य है, ''विद्यार्थियों तक पहुंचकर उन्हें इंटरनेट सुरक्षा की शिक्षा दें''। यह ध्यान रखना महत्त्वपूर्ण है कि इंटरनेट यहां स्थायी रूप से है।

गूगल इंडिया आशा करता है कि मुंबई में प्राप्त यह सफलता संपूर्ण भारत में दोहराई जाए। इसके निमित्त गूगल इंडिया भारत के विभिन्न नगरों में पुलिस संस्थानों से चर्चा कर रहा है कि साझेदारी द्वारा – विद्यार्थियों, शिक्षकों और माता–पिता को इंटरनेट के वैधानिक उपयोग की शिक्षा दे।

गूगल इंडिया के सौजन्य से

सुरक्षित विद्यालय, सुरक्षित भारत

डॉ. संगीता भाटिया*

सुरक्षा के विभिन्न आयामों की जांच सूची

अनुभाग – 1 : शारीरिक सुरक्षा

- क्या विद्यालय के पास सीबीएसई के व्यापक विद्यालय स्वास्थ्य कार्यक्रम द्वारा विचार किये गए हेल्थ कार्ड हैं।
- क्या विद्यालय विशिष्ट स्वास्थ्य समस्याओं वाले विद्यार्थियों के मेडिकल रिकॉर्ड रखता है?
- क्या माता–पिता अपने बच्चों के स्वास्थ्य के विषय में विद्यालय से संपर्क करते हैं?
- क्या विद्यालय में सुयोग्य पूर्णकालिक डॉक्टर / नर्स है?
- क्या आपातकालीन स्थिति के लिए फोन पर डॉक्टर उपलब्ध है?
- क्या विद्यालय का संबंध दो किलोमीटर में स्थित स्थानीय अस्पताल से है?
- क्या चिकित्सा कक्ष समस्त आपात स्थितियों को संभालने के लिए साधन संपन्न है?
- क्या इमारत के प्रत्येक चरण में एक प्राथमिक चिकित्सा बॉक्स रखा है?
- क्या विद्यालय सब विद्यार्थियों की वार्षिक चिकित्सा जांच करवाता है?
- क्या विद्यालय के कर्मी बच्चों की वास्तविक स्वास्थ्य संबंधित समस्या को समझने में संवेदनशील बनाए गए हैं?
- क्या शिक्षक परामर्श में, प्राथमिक चिकित्सा में और अयोग्यता की पहचान में आधारभूत प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं?
- क्या विद्यालय में 'हेल्थ एंड वेलनेस क्लब हैं?'
- क्या प्रत्येक शिक्षक 'स्कूल स्वास्थ्य मैनुअल' को नियमित व्यवहार में लाता है?
- क्या विद्यार्थियों द्वारा संतुलित आहार खाने पर बल दिया जाता है और जंक फूड के लिए निरुत्साहित किए जाते हैं?
- क्या विद्यालय फल/दूध/भोजन की मध्यान्तर योजना का पालन करता है?
- क्या स्कूल पैनल में डाएटीशियन या मील प्लानर है?
- क्या शिक्षक बच्चों के साथ भोजन करते हैं और उनके खाने की आदत का निरीक्षण करते है?
- क्या रसायन शास्त्र प्रयोगशाला सामान्य आपातस्थिति को संभालने के लिए साधन संपन्न है?
- क्या विद्यालय में स्वास्थ्य अनुकूल वातावरण अपनाया गया है?
- क्या विद्यालय में विभिन्न स्थानों पर चोट लगने की स्थिति में प्राथमिक चिकित्सा उपचार के प्रदर्शन व्यवस्थित हैं?

---

* सहोदय – दिल्ली के उत्तर पश्चिमी अध्याय के सहयोग से

- क्या स्कूल प्रबंधन चिकित्सा विशेषज्ञों को समय–समय पर आमंत्रित करता है कि विद्यार्थियों और शिक्षकों को सुग्राही बनाएं?
- क्या विद्यालय ने माता–पिता, शिक्षक, विद्यार्थी समिति का गठन किया है जो विद्यार्थियों की सुरक्षा आवश्यकताओं पर चर्चा करें?
- क्या विद्यालय में उचित मल निकास, गंदा पानी निकास और कूड़ा फेंकने का उचित प्रबंध है?
- क्या स्कूल में नलों की उचित संख्या के साथ पीने के सुरक्षित पानी की सुविधा उपलब्ध है?
- क्या ऑडिटोरियम, हाल, जिम जोखिम भरी स्थितियों से मुक्त है और उसमें हवा एवं प्रकाश आने की उचित व्यवस्था है।
- क्या बाहरी व्यक्तियों के विद्यालय परिसर में प्रवेश पर नियंत्रण एवं निगरानी रखी जाती है?
- क्या विद्यालय के सभी क्षेत्र रचना से या कार्मियों के पर्यवेक्षण द्वारा सुरक्षित किए गए हैं?
- क्या कर्मी विद्यार्थियों का कक्षा के भीतर तथा बाहर सक्रिय पर्यवेक्षण करते हैं?
- क्या बेंचों में कोई नुकीली वस्तु लगी है?
- क्या खिड़कियों में उचित जाल लगा हुआ है?
- क्या धोने के कक्ष स्वच्छ हैं और रोगाणुनाशक दवाइयां बच्चों की पहुंच से बाहर रखी जाती है?
- क्या बिजली के उपकरणों का रखरखाव अच्छा है और उनकी गुणकारी जांच की जाती है?
- इमारत के कोने, बरामदे, सीढ़ियां लंच के अंतराल और छुट्टी के समय कर्मियों की निगरानी में रहते हैं?
- क्या विकलांग विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए ढलवां स्थान है और व्हील चेयर उपलब्ध हैं?
- क्या माता–पिता से संचार माध्यम या मोबाइल फोन द्वारा संबंध उपलब्ध है?
- क्या विद्यालय में प्रत्येक विद्यार्थी का मेडिकल इतिहास उपलब्ध है?
- विशेष रिकॉर्ड जैसे ब्लड ग्रुप, एलर्जी, प्रायः दी जाने वाली दवाइयों आदि के विवरण, माता–पिता के सहयोग से वर्तमान स्थिति में हैं?
- क्या शारीरिक शिक्षा अनुदेशक विद्यार्थियों की क्षमता और स्वास्थ्य के आधार पर सहभागिता के प्रति संवेदनशील हैं?
- क्या खेल कक्ष साधारण चोटों की चिकित्सा के लिए साधन संपन्न और हवादार है?
- क्या विद्यालय का खेल का मैदान, झूले, राइड, खेल के सामान आदि सामान आदि सुरक्षित स्थिति में है?
- क्या विद्यालय की बसों ने सुरक्षा परीक्षण पूरा किया है?
- क्या बस में कोई शिक्षक जाता है और सहायक बच्चों के साथ रहता है?
- क्या स्कूल बसों में प्राथमिक चिकित्सा बॉक्स, पेय जल और मोबाइल फोन हैं?
- क्या लिफ्ट और निकास मार्ग समय–समय पर और प्रतिदिन जांच किए जाते हैं?
- क्या प्रयोगशालाएं सुरक्षित एवं बड़ी है कि जोखिम मुक्त शिक्षण दिया जा सके?

अनुभाग 2 : भावनात्मक सुरक्षा

- क्या विद्यालय के पास बाल दुर्वव्यवहार और बाल शोषण के विरुद्ध कठोर नीति है?
- क्या कर्मियों को बाल दुर्व्यवहार के चिन्हों के प्रति सतर्क रहने का प्रशिक्षण प्राप्त है?
- क्या बच्चों के साथ काम करने की अनुमति से पूर्व कर्मियों की जांच की कोई प्रक्रिया है?
- क्या बाल सुरक्षा की नीति जिसमें शिक्षक या अन्य कर्मी पर बच्चे को क्षतिग्रस्त करने का आरोप हो तो उस पर कार्यवाही करने की व्यवस्था हो, उपलब्ध है?
- क्या विद्यालय कर्मियों द्वारा बच्चों को दुर्व्यवहार से सुरक्षित रखने के उनके उत्तरदायित्व का संबोधन करने हेतु प्रशिक्षण और विकास का प्रशिक्षण उपलब्ध करवाता है?
- क्या विद्यालय के रजिस्टर में नियत परामर्शदाता हैं?
- क्या विद्यालय माता–पिता से संपर्क करता है और बाल सुरक्षा विषयों में परिवारों का सहयोग खोजता है?
- क्या वहां दुर्व्यवहार किए गए बच्चों के लिए पुनर्नियोजन कार्यक्रम है?
- क्या बच्चों को सिखाया जाता है कि 'सदुपयोग और दुरुपयोग' क्या होता है?
- क्या बच्चे की सहायता की जाती है कि वह अपने शरीर पर अपने अधिकार को समझे विशेष करके 'नहीं' कहने के अपने अधिकार को?
- क्या बच्चे उपयुक्त वातावरण का आनंद लेते है। और क्या वे अपना विश्वास शिक्षकों के साथ प्रकट करते हैं?
- क्या विद्यालय किशोरों से संबंधित समस्याओं पर चिकित्सा विशेषज्ञों और परामर्शदाताओं के सौजन्य से कार्यशालाओं का आयोजन करता है?
- क्या विद्यालय बच्चों में आत्म सम्मान के विकास और भावना और विचारों के आदान प्रदान का अवसर प्रदान करता है?

अनुभाग 3 : सामाजिक सुरक्षा

- क्या बच्चों को भावनाओं को समझने और व्यक्त करने और पुरुष–महिला स्वस्थ संबंध के विषय पर्याप्त मार्गदर्शन दिए जाते हैं?
- क्या बच्चों को नकारात्मक लिंग दबाव के अभ्यासों के प्रति समझाया जाता है?
- क्या उन्हें क्रोध और तनाव का निर्वाह करने की दक्षता सिखाई जाती हैं?
- क्या उन्हें आलोचना, अभद्र भाषा, अफ़वाह और मार–पीट करवाने वाले छोटे–छोटे कारणों से दूर रहने का व्यावहारिक ज्ञान दिया जाता है।
- क्या स्कूल मारना पीटना, सताना, और बच्चों में भेदभाव के विषयों उपदेश देता है?
- क्या शिक्षक बच्चों पर अपने प्रभाव को सकारात्मक बनाने का प्रयास करते हैं और क्या वहां पारस्परिक संबंधों का वातावरण है?

- क्या वहां चोरी, दीवारों पर लिखने तथा गुटबंदी की सख्त निगरानी की जाती है कि अपराध रोके जाएं?
- क्या विद्यालय की इमारत और खेल का मैदान अच्छे रखरखाव में है?
- क्या विद्यार्थी कर्मियों की अपराध और सुरक्षा संबंधित समस्याओं की सूचना देने में अपने आपको सुरक्षित पाते हैं?
- क्या अनुशासन और सुरक्षा संबंधित समस्याओं का तात्कालिक निवारण किया जाता है?
- क्या वहां एड्स जागृति, तंबाकू और नशीली दवाओं से संबंधित कार्यक्रम पर्याप्त मात्रा में हैं?
- क्या वहां तनाव के निर्वाह की कार्यशालाएं, योग कक्षाएं और ध्यान केंद्रण सत्र विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए उपलब्ध है?
- क्या विद्यालय में प्रसन्नचित्त अध्ययन का परिवेश है?
- क्या वहां शिक्षकों द्वारा शारीरिक दंड और मानसिक उत्पीड़न पर कठोर प्रतिबंध है?
- पिछड़े और विशेष आवश्यकताओं के विद्यार्थियों के लिए क्या पर्याप्त मार्गदर्शन की व्यवस्था है?

अनुभाग 4 : आपदा की स्थिति में आपातकालीन तैयारी

- क्या आग लग जाने की स्थिति में वहां पर्याप्त निकास मार्ग एवं प्रवेश द्वार, सीढ़िया आदि है?
- क्या इमारत के विभिन्न भागों में निर्गम व्यवस्था का संकेत प्रत्यक्ष हैं?
- क्या विद्यार्थी और शिक्षक निर्गम योजना से परिचित है कि आपदा के समय भगदड़ न मचे?
- क्या विद्यालय का परिसर सी.सी.टी.वी. द्वारा प्रधानाचार्य के निरीक्षण में रहता है?
- क्या वैधानिक विकल्प और परामर्श का प्रावधान है?
- आपातकालीन स्थिति को संभालने में शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया गया है?
- क्या विद्यार्थी और कर्मी अग्नि शमन उपकरण काम में लेना जानते हैं?
- क्या आशंकित स्थानों पर पर्याप्त अग्नि शमन उपकरण स्थापित हैं?
- क्या फर्श, सीढ़ियां और रेलिंग सुरक्षित हैं?
- क्या विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए सीपीआर और प्राथमिक शिक्षा प्रशिक्षण कक्षाओं का आयोजन समय–समय पर किया जाता है?
- क्या सीवर और पानी की टंकियों पर उचित ढक्कन लगे हैं?
- क्या इमारत में जगह–जगह अग्नि चेतावनी और धुएं के साइरन लगे हैं?
- क्या आपदा निर्वाह और निर्गम व्यवस्था का समय–समय पर अभ्यास किया जाता है?
- क्या आपातकालीन समय या दुर्घटना होने पर सुसज्जित एम्बुलेंस की व्यवस्था है?
- इमारत के विभिन्न स्थानों पर आपातकालीन स्थिति में इमारत के विभिन्न भागों में दर्शाए गए नियमों का पालन किया जाता है?
- क्या शिक्षकों और उप चिकित्सकों को कृत्रिम श्वास और होश में लाने का प्रशिक्षण दिया गया है?

- क्या फोन पर अग्नि शमन सेवा, एम्बुलेंस सेवा, प्रति सहायता, और अन्य समाज सेवा उपलब्ध है?
- क्या स्कूल में आपातकालीन स्थिति की घोषणा के लिए माइक आदि लगे है?
- क्या आपदा प्रबंधन योजना का अद्यतनीकरण नियमित रूप से होता है?
- क्या वहां स्कूल आपदा प्रत्युत्तर दल है जो प्रबंधक कर्मियों, शिक्षकों और वरिष्ठ विद्यार्थियों से गठित है?
- क्या स्कूल में आम भाषा का प्रचलन है जो सब समझ पाएं?
- क्या विद्यालय के कर्मी आपदा और आपदा के बाद की स्थिति को संभालने के अभ्यस्त हैं?
- क्या प्रधानाचार्य आपदा के समय महत्वपूर्ण निर्णय लेने योग्य है?
- क्या स्कूल सुरक्षा तकनीक से संपन्न है?
- क्या विद्यालय की रचना आतंकवादी हमले से बचने में सुरक्षित है?
- क्या विद्यालय सनसनी फैलाए बिना मीडिया से निपटता है और ताजा जानकारी देता है?
- क्या नए निर्माण में यह वर्तमान रचना के मूल्यांकन में सुरक्षा जांच सूची की सहायता ली जाती है?
- क्या विद्यालय की सुरक्षा जांच सूची का नियमित रूप से आधुनीकरण किया जाता है?
- क्या विद्यालय में आपदा प्रबंधन कक्ष पूर्वरूपेण साधन संपन्न है?

अनुभाग 5 : साइबर सुरक्षा

- क्या कंप्यूटर कक्ष और तकनीकी उपभोग शिक्षकों की निगरानी में हैं?
- क्या ई– कचरे को उचित नीति से प्रयोग किया जा रहा है?
- क्या बच्चों के लिए इंटरनेट सुरक्षा उपलब्ध है?
- क्या साइबर अपराध संवेदनशीलता के साथ निर्वाह किए जाते हैं?
- क्या सामाजिक नेटवर्क कक्षा समय में बंद किया जाता है?
- क्या माता–पिता और बच्चों को तकनीक के सुरक्षित उपयोग और जोखिमों से बचने की पर्याप्त जानकारी है?
- क्या साइबर बुलीइंग अत्यधिक सावधानी से संभाली जाती है?

कार्यक्रमों के विवरण

इंटर स्कूल हितैषी अंग्रेजी सस्वर पाठ, वक्तता और वाद–विवाद प्रतियोगिता – डी.पी.एस. राजकोट

डीपीएस राजकोट में 7 फरवरी 2009 को इंटर स्कूल हितैषी अंग्रेजी सस्वरपाठ, वक्तता और वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

सौराष्ट्र क्षेत्र के आठ प्रमुख विद्यालयों, ***डालमिया पब्लिक स्कूल, सूत्रपाड़ा, के.डी. अंबानी विद्या मंदिर, जामनगर; नंद विद्या निकेतन, जामनगर; राजकुमार कॉलेज, राजकोट; एस.एन.के स्कूल, राजकोट; सैनिक स्कूल, बालछड़ी; द आदित्य बिरला पब्लिक स्कूल, वेरावल*** और मेजबान स्कूल ने प्रतियोगिता में भाग लिया।

सुश्री शर्मिष्ठा सेन (प्रधानाचार्या, द आदित्य बिरला पब्लिक स्कूल, वेरावल), श्री एस. के. भट्टाचार्य, (प्रधानाचार्य, नंद विद्या निकेतन, जामनगर), आचार्य एस. पी. सिंह (सदस्य–पीटीसी) मुख्य अतिथि थे।

श्री दुष्यन्त निमावत (प्राध्यापक–अंग्रेजी विभाग, आत्मीय मैनेजमेंट कॉलेज, राजकोट) अन्य सदस्यों के साथ विजेता घोषित करने में निर्णायक थे।

चित्र
डीपीएस राजकोट ने इंटर स्कूल प्रतियोगिताओं की मेजबानी की।

जूनियर वार्षिक दिवस समारोह – रुक्मिणी देवी पब्लिक स्कूल, पीतमपुरा

हाल ही में वार्षिक दिवस ***रुक्मिणी देवी पब्लिक स्कूल***, *पीतमपुरा* में जूनियर और पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया।

मुख्य अतिथि ने माता–पिता के साथ अपने भारत भ्रमण के अनुभवों को बांटा। कार्यक्रम का समापन प्रधानाध्यापिका द्वारा आभारोक्ति और विद्यालय गान तथा राष्ट्रीय गीत से हुआ।

चित्र
जूनियर स्कूल की बालिकाओं द्वारा समूह नृत्य।

डीएवी सेंटीनरी पब्लिक स्कूल, जींद में युवा बहादुरों को सम्मान

"हमारे कार्य हमारी नियति वैसे ही निर्धारित करते हैं जैसे हम अपने काम।"

जॉर्ज एलिएट

डीएवी सेंटीनरी पब्लिक स्कूल के मनीष बंसल ने अपने घर में अपराध के उद्देश्य से घुस आने वाले चार हथियारबंद चोरों से अपने परिवार की रक्षा करने में आदर्श साहस और धैर्य दिखाया। दो चोर घर के बाहर खड़े थे और दो चुपचाप घर में प्रवेश कर गए। एक ने उसके पिता पर गोलियां चलाई और दूसरे ने उसके भाई पर कटार से वार किया। मनीष ने कटार का फाल अपने हाथ से पकड़ लिया जिसके कारण उसकी हथेली पर गहरा घाव आया जिससे बहुत खून बहा। उसके चेहरे पर भी चोटें आईं। अंततः उसने चोरी के प्रयास को रोका और अपने जीवन को जोखिम में डाल कर चोर पकड़े।

उसकी अदम्य इच्छा और बेजोड़ साहस को सराहते हुए **भारत की राष्ट्रपति माननीय श्रीमती प्रतिभा सिंह पाटिल,** ने उसे राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार प्रदान किया। मनीष बंसल गणतंत्र दिवस 2009 में राजपथ पर उपस्थित बहादुर बच्चों में से एक था।

चित्र
मनीष के बहादुरी पुरस्कार प्रदान करती माननीय प्रतिभा पाटिल, भारत की राष्ट्रपति

डीएवी चंद्रशेखरपुर में पूर्व विद्यार्थी सम्मेलन

डीएवी पब्लिक स्कूल, चंद्रशेखरपुर, भुवनेश्वर में हाल ही में वार्षिक पूर्व विद्यार्थी सम्मेलन का आयोजन किया गया। पूर्व विद्यार्थियों और शिक्षकों के मध्य मैत्रीय क्रिकेट मैच कार्यक्रम का भाग रहा। प्रधानाचार्य, डॉ. के. सी. सतपती ने सभा को संबोधित किया और प्रोत्साहित किया कि उन्नति करें और निष्ठा पूर्वक राष्ट्र की सेवा करें तथा उसके विकास में व्यावहारिक योगदान दें। क्रिकेट प्रेमी और पूर्व विद्यार्थी श्री प्रगन्या पी. ओझा ने भी पूर्व विद्यार्थी सम्मेलन में भाग लिया तथा विद्यार्थियों के साथ अपने अनुभव बांटे।

चित्र
डीएवी चंद्रशेखरपुर के पूर्व विद्यार्थी पूर्व विद्यार्थी सम्मेलन में प्रधानाचार्य से भेंट करते हुए

ऐश्वर्य पब्लिक स्कूल, कोल्लाम में वार्षिक दिवस उत्सव

ऐश्वर्य पब्लिक स्कूल कालकोडे ने फरवरी में अपना सातवां वार्षिक दिवस मनाया। उत्सव का आरंभ वरिष्ठ प्रधानाचार्य डॉ. जी. मनूलाल द्वारा दीप प्रज्जवलित करने से हुआ।

स्वागत भाषण के पश्चात प्रधानाचार्य श्री के.सी. बालकृष्णन ने वार्षिक रिपोर्ट पढ़कर सुनाई। सहोदय राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के विजेता और एआईएसएसई के सर्वोच्च अंक पाने वाले शिवा आर. – कक्षा 11वीं, लक्ष्मी वी.एस. कक्षा 11वीं, भाग्य भास्कर को स्मृतियां और नकद पुरस्कार दिए गए। वरिष्ठ विद्यार्थियों के सांस्कृतिक कार्यक्रम में, गायन, ड्रामा, लघुनाटक, नृत्य देशभक्ति के गीत लोक नृत्य, शास्त्रीय नृत्य, सस्वर पाठ आदि दर्शनीय थे। आभारोक्ति के शब्द शिवा आर. कक्षा 11वीं द्वारा कहे गए। कार्यक्रम का अंत राष्ट्रीय गान से संपन्न हुआ।

चित्र
ऐश्वर्य पब्लिक स्कूल के वार्षिक दिवस समारोह में सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत समूह नृत्य प्रस्तुत किया गया।

सीटीएसई 2009 में डी.ए.वी डाबवाली का जगमगाता प्रदर्शन

चिल्ड्रन मेमोरियल डी.ए.वी. सीनियर सेकण्डरी पब्लिक स्कूल एम. डाबवाली के मनीष गर्ग, हर्षिता शर्मा और श्वेता कॉमर्स टेलेंट सर्च फाउंडेशन, लुधियाना द्वारा आयोजित तीसरा कॉमर्स टेलेंट सर्च इग्ज़ामिनेशन में क्रमशः I, II, III, कॉमर्स कक्षा 11वीं और 12वीं से 31 विद्यार्थियों ने भी उपरोक्त परीक्षा में प्रशंसनीय प्रमाण पत्र प्राप्त किए।

विद्यालय की प्रधानाचार्य, सरिता गोयल ने विद्यार्थियों और कॉमर्स आचार्य भाग्य लक्ष्मी को उनके प्रयासों के लिए बधाई दी।

चित्र
तृतीय कॉमर्स टेलेंट सर्च परीक्षा के विजेता अपनी शिक्षिकाओं के साथ।

विद्यालयों से समाचार

उदय पब्लिक स्कूल, फैज़ाबाद का स्थापना दिवस

उदय पब्लिक स्कूल ने अपना नौवां वार्षिक समारोह 23 फरवरी, 2009 को मनाया। कार्यक्रम में सांस्कृतिक विरासत और विज्ञान के आधुनिक युग में शैक्षिक विकास पर प्रदर्शन किए गए। विद्यार्थियों ने कार्यक्रम के हर भाग में सक्रिय भाग लिया जो कार्यक्रम को एंकर करने से लेकर विभिन्न प्रदर्शनों तक थे। विद्यालय की प्रधानाचार्य, श्रीमती मधु त्रिपाठी ने विद्यालय की वार्षिक रिपोर्ट पढ़कर सुनाई। अनेक प्रतिष्ठित जन और प्रशासनिक अधिकारियों ने विद्यार्थियों को पुरस्कार और प्रमाणपत्रों का वितरण किया।

चित्र
उदय पब्लिक स्कूल में सांस्कृतिक कार्यक्रम में सामूहिक प्रदर्शन में विद्यार्थी

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, बल्लभगढ़ का कंप्यूटर ज्ञानी होना

शिक्षा ग्रहण करने और शिक्षा देने में आधुनिक तकनीक के लाभ उठाने के लिए ***डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, बल्लभगढ़*** ने शिक्षा देने और शिक्षा ग्रहण करने में कंप्यूटर का सदुपयोग आरंभ कर दिया है।

शब्दों और चित्रों के सुंदर पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन की सहायता से युवा शिक्षार्थियों को अंग्रेजी भाषा सिखाई जाती है। विद्यार्थियों के लिए सहायक क्रियाएं और उच्चारित शब्द सीखना एक मनोरंजन साथ और संभवतः इससे कठिन पुस्तक अध्ययन आसान हो गया है। बच्चों को वातावरण सुग्राही बनाने के लिए स्लाइड्स सर्वाधिक सक्षम सहायता बन जाती हैं। प्राणी जगत, वनस्पति, नाना प्रकार के आवास और सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय पर्व का ज्ञान भी शानदार रंगों से पूर्व प्रदर्शनों द्वारा प्रसारित किया गया।

चित्र
कंप्यूटर की सहायता से क्रिया का ज्ञान प्रदर्शित करती शिक्षिका

सेंट्रल रेलवे उच्चतर माध्यमिक स्कूल भुसावल का संदेश

सेंट्रल रेलवे स्कूल, भुसावल सेनबोसेक के माध्यम से अन्य विद्यालयों तक अपना संदेश पहुंचाना चाहता है जो यहां दिया जाता है। निम्नलिखित गद्यांश विद्यालय के विचार प्रकट करते हैं ....

किसी पिता ने अपने पुत्र से कहा कि वह शॉपिंग कार्ट को जिसमें उन्होंने सामान उठाया था, यथास्थान रख कर आए। पुत्र ने विरोध करते हुए उत्तर दिया ''ओह पापा! हर जगह तो कार्ट हैं। कौन इन्हें वापस रखकर आता है। इसके लिए ही तो उनके पास वेतन पाने वाले कर्मी है।''

वे विवाद कर ही रहे थे कि माताजी ने हस्तक्षेप किया, ''हे भगवान ! यह कोई बड़ी बात नहीं है। चलो अब चलना चाहिए।''

पिताजी हार मानने ही वाले थे कि उन्होंने एक वृद्ध दंपत्ति को देखा कि वे अपनी कार्ट वापस रखने जा रहे थे। क्षणभर पश्चात उन्होंने कहा, ''पुत्र, संसार में मनुष्य दो प्रकार के होते हैं, एक वे जो अपनी

कार्ट वापस रख आते हैं और दूसरे वे जो नहीं रखते। हम उनमें से है जो कार्ट यथास्थान रख कर आते हैं अब जाओ और कार्ट रखकर आ जाओ !''

स्पष्ट है कि यह कहानी ग्रासरी कार्ट से कहीं अधिक गूढ़ है। यह संसार में उचित काम करने की है, उस संसार में जो तर्क और बहानों को प्रोत्साहन देता है और सदाचार के साधारण कार्यों का मान घटाता है या उन्हें तुच्छ जानता है। मेरे विचार में इसे यों भी कह सकते हैं, वे जिनमें वांछित कार्य करने का सद्भाव है और दूसरे वे जो उस काम को नहीं करने का तर्क खोजते हैं।

चरित्रवान मनुष्य उचित काम करते हैं चाहे कोई करें या न करें, इसलिए नहीं कि उनके विचार ये वे संसार को बदलना चाहते हैं परंतु इसलिए कि वे संसार द्वारा बदले जाना नहीं चाहते।

कैरियर काउंसलिंग प्रोग्राम, के. आर. डीएवी पब्लिक स्कूल, सफिदोन

विद्यालय से शिक्षा पूरी कर लेने के पश्चात विद्यार्थियों को कैरियर चयन में उचित मार्गदर्शन और परामर्श देने के लिए **केआर डीएवी पब्लिक स्कूल सफिदोन**, ने कैरियर काउंसलिंग कार्यक्रम का आयोजन किया। डॉ. राम बाबू, प्रधानाचार्य और डॉ. सेल्वराज, प्राचार्य–टीडीटीआर डीएवी इंस्टीट्यूट फिजियोथेरेपी एंड रिहेबिलिटेशन, यमुना नगर; श्रीमती रजनी शर्मा, परामर्शदाता और कु. सुधा, व्याख्याता–डीएवी इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, फरीदाबाद इस कार्यक्रम के प्रबुद्ध व्यक्ति थे। श्री, एन. एच. खन्ना, स्कूल के प्रधानाचार्य ने विशिष्ठ अतिथि गण का स्वागत किया और परिचय कराया।

डॉ. सेल्वराज ने प्रबंधन अध्ययन के असीम अवसरों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि भौतिक चिकित्सा (फिज़ियो थैरेपी) कमर–दर्द, मस्तिष्क की बीमारियों, जोड़ों के दर्द तथा अन्य शारीरिक समस्याओं के उपचार में अत्यन्त प्रभावी होती है।

श्रीमती रजनी शर्मा ने प्रबंधन पाठ्यक्रमों के क्षेत्र में उपलब्ध अवसरों की जानकारी विद्यार्थियों को दी। कु. सुधा ने विभिन्न प्रबंधन पाठ्यक्रमों जैसे बीबीए, बीसीए., सीए, सीएस आदि की जानकारी प्रदान की। विद्यार्थी और माता–पिता ने परामर्शदाताओं से संपर्क किया और विभिन्न अध्ययन पाठ्यक्रमों के बारे में अपनी शंकाएं दूर की। यह कार्यक्रम उपयोगी, जानकारी से पूर्ण, सहायक और सफल रहा। प्रधानाचार्य खन्ना ने परामर्शदाताओं को आभार व्यक्त किया।

चित्र
केआर डीएवी पब्लिक स्कूल में आयोजित कैरियर काउंसलिंग सेमिनार में एक संसाधन व्यक्ति विद्यालय अध्ययन के पश्चात जीविकोपार्जन के विभिन्न विकल्पों की जानकारी देते हुए।

डी.ए.वी पब्लिक स्कूल, बल्लभगढ़ राष्ट्रीय नेटबॉल में सर्वोत्तम

छतरसाल स्टेडियम, नई दिल्ली में आयोजित ***राष्ट्रीय नेट बॉल चैम्पियनशिप*** में ***डीएवी, बल्लभगढ़*** के तीन विद्यार्थी प्रगति सिंह, रूही और कोमल ने मध्य प्रदेश की टीम को हराकर तीसरा स्थान प्राप्त किया। विजेता टीम के प्रत्येक विद्यार्थी को हरियाणा राज्य खेल प्राधिकरण द्वारा 5000/– रुपए का नकद पुरस्कार प्रदान किया गया। विद्यालय की प्रधानअध्यापिका श्रीमती वी. के. चोपड़ा ने अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए विद्यार्थियों और उनके शिक्षक श्री विवेक पन्नू और श्री विकास हुडा – खेल विभाग के प्रमुख की सराहना की।

चित्र
डीएवी पब्लिक स्कूल, बल्लभगढ़ नेशनल नेटबॉल विजेता अपने प्रशिक्षक के साथ।

पठानिया पब्लिक स्कूल, रोहतक सम्मानित

पठानिया पब्लिक स्कूल, रोहतक ने अपने विद्यार्थी मनीषा पटलन, कक्षा 10वीं को **राष्ट्रीय स्तर ऑयल इंडिया गोल्डन जुबली नेशनल निबंध लेखन प्रतियोगिता** में प्रथम स्थान प्राप्त करने के उपलक्ष्य में सम्मानित किया। प्रतियोगिता का शीर्षक था, **''माई आइडिया ऑफ बीइंग इन इंडियन''** (भारतीय होने के बारे में मेरे विचार) पुरस्कार रुपए 20,000/– नकद और प्रमाणपत्र।

प्रधानाचार्या श्रीमती वर्षा रानी ने उभरते लेखकों को बधाई दी।

दयानंद पब्लिक स्कूल, बीकानेर – वार्षिक दिवस उत्सव

दयानंद पब्लिक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बीकानेर ने अपना वार्षिक उत्सव बड़ी धूम–धाम से मनाया। उत्सव का विषय था, ***''सात युग – सात अवस्थाएं,''*** ''बच्चों ने दिवस की विशिष्टता में रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया। ईश वंदना और विषय गान – ***''आकाश के उस पार भी आकाश है ....''*** से कार्यक्रम का आरंभ हुआ। ***''वी वॉन्ट पीस'' (हमें शांति चाहिए)*** शीर्षक कार्यक्रम में आतंकवाद के विरुद्ध लड़ाई का सजीव वर्णन और मुंबई में आतंकवाद से पीड़ितों को श्रद्धांजली अर्पण इसके मुख्य आकर्षण थे। विलियम शेक्सपीयर की कविता ***''सेवन एजेज़ (सात युग)''*** से लिए गए इस शीर्षक का विवरण एक विद्यार्थी ने अपने शब्दों में दिया। शीर्षक का अभिप्राय है – मानव जीवन एक नाटक है जिसमें पुरुष एवं स्त्रियां अपनी भूमिका निभाते हैं और अंत में दुनिया से कूच कर जाते हैं। मनुष्य के जीवन की अवस्थाएं सात होती हैं। पहली है, शिशु अवस्था, स्कूल का विद्यार्थी – प्रारंभिक किशोरावस्था; उत्तर किशोरावस्था; धनलोलुप, वयस्क बुद्धिमान मनुष्य, वृद्धावस्था और अंत में वयोवृद्ध अवस्था। बच्चों ने कविता का पाठ किया और उस एक लघु नाटक का प्रदर्शन भी किया। प्रधानाचार्य अलका डॉली पाठक ने वार्षिक रिपोर्ट पढ़कर सुनाई। मुख्य अतिथि ने बच्चों को शैक्षिक और पाठ्येत्तर उपलब्धियों के लिए ट्रॉफी और प्रमाणपत्र प्रदान किए।

चित्र
दयानंद पब्लिक में प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थी पारंपरिक रूप से मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए।

डीएवी पब्लिक स्कूल पानीपत – प्रतिष्ठान समारोह

24 अप्रैल, 2009 **डीएवी पब्लिक स्कूल, पानीपत** ने अपने स्कूल के प्रीफैक्ट दल के शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया।

नव अभ्यर्पित उत्तरदायित्व को वहन करने के संकल्प में दल के सदस्यों के चेहरों पर आत्मविश्वास की मुस्कान थी। दल ने चयन समिति का आभार व्यक्त किया कि उन्होंने उन पर भरोसा रखा है।

दल के सदस्यों ने औपचारिक शपथ ग्रहण की कि वे उन्हें अभ्यर्पित उत्तरदायित्व निष्ठापूर्वक एवं योग्यता से निभाएंगे।

इस आयोजन का उद्देश्य छात्रों के बीच नेतृत्व की विशेषता और जिम्मेदारी का अहसास तथा आत्मविश्वास बढ़ना था।

चित्र
डीएवी पब्लिक स्कूल, पानीपत के प्रीफैक्ट प्रतिष्ठान समारोह में शपथ ग्रहण करते हुए

महर्षि पंतजलि विद्या मंदिर, इलाहाबाद वार्षिक उत्सव

महर्षि पंतजलि विद्या मंदिर, इलाहाबाद में वार्षिक उत्सव सांस्कृतिक कार्यक्रमों की विविधता द्वारा शांति के प्राचीन दर्शन को आधुनिक समाज में प्रदर्शित करते हुए **महर्षि पंतजलि विद्या मंदिर, इलाहाबाद** ने अपना वार्षिक उत्सव मनाया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम का आरंभ, "**अहम् ब्रहमास्मि**" के आव्हान से हुआ जिसका विचार यह संचारित करना था कि आज के युग में असीमित स्वार्थ परायणता समस्त जीवित प्राणियों के साथ एकता बनाने के ज्ञान से दूर की जा सकती है। अगले दृश्य में जो गीत गाया गया वह धर्म निरपेक्षता, सहनशीलता और शांति के पुनः स्थापना की याचना से पूर्ण था। इससे श्रोतागण को प्रेरणा मिली कि सर्वव्यापी भ्रातृभाव के महान सिद्धांत को बढ़ावा दें और अपनाएं।

चित्र
महर्षि पंतजलि विद्यापीठ, इलाहाबाद के विद्यार्थी वार्षिक उत्सव में "**शांति सम्मेलन**" की स्पर्धा में

बैनियन ट्री स्कूल दिल्ली को, ब्रिटिश काउंसिल द्वारा इंटरनेशनल स्कूल अवार्ड

बैनियन ट्री स्कूल के निदेशक, कर्मीगण और विद्यार्थीगण इंटरनेशनल स्कूल अवार्ड प्राप्ति पर अत्यंत हर्षित एवं सम्मानित हुए। यह विद्यालय उन 28 विद्यालयों में से एक था जिन्होंने 2007–2008 में इस अवार्ड के लिए योग्यता प्राप्त की थी।

यह शिक्षण और शिक्षा ग्रहण करने का उत्साह, अग्रिम पीढ़ी को तैयार करने हेतु सर्वांगीण विकास के विचार के प्रति समर्पण ही था जिसने विद्यालय को शिक्षा के विस्तृत क्षेत्र की खोज में अग्रसर होने के लिए प्रेरित किया।

प्राथमिक कक्षाओं में तो आनंद की सीमा ही नहीं थी जब अन्य राष्ट्रों के माता–पिता ने आगे बढ़कर संगीत, संस्कृति, परिधान और प्रथाओं का प्रदर्शन किया।

माध्यमिक विद्यालय ने अनेकता से लाभ उठाते हुए सफल एवं सहकारी शिक्षण पर ध्यान केंद्रित किया। उनकी समझ में ऐसी बहुविमा शिक्षा ही परिपूर्ण शिक्षा है।

ऊंची कक्षाएं शिक्षा को अधिक ऊंचे स्तर पर ले गई जहां वैश्विक भविष्य जैसे अंतरराष्ट्रीय शांति, राजनीति, विचार व्यक्त करने की स्वतंत्रता, व्यापार एवं वाणिज्य, एड्स और पर्यावरण पर विचार के केंद्रित किए गए।

चित्र
बैनियन ट्री स्कूल की समन्वयक ने विद्यालय की ओर से, निदेशक – ब्रिटिश काउंसिल, दक्षिण भारत से अवार्ड ग्रहण किया।

अभिनव पब्लिक स्कूल, पीतमपुरा – प्रतिष्ठान समारोह

शुक्रवार, 8 मई, 2009 ***अभिनव पब्लिक स्कूल, पीतमपुरा*** ने अपना प्रतिष्ठान समारोह संपन्न किया। विद्यालय द्वारा आयोजित चुनाव में विद्यार्थियों ने बड़े उत्साह से अपने स्कूल हेड बॉय, वाइस हेड बॉय और हेड गर्ल का चुनाव किया। मतगणना विद्यार्थियों के समक्ष की गई जिससे कि परिणामों की निष्पक्ष घोषणा की जाए। हाउस केप्टन और वाइस केप्टन के चुनाव भी किए गए। सब पदाधिकारियों ने शपथ ग्रहण की कि वे संस्थान की सेवा और अपना उत्तरदायित्व दिल एवं सत्य निष्ठा से वहन करेंगे।

चित्र
अभिनव पब्लिक स्कूल, पीतमपुरा के नव निर्वाचित मॉनीटर, प्रतिष्ठान समारोह में शपथ ग्रहण करते हुए

डीएवी पब्लिक स्कूल, फरीदाबाद का संगीत चयन रोमांच

डीएवी पब्लिक स्कूल, सेक्टर 14, फरीदाबाद की कक्षा दसवीं के विद्यार्थी तेजिंदर सिंह ने संगीत जगत में ऊंचाइयों को छुआ है। सुप्रसिद्ध संगम कला ग्रुप, दिल्ली द्वारा आयोजित 32वें ऑल इंडिया नेशनल टेलेंट हंट – सुरतंरग – 27 अप्रैल, 2009 में तेजिंदर सिंह को राष्ट्रीय स्तर पर सर्वोत्तम गायक का पुरस्कार मिला।

चित्र
डीएवी पब्लिक स्कूल, फरीदाबाद के प्रधानाचार्य **तेजिंदर सिंह, कक्षा दसवीं,** के साथ

ईडन पब्लिक स्कूल, वढ़ूर, केरल

विद्यार्थियों में सर्वांगीण विकास और सर्जन शक्ति को बढ़ावा देने के लिए ***ईडन पब्लिक स्कूल, वढ़ूर,*** केरल ने विचार व्यक्त किया कि लघु सिनेमा का विकास किया जाए जिसमें विद्यार्थियों द्वारा योजना एवं क्रियान्वयन आदि कार्य स्वयं ही करने थे।

इस विचार के पीछे उद्देश्य यह है कि विद्यार्थियों में उत्तरदायित्व का बोध निर्विष्ट किया जाए और वर्तमान मुद्दों के प्रति जागरूकता लाई जाए।

विद्यार्थियों ने दो लघु वृत्तचित्र फिल्माए। यह फिल्में उस समय बनाई गई थीं जब केरल में चिकनगुनिया का प्रकोप था। इसमें चिकनगुनिया के निवारण का संदेश निहित था।

चित्र
ईडन पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों द्वारा तैयार मूवी, –'**लास्ट लीफ**' का दृश्य

- **द लास्ट लीफ**

यह फिल्म ओ. हेनरी की कथा, **''द लास्ट लीफ''** पर आधारित है। ''द लास्ट लीफ'' का लेखनकाल निमोनिया के प्रकोप से ग्रस्त अमेरिका का युग था। प्रसिद्ध फिल्म निर्देशक श्री जय राज के मार्गदर्शन में विद्यार्थियों में समस्त तकनीकी उपकरणों को स्वयं प्रयोग में लिया था। फिल्म के पात्र थे, विद्यार्थी, शिक्षक तथा माता–पिता और स्थान या विद्यालय परिसर, तकनीकी पक्ष जैसे निर्देशन, कैमरा, कला निर्देशन, पटकथा, संगीत, संगीत निर्देशन आदि सब विद्यार्थियों द्वारा ही निभाए गए।

- **पैराडाइस लॉस्ट**

  यह कहानी एक चित्रण है कि परमेश्वर की अपनी दुनिया कैसे शैतान का राज्य बन गई। जहां तक स्वच्छता और शिक्षा का प्रश्न है हम पिछले अनेक वर्षों से पिछड़ते जा रहे हैं। ***परमेश्वर का अपना वतन*** केरल सामाजिक शुद्धता के अभाव में औद्योगिक मल और अपशिष्ट वस्तुओं का कूड़ेदान बन गया है। यहां तक कि शिक्षित वर्ग भी सार्वजनिक स्थानों में कूड़ा फेंकना और धूमपान करना अपना सौभाग्य एवं जन्म सिद्ध अधिकार समझते हैं।

  चित्र
  ईडन पब्लिक स्कूल द्वारा बनाए गए चलचित्र, पेराडाइस लॉस्ट का एक दृश्य।

बीआरजेडी पब्लिक स्कूल भोरूग्राम द्वारा कंप्यूटर शिक्षण के लिए ग्रामीण विद्यालय का अपनाया जाना

बीआरजेडी पब्लिक स्कूल, भोरूग्राम ने एक ग्रामीण विद्यालय (चेनपुरा बाड़ा) का अधिग्रहण किया है विद्यार्थियों और शिक्षकों में कंप्यूटर दक्षता को विकसित किया जाए। विद्यालय से कंप्यूटर विभाग के सदस्य वहां नियमित रूप से जाते रहते हैं कि वे अपनी कंप्यूटर शिक्षा को आधुनिक जानकारियों से अवगत कराते रहें।

विद्यालय इस ग्रामीण विद्यालय को कंप्यूटर के साथ प्रिंटर्स भी उपलब्ध कराता है। वे वहां के शिक्षकों को भी कंप्यूटर प्रशिक्षण प्रदान करते रहते हैं जिससे कि वे अपने विद्यालय के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को अधिक से अधिक कंप्यूटर जानकारियां प्रदान कर पाएं।

विद्यालय की एक और सेवा है कि वह उस ग्राम के कक्षा 8वीं और कक्षा 11वीं के उत्तीर्ण विद्यार्थियों को चुनकर उनके लिए कंप्यूटर और कंप्यूटर भाषा (रोजगार निपुणता) का प्रशिक्षण प्रदान करें जिससे कि वे अपनी जीविका कमाने में सक्षम हो जाएं।

लिटिल वर्ल्ड स्कूल, तिलवाड़ा, जबलपुर द्वारा विज्ञान एक्सप्रेस की यात्रा

'विज्ञान एक्सप्रेस' रेलगाड़ी पर साइंस प्रदर्शनी की यात्रा 30 नवंबर 2008 से 30 मई 2009 के मध्य 1–4 अप्रैल 2009 मदन महल जबलपुर में ठहरी। इस रेलगाड़ी में 16 डिब्बों में विज्ञान और तकनीक के अनोखे अनुसंधान का प्रदर्शन है। इस प्रदर्शन का प्रयास यह है कि आधुनिक अनुसंधान को प्रयोगशाला से बाहर निकालकर यह प्रकट किया जाए कि दैनिक जीवन में विज्ञान कैसा प्रासंगिक है। वे विद्यार्थियों में विज्ञान संबंधित मानसिकता जागृत करना चाहते हैं और उन्हें प्रेरित करने का प्रयास करते हैं कि विज्ञान में अपनी वृत्ति की खोज करें। यह **विज्ञान एक्सप्रेस** पूर्वकालिक भारत–जर्मनी

सहकारी उपक्रम जिससे भारत के माननीय प्रधानमंत्री, डॉ. मनमोहन सिंह और जर्मनी के चांसलर डॉ. एंजेला मार्कल ने हरी झंडी दिखाई थी, उसका आधुनिक रूप है।

इस उपक्रम को सहयोग प्रदान करने में विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, भारत नेशनल काउंसिल फॉर साइंस एंड टेक्नोलॉजी कम्युनिकेशन (एनसीएसटीसी) भारत सरकार, विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय, फेडेरल मिनिस्ट्री ऑफ एजुकेशन एंड रिसर्च – जर्मनी, मैक्स प्लेंक सोसायटी – जर्मनी और विक्रम ए. साराभाई कम्युनिटी साइंस सेंटर (वीएएससीएससी) का हाथ रहा है।

लिटल वर्ल्ड स्कूल के 250 से अधिक विद्यार्थियों ने विज्ञान एक्सप्रेस का भ्रमण किया। इसमें 300 से अधिक बृहत विजुअल इमेजेज़, 150 वीडियो क्लिपिंग्स और मल्टीमीडिया प्रदर्शन थे। प्रत्येक डिब्बे का अलग–अलग शीर्षक था और जटिल प्रश्न जैसे नैनोटेक्नोलॉजी, बायोटेक्नोलॉजी, लाइफ साइंस, इकोलॉजी, फिजिक्स, और एस्ट्रोलॉजी आदि के उत्तर देने का प्रयास किया गया था।

रेलगाड़ी में विक्रम ए साराभाई कम्युनिटी साइंस सेंटर द्वारा विकसित ***'द जाय ऑफ साइंस लेब'*** भी उपस्थिति था। जॉय ऑफ साइंस लेब में 'हेन्ड्स ऑन एक्टीविटीज़ में भाग लेने के लिए कि विज्ञान में उनकी रुचि का जायज़ा लिया जाए और इस क्षेत्र में काम करने की विधि क्या है, 60 विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए गए।

समर साइंस प्रोग्राम से आर्मी पब्लिक स्कूल पुणे के विद्यार्थी के अनुभव

आर्मी पब्लिक स्कूल, पुणे के विद्यार्थी, अभिरुद्ध बापट ने इस ग्रीष्मकालीन विज्ञान शिविर में सहभागिता की। यह अंतरराष्ट्रीय आयोजन उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की विज्ञान में रुचि के लिए तैयार किया गया था। वह अपने अनुभव यहां दे रहा है ....

मैंने सबसे पहले समर साइंस प्रोग्राम के बारे में दिसंबर 2007 में सुना था और मुझे ऐसी अनुभूति हुई कि मुझ जैसे विज्ञान के उत्साही व्यक्ति के लिए यह एक सिद्ध कार्यक्रम है। मैंने वेबसाइट पर खोज की और पाया कि 2008 में कक्षा ग्यारह उत्तीर्ण करने वाले 36 विद्यार्थियों का इस कार्यक्रम के लिए चयन किया जाएगा और यह शिविर अमेरिका के कैलिफोर्निया शहर में ओजाए नाम स्थान पर आयोजित किया जाएगा। इस कार्यक्रम को प्रखर शैक्षिक रूप प्रदान किया गया है जिसमें भौतिक विज्ञान, गणित, खगोलशास्त्र और कंप्यूटर प्रोग्रामिंग की उच्च शिक्षा प्रदान की जाएगी जिसका संपूर्ण ज्ञान उल्काओं की कक्षा के उपक्रम को तैयार करने में किया जाएगा। इस उपक्रम का नाम निर्धारित किया गया, **"ऑरबिट डिटरमिनेशन प्रोजेक्ट"**।

चित्र
आर्मी स्कूल पुणे का विद्यार्थी, अनिरुद्ध बापट समर साइंस प्रोग्राम के अपने साथियों के समूह में।

मार्च 2008 में मुझे अपने चयन की जानकारी प्राप्त हुई और मैं जून 22, 2008 को लॉस एंजेल्स पहुंचा। कार्यक्रम के प्रथम सप्ताह हम 36 विद्यार्थियों को उपक्रम में आवश्यक गणित, भौतिक शास्त्र और खगोल शास्त्र का शिक्षण प्रदान किया गया। हमें कंप्यूटर की भाषा, 'पायथन' भी सिखाई गई जिसमें हम सौर मंडल में विचरण करती किसी उल्का की गतिविधि का प्रोग्राम लिखना होगा।

समर साइंस प्रोग्राम शिविर में अति शक्तिशाली दूरबीन लगी थी जिसके द्वारा हम उल्काओं का निरीक्षण कर सकते थे। सप्ताह में दो बार, मध्यरात्रि दूरबीन द्वारा चित्र लिए जाते थे कि हम उल्काओं की पहचान करें। इसके अतिरिक्त हमने एक ऐसा कंप्यूटर प्रोग्राम लिखने का कार्य भी किया जो उल्का की प्रत्यक्ष स्थिति के कक्ष का अनुकरण करें।

हमें एक दिन ''नासा'' की जेट प्रोपलशन लेबोरेटरी भी ले जाया गया जहां अमेरिका के अंतरिक्ष अभियानों का निरूपण किया जाता है। अगली बार हमें कैलिफोर्निया इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (कैलटेक) ले जाया गया।

समर साइंस प्रोग्राम ने मुझे ज्ञानवर्धन के आनंद हेतु विज्ञान की गहराइयों में सोचने पर बाध्य किया, परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए अंक प्राप्त करने के लिए ही नहीं। मुझे यह आज के प्रतिस्पर्धा के वातावरण के सर्वथा विपरीत लगा जहां आईआईटीजेईई; एआईईईई; एआईपीएमटी आदि जहां केवल स्थान ही देखा जाता है। इस कारण मेरे विचार में, वे सब जो वास्तव में विज्ञान में रुचि रखते हैं उन्हें समर साइंस प्रोग्राम या इसके तुल्य अन्य कार्यक्रम में अवश्य भाग लेना चाहिए।

स्टेप बॉय स्टेप हाई स्कूल के बच्चों द्वारा नशे के विरुद्ध जागरूकता अभियान

25 नवंबर 2008 को स्टेप बॉय स्टेप स्कूल के बच्चों ने नशे के विरुद्ध जागृति आंदोलन किया। उन्होंने 'ड्रग्स' के बारे में और उसके द्वारा किशोरों को मानसिक मनोवैज्ञानिक तथा शारीरिक हानियों के बारे में समझाया।

उन्होंने उन विषयों पर भी चर्चा की जिनके कारण मनुष्य नशे का सेवन आरंभ करता है और उससे बचने के उपाय भी सुझाए। पावर प्वाइंट के माध्यम से उन्होंने समझाया कि लगभग सब व्यसनी आरंभ में एक बार स्वाद लेने से आरंभ करते हैं जिनके परिणाम अंत में घातक होते हैं।

चित्र
संसाधन व्यक्ति द्वारा नशे को न कहने के कुछ सुझाव

> किसी काम को करने में या उसकी सहायता में अनुशासन क्षमता प्रदान करता है। अनुशासन द्वारा शिक्षक और बच्चे दोनों को स्वतंत्रता, चुनाव तथा स्वाधीनता प्राप्त होती है। यह आवश्यक है कि बच्चे ही नियम निर्धारण करें जिससे कि वे उसमें निहित तर्क को और उसके पालन को सुनिश्चित करने के उत्तरदायित्व को समझें। इस प्रकार वे आत्म अनुशासन और निर्णय लेने में आवश्यक निपुणता के लिए नियम बनाने की प्रक्रिया तथा जनतंत्र की कार्यविधि को भी समझेंगे।
>
> एन.सी.एफ. 2005

सहोदय गतिविधियां

डी.ए.वी. स्कूल, पटियाला में आयोजित विश्व पृथ्वी दिवस

इको क्लब, डी.ए.वी पब्लिक स्कूल, पटियाला ने **वर्ल्ड अर्थ डे** के उपलक्ष्य में पटियाला सहोदय कॉम्प्लेक्स तथा ऑल इंडिया ह्यूमन राइट्स एसोसिएशन, पटियाला के सौजन्य से इंटर स्कूल ऑन द स्पॉट पेंटिंग कॉम्पीटिशन का आयोजन किया। जन साधारण को जागृत करने के लिए, **''सेव अर्थ''**, **''वाटर कन्ज़रवेशन''**, **''ग्लोबल वार्मिंग''** पर पटियाला सहोदय स्कूल कॉम्प्लेक्स के विभिन्न विद्यालयों से 40 विद्यार्थियों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया। प्रधानाध्यापक श्री एस. आर. प्रभाकर ने अतिथियों का स्वागत किया और उनमें भाषण में सहभागियों से आग्रह किया गया कि वे ऊर्जा बचाएं। प्रदूषण के कुप्रभावों पर सहभागियों को वृत्तचित्र भी दिखाया गया। उनका संदेश था कि प्रदूषण पर नियंत्रण लाने के तात्कालिक उपाय किए जाएं। डीएवी पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों ने '**ग्लोबल वार्मिंग** और **सेव अर्थ फ्रॉम पोल्युशन**' पर क्रमशः अपने विचार प्रस्तुत किए।

चित्र
पटियाला सहोदय कॉम्प्लेक्स के अधीन आयोजित इंटर स्कूल ऑन द स्पॉट पेटिंग कम्पीटिशन में भाग लेते विद्यार्थी

स्वामी संतदास पब्लिक स्कूल, फगवाड़ा – साइंस क्विज़ कंपीटिशन

जुलाई 26, 2008 – ***स्वामी संतदास पब्लिक स्कूल, फगवाड़ा*** ने सहोदय कॉम्प्लेक्स इंटर स्कूल साइंस क्विज़ कॉम्पीटिशन की मेज़बानी की। प्रतियोगिता में विभिन्न विद्यालयों से ग्यारह दलों ने भाग लिया जिसमें एम.जी.एन. कपूरथला ने ट्रॉफी जीती।

चित्र
सहोदय कॉम्प्लेक्स इंटर स्कूल साइंस क्विज़ कॉम्पीटिशन की विजेता टीम–एमजीएन स्कूल, कपूरथला

सुरक्षित विद्यालय सुरक्षित भारत पर नॉर्थ–वेस्ट दिल्ली सहोदय स्कूल कॉम्प्लेक्स का वार्षिक प्रधानाचार्य सम्मेलन – 2009

सहोदया कॉम्प्लेक्स के उत्तर–पश्चिमी दिल्ली क्षेत्र प्रधानाचार्यों का वार्षिक सम्मेलन हाल ही में संपन्न हुआ। इस सम्मेलन का विषय था ***''सुरक्षित विद्यालय सुरक्षित भारत''*** इस सम्मेलन का उद्देश्य था कि किसी भी आधुनिक शहरी विद्यालय के सामने आने वाले सुरक्षा के संकटों के प्रति जागरूकता लाई जाए और उन विधियों की खोज की जाए जिनमें उपस्थित संसाधनों का अभिकल्प उपयोग अंशस्वामियों द्वारा संकटों से लड़ने के लिए किया जाए। सम्मेलन का उद्देश्य यह नहीं था कि मात्र शाब्दिक विचार किया है परंतु यह कि वास्तविकता में कदम रखकर एक साथ कार्यकारी समाधान खोजें जाएं।

चित्र
उत्तर पश्चिम दिल्ली के सहोदय स्कूल कॉम्पलेक्स के वार्षिक सम्मेलन में उपस्थित श्री विनीत जोशी, सीबीएसई अध्यक्ष एवं सचिव।

सी.बी.एस.ई के अध्यक्ष श्री विनीत जोशी की उपस्थिति ने सम्मेलन को एक उत्कृष्ट मंच प्रदान किया कि विचार और कार्यों द्वारा अति आवश्यक प्रेरणा का प्रतिपादन आरंभ किया जाए। उन्होंने उचित रूप से कहा कि विद्यालयों की सुरक्षा की चिंता आज के परिप्रेक्ष्य में कहीं अधिक मायने रखती है क्योंकि माता–पिता अपने बच्चों के कल्याण को शिक्षण संस्थानों के हाथ में सौंप देते हैं। इस कारण बच्चों की शारीरिक सुरक्षा ही एकमात्र विषय नहीं वरन उनकी सामाजिक और भावनात्मक सुरक्षा भी बराबर का महत्व रखती हैं। विद्यालय में विद्यार्थियों की भिन्न भिन्न प्रवृति को समझना और उसके साथ व्यवहार करना तथा यह सुनिश्चित करना कि विभिन्न आयु वर्ग के विद्यार्थी किसी भी प्रकार परस्पर विरोधी न हो जाएं। **कम आयु के विद्यार्थियों के लिए ऐसा स्थान बनाना चाहिए जिसमें वे अपनी भावनाओं को व्यक्त करने और असुविधा की चर्चा करने में स्वतंत्रता का आभास करें।** श्री जोशी ने कहा कि **स्कूल में बच्चे का दैनिक अनुभव ही विद्यालय को अच्छा या बुरा बनाता है।** उन्होंने **''छात्राओं की सुरक्षा''** पर विशेष ध्यान देने पर बल दिया। जागरूकता की और संवेदना की कमी के कारण छोटी लड़कियां अपनी समस्याओं के बारे में चर्चा कर पाने में असमर्थ होती हैं। ऐसी समस्या का हमारा एक मात्र समाधान हैं, खुली संपर्क प्रणाली का विकास जिसमें शिक्षकों, माता–पिता और विद्यार्थियों में नियमित संपर्क बना रहे। विद्यालय के कर्मियों को भी स्वास्थ्य एवं संवेदना का प्रशिक्षण प्रदान किया जाए जिसमें बच्चों की सुरक्षा और बच्चों के साथ दुर्व्यवहार जैसे विषयों पर विचार किया जाए तथा प्रस्ताव प्रस्तुत किए जाएं।

सामाजिक सुरक्षा के अतिरिक्त समाज के ***''वातावरण''*** की सुरक्षा भी महत्त्वपूर्ण हैं। उदाहरणार्थ विद्यालय में पेय जल की गुणवत्ता दिल्ली जल बोर्ड का ही नहीं, विद्यालय का भी बराबर का उत्तरदायित्व है। अतः इस विषय में सुरक्षा – शारीरिक, भावनात्मक और सामाजिक के विभिन्न उपायों का निर्वाह सब संस्थानों द्वारा सहकारिता में किया जाए जिससे कि परिपूर्ण सुरक्षित एवं संवेदनशील वातावरण बनाया जाए।

चित्र
उत्तर पश्चिम दिल्ली के सहोदय स्कूल कॉम्प्लेक्स के वार्षिक प्रधानाचार्य सम्मेलन में श्री विनीत जोशी विद्यालयों में सुरक्षा संबंधित विभिन्न विषयों पर सविस्तार व्याख्यान देते हुए।

इसके बाद डॉ. जितेंद्र नागपाल, विमहान्स के पाठ्यक्रम निदेशक ने सम्मेलन को संबोधित करते हुए बाल शोषण पर विस्तारपूर्वक विवेचन किया। उन्होंने सुरक्षा (दुर्व्यवहार से), प्रबंधन (अधिकार एवं क्षेत्रीय देखरेख), और भागीदारी (बच्चों से संबंधित विषयों में निर्णय लेना) आदि पर चर्चा की। उन्होंने नाना प्रकार के बाल शोषण जिसमें शारीरिक, भावनात्मक, शोषण संबंधित और यौन शोषण सम्मिलित हैं, पर चर्चा की। उन्होंने बाल शोषण रोकने में विद्यालय की भूमिका पर भी सविस्तार विचार व्यक्त किए जैसे कर्मियों को प्रशिक्षण देना कि शोषण के चिन्हों के प्रति सतर्क रहे, कर्मियों द्वारा शोषण प्रवण व्यवहार से बचाव की विधियां और कर्मियों द्वारा किसी भी प्रकार के संभावित बाल शोषण से

बचाव की नीति। उन्होंने अनेक सुरक्षात्मक उपाय सुझाए जैसे घर में स्वतंत्र वातावरण बनाना जिससे कि बच्चा अपनी समस्याओं को प्रकट कर पाएं और बच्चे को उसके शरीर के बारे में शिक्षा देना और ***भले एवं बुरे स्पर्श*** का विचार समझाना। विद्यालयों का यह महत्त्वपूर्ण कार्य है कि सतत भय अर्थात बाल शोषण से लड़ने में सहायता हेतु ***जीवन कौशल*** सिखाना – बच्चों को सिखाना कि अपना अधिकार जताएं। व्यापक सुरक्षा कार्यनीति को कार्यकारी होने के लिए विद्यालय और माता–पिता को इस समस्या से लड़ने के लिए सहकर्मी बनाना होगा। उन्हें संकोच को त्यागकर यह ध्यान रखना है कि बच्चे की सुरक्षा उनका प्रमुख चिंता का कारण है।

चित्र
उत्तर पश्चिम दिल्ली, सहोदय स्कूल कॉम्प्लेक्स के वार्षिक प्रधानाचार्य सम्मेलन में डॉ. जितेंद्र नागपाल बाल–शोषण पर विचार व्यक्त करते हुए।

सहायक उपायुक्त, पुलिस (सुरक्षा मुख्यालय) श्री ऋषि पाल सिंह ने विद्यालयों द्वारा अपने विद्यार्थियों के अध्ययन हेतु सुरक्षित क्षेत्र तैयार करने के लिए व्यवहार्य उपायों पर बड़ा मूल्यवान संदेश दिया। उन्होंने सुझाया कि विद्यालय सीमा पर रेत के बोरे रखवाएं जो आपात स्थिति में सहायक तो होते हैं बल्कि वे एक पूर्ण सुरक्षित विद्यालय की छवि भी प्रकट करते हैं। उन्होंने अन्य उपाय भी सुझाए जैसे विद्यालय के परिक्षेत्र में उचित प्रकाश का प्रबंध, कर्मियों के फिंगर प्रिंट तथा आपदा की चेतावनी हेतु 'हूटर' स्कूल के उत्सवों आदि में अवांछित व्यक्तियों के प्रवेश निषेध हेतु पूर्ण जांच एवं सर्तक निरीक्षण एक उचित विचार होगा। विद्यालय के सहायक कर्मियों का सत्यापन पुलिस द्वारा होना चाहिए और स्कूल बसों में बच्चों की सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए कठोर कदम उठाए जाने चाहिए। किसी भी दुर्घटना के लिए विद्यार्थियों एवं कर्मियों को तैयार करने के सर्वोत्तम विधि है कि आपातकालीन निकास परियोजना जिस पर नियमित अभ्यास किया जाए जिससे कि कभी वास्तविक आपदा आ पड़े तो वे सुनियोजित एवं व्यवस्थित कार्य के लिए तैयार पाए जाएं।

हार्ट एंड लंग इंस्टीट्यूट के निदेशक, प्रतिष्ठित शल्य चिकित्सक, डॉ. गणेश मन्त ने ***"समुदाय आपदा तैयारी"*** पर विचार व्यक्त किए। उन्होंने सरकारी सहायता के अभाव में भी आत्मनिर्भरता बढ़ाने के समुदाय आधारित कार्यक्रमों की चर्चा की जो प्राथमिक चिकित्सा प्रशिक्षण एवं पारिवारिक आपदा परियोजना बनाने के द्वारा उपलब्ध की जा सकती थी। उन्होंने समझाया कि खतरा जोखिम और प्रहार सुलभता दोनों का कार्य है और हम अपने आपको सशक्त बना कर कम कर सकते हैं समुदाय की क्षमता को बढ़ाकर और एक साथ फुर्ती से काम करने के लिए अपने आप को सशक्त बनाकर प्रहार प्रवृत्ति को कम कर सकते हैं। मानवीय असुरक्षा दरिद्रता, जनसंख्या वृद्धि, शहरीकरण, पर्यावरण की दुर्वस्था, जागरूकता की कमी आदि के कारण बढ़ जाती है। यह मानकर कि हमारा देश इन परिवर्तनों से गुज़र रहा है, हमारे पास अपने समुदायों द्वारा तैयार प्रतिक्रिया कार्यक्रम होना चाहिए। हमारा लक्ष्य यह होना है कि एक ऐसी सुरक्षा संस्कृति विकसित करें जिसमें सार्वजनिक शिक्षा मुख्य भूमिका निभाती है। यही कारण है कि एक बार फिर विद्यालय दृश्य में प्रकट होते हैं और जोखिम विघटन कार्यनीति में साधन बन जाते हैं।

हार्ट एंड लंग इंस्टीट्यूट से ही डॉ. अंजू ने **"एबीसी फॉर लाइफ प्रोग्राम फॉर स्कूल"** पर विस्तृत चर्चा की जिसमें उन्होंने विद्यालय के सामने आने वाली संभावित आपदाओं पर अपने विचार प्रस्तुत किए जैसे चिकित्सा आपात स्थिति, चोट लगना, जलना आदि। आपदा की तैयारी विद्यालय की महत्वपूर्ण विशेषता है क्योंकि यह आपात स्थिति में समुदाय की तत्परता से बहुत अधिक जुड़ा होता है। उन्होंने सुझाव दिया कि प्रत्येक विद्यालय प्रशिक्षित चिकित्सा कर्मी और चिकित्सा बॉक्स का नियोजन करे और निकट के अस्पताल से घनिष्ठ संबंध बनाए जिससे कि आपातकालीन स्थिति में तात्कालिक प्रतिक्रिया संभव हो। विद्यालयों के दुर्घटना संभावित क्षेत्रों का तथा आपातकालीन निकासों का भी निरीक्षण किया जाना आवश्यक है तथा स्कूल बसों को सुरक्षित बनाने के लिए विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। बच्चों को आरंभ से ही आधारभूत प्राथमिक चिकित्सा की शिक्षा दी जाए और कर्मियों को प्रशिक्षण प्रदान किया जाए कि आवश्यक जीवन रक्षक उपाय जैसे सीपीआर आदि कर पाएं। विद्यालय को सुरक्षा के प्रति जगाने के लिए घातक दुर्घटना की आवश्यकता नहीं है – सुरक्षात्मक उपाय पहले से ही उपस्थित होना चाहिए।

एक और ज्ञानवान विवेचन डॉ. साधना पराशर, शिक्षा अधिकारी, (सीबीएसई) द्वारा किया गया जो ***सुरक्षित विद्यालय, सुरक्षित भारत*** के दर्शन पर था। उन्होंने सुरक्षा के विभिन्न आयामों – शारीरिक (मार–पीट, चिकित्सा संबंधित दुर्घटना, जोखिमें, आपदा), मानसिक (शाब्दिक पीड़ा, बुलीइंग, ऊंचनीय का दबाव दुष्कर्म) और सामाजिक (नशा, परेशान करना, प्रयोग करना) विद्यालय इन समस्याओं के प्रति कार्यवाही करने में सीमित होते है क्योंकि पीड़ित जन भय के, लज्जा के, आत्मग्लानि के और निराशा के कारण शिकायत नहीं करते हैं। इस कारण ***सुरक्षित विद्यालय कार्यक्रम*** की आवश्यकता है जो एक स्वस्थ शारीरिक, सामाजिक, आर्थिक और समुदाय आधारित वातावरण का निरूपण करें। विद्यालयों के लिए आवश्यक है कि वे अपने आंकड़ों और वर्तमान नीतियों का पुनरावलोकन करें और तब वर्तमान क्रियाविधि में उपस्थित रिक्त स्थानों को पहचानें जिससे कि वे संसाधनों के सादृश्य में प्राथमिकताओं का निर्धारण करें। ***आपदा प्रबंधन में चार मुख्य चरण हैं – कमी, रोकथाम, तैयारी, प्रतिक्रिया और उद्धार*** तथा योजना में आवश्यक है उद्देश्य, समर्पण, समय और सहकारिता। डॉ. पराशर ने सुझाव दिया कि इस ***सामान्य विद्यालय सुरक्षा नियमावली*** होना चाहिए जिसमें सुरक्षा एवं रोकथाम के विषयों का परिचय विद्यार्थियों शिक्षकों और माता–पिता को दिया जाए। विद्यालय की सुरक्षा योजना तैयार करते समय ध्यान देने योग्य बातें हैं – ***जनांकिकी, सामुदायिक संसाधन, इमारत की सुरक्षा, रोकथाम/बीच–बचाव, प्रतिक्रिया और उद्धार।*** आपातकालीन कार्यवाही में निपुणता, परीक्षण कार्य और कमियां पहचानने के लिए निरंतर अभ्यास किया जाना चाहिए। डॉ. पराशर ने ***कम्प्रीहेन्सिव स्कूल हेल्थ मैनुअल*** का भी सदंर्भ दिया जिसमें व्यवहार और ***जीवन युक्तियों, शारीरिक योग्यता, भोजन एवं पोषण, व्यक्तिगत एवं पर्यावरण की सुरक्षा और उत्तरदायी एवं सुरक्षित*** रहने के निर्देश है।

राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के वरिष्ठ विशेषज्ञ, मेजर जनरल राज कौशल ने विद्यालयों में होने वाले अपराध और मार–पीट और उन्हें रोकने के उपायों पर बल दिया। उन्होंने उन कारकों का का उल्लेख किया जो विद्यालयों में सुरक्षा को प्रभावित करते हैं – सुरक्षा (हार्डवेयर, प्रौद्योगिकी, शिष्टाचार) विद्यालय की रचना (प्राकृतिक निगरानी, सीमांत प्रबलीकरण) और विद्यालय का वातावरण (मूल्य, मानदंड, व्यवहार)।

खाड़ी देशों में सीबीएसई संबद्ध विद्यालयों की समिति में वार्षिक चुनाव

खाड़ी देशों में सीबीएसई संबद्ध विद्यालयों की समिति ने अपने पदाधिकारियों के नामांकन हेतु सभा का आयोजन किया।

सभा में निम्नलिखित पदाधिकारियों का चुनाव किया गया।

अध्यक्ष – डॉ. ए एस पिल्लै

सचिव – श्रीमती नीलम उपाध्याय

कोषाध्यक्ष – श्रीमती अनुभा निझावन

वित्त अभिरक्षक – श्रीमती मालती दास

क्षेत्र समन्वयक

यूएई क्षेत्र – श्रीमती रश्मि नंदकेओलयार

ओमन क्षेत्र – श्री टी. प्रेमकुमार

कतार क्षेत्र – श्री एफ. एम. बशीर अहमद

बहरीन क्षेत्र – श्री अरुण कुमार शर्मा

साउदी क्षेत्र – डॉ. ई. के. मोहम्मद शाफी

कुवैत क्षेत्र – फादर लायोनेल ब्रेगेंजा एसबीडी

''सुरक्षा नहीं, कष्ट उठाओ
सुरक्षा जानो, कष्ट नहीं''

हरित पृष्ठ

टीपीएस वैशाली, जयपुर में अर्थ डे

टैगोर पब्लिक स्कूल, जयपुर के विद्यार्थियों ने बड़े जोश और उत्साह में 22 अप्रैल, 2009 को **''अर्थ डे''** (पृथ्वी दिवस) मनाया।

प्रातः कालीन सभा में बच्चों ने शपथ ग्रहण की कि धरती माता को ग्लोबल वार्मिंग, प्रदूषण, निर्वनीकरण, और सूखे के अवश्यंभावी खतरे से सुरक्षित करेंगे।

विद्यालय के सांगा हाउस के सदस्यों ने लघु नाटक में दिखाया कि बीते वर्षों में पृथ्वी हरियाली और प्राचीन वातावरण में स्वस्थ और जीवंत थी।

आधुनिकरण और विकास के आगमन से पृथ्वी प्रदूषण और निर्वनीकरण से ग्रस्त हो गई है। नाटक ने पृथ्वी के विनाश का पूर्वानुमान लगाया, जब तक कि वातावरण के विघटन को रोकने का प्रयास न किया जाए।

इसके बाद विद्यार्थियों ने बैनर और पोस्टरों पर पर्यावरण सुरक्षा तथा पृथ्वी को स्वच्छ एवं सुरक्षित रखने के संदेशों के साथ रैली निकाली।

चित्र
टीपीएस वैशाली, जयपुर ''अर्थ डे'' के उपलक्ष्य में रैली निकालते हुए

गांधी नगर पब्लिक स्कूल में अर्थ डे

गांधी नगर पब्लिक स्कूल ने बड़े जोश उत्साह से ''अर्थ डे'' मनाया। **''मेन्स एंडलेस डिज़ायर्स : पुटिंग दी अर्थ ऑन स्टेक''** (मनुष्य की अनंत अभिलाषा – पृथ्वी को संकट में डालना) विषय पर इंटर हाउस भाषण प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया।

वाक् प्रतियोगिता के माध्यम अंग्रेजी और हिंदी दोनों भाषा में था। कक्षा छठवीं से दसवीं के विद्यार्थियों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया और दर्शकों को अपने क्रांतिकारी विचारों से सोचने पर बाध्य किया। उन्होंने मानवीय कार्यों की पृथ्वी के सौंदर्य और उर्वरक क्षमता के विघटन की ही आलोचना नहीं की वरन् परिवेश संतुलन के साथ–साथ औद्योगिकरण और शहरीकरण के अनवरत विकास के लिए ठोस सुझाव भी प्रस्तुत किए।

प्रधानाचार्य श्रीमती शशि शर्मा ने विजेताओं की सराहना की और विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया कि वे इन सुझावों को जीवन में लागू करें।

चित्र

गांधी नगर पब्लिक स्कूल में ''अर्थ डे'' के उपलक्ष्य में आयोजित भाषण प्रतियोगिता में भाग लेते विद्यार्थी

सी.सी.ए.एस जैन सीनियर सेकंडरी स्कूल गन्नौर में ''अर्थ वीक''

परिवेश संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता के प्रति विद्यार्थियों को संवेदनशील बनाने हेतु सी.सी.ए.एस. जैन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय ने अप्रैल 17–23, 2009 ''अर्थ वीक'' रखा। सप्ताह के प्रथम दिन पोस्टर बनाने की प्रतियोगिता रखी गई। विद्यार्थियों ने इस ग्रह के समक्ष उपस्थित अनेक वर्तमान समस्याओं का चित्रण किया। समस्त विद्यार्थियों और शिक्षकों ने शपथ ग्रहण की कि वे पानी बचाएंगे। प्रधानाचार्य श्रीमती बी. भाटिया ने पानी बचाने की अनेक विधियां समझाई, उसी दिन विद्यालय ने **''नो पॉलीथीन दिवस''** भी मनाया। विद्यार्थियों और शिक्षकों में से कोई भी उस दिन प्लास्टिक बैग लेकर नहीं आया। रविवार, 19 अप्रैल छोटे बच्चों का फैन्सी ड्रेस कॉम्पीटिशन रखा गया। बच्चों ने अपनी ही रीति से पृथ्वी की रक्षा का संदेश दिया। विद्यार्थियों ने पेड़ों के समान वस्त्र धारण करते हुए संदेश दिया **''पेड़ काटने को न कहें'',** प्लास्टिक बैग वस्त्रधारियों का संदेश था कि उन्हें काम में न लें और नदियों का संदेश था कि उन्हें प्रदूषित न करें। 21 अप्रैल को सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन विद्यालय में वृक्षारोपण द्वारा किया गया। विभिन्न प्रजातियों के 100 वृक्ष विद्यार्थियों द्वारा लगाए गए।

चित्र
सीसीएएस जैन सीनियर सेकंडरी स्कूल, गन्नौर द्वारा आयोजित पर्यावरण मुद्दों पर जागरूकता अभियान।

22 अप्रैल ''शहर की सड़कों से जुलूस निकालते हुए और जनसाधारण में जागृति उत्पन्न करते हुए 'अर्थ डे' को विशेष बनाया गया। विद्यार्थी बैनर, पोस्टर, प्ले कार्ड आदि उठाए हुए थे जिन नारे लिखे थे।

> संभवतः सर्वोत्तम माता–पिता होने का अर्थ है छोटे बच्चे को सिखाना कि सुरक्षा से प्रेम करें, जिससे कि वह उत्तरकाल में भावना के उभरने पर निर्भय होकर कर्त्तव्य उठाने का साहस करें ....
>
> **फ्रेया स्टार्क**

शैक्षणिक अपडेट

आई.आई.एम. बैंगलोर प्रधानाचार्यों के लिए प्रथम प्रशिक्षण कार्यक्रम

शिक्षण अभ्यासों के समय आश्रित स्वभाव को ध्यान में रखते हुए बोर्ड प्रधानाचार्यों के नेतृत्व को विकसित करने, योजना बनाने और प्रबंधन निपुणता को बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रतिष्ठित संस्थानों के सीबीएसई विद्यालयों प्रशिक्षण कार्यक्रमों का नियमित आयोजन करता रहता है। वर्तमान शैक्षिक सत्र में पहला कार्यक्रम आईआईएम बैंगलोर में 18 से 22 मई 2009 के मध्य आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में संपूर्ण देश से सीबीएसई विद्यालयों के 25 प्रधानाचार्यों ने भाग लिया। सीबीएसई के अध्यक्ष के कार्यकारी अधिकारी श्री यू. सी बोध ने इस कार्यक्रम में सीबीएसई का प्रतिनिधित्व किया। चिरानुभवी प्रोफेसर मालती सोमैया, कार्यक्रम निदेशक, शैक्षिक प्रबंधन के विशेषज्ञ – संसाधन व्यक्तियों के प्रमुख थे। आई.आई.एम. संकाय के सदस्य, साइकोमेट्रिस्ट भी सादर आमंत्रित थे। उन्होंने मानव व्यक्तित्व की स्वाभाविक प्रवृति और अन्य क्षेत्रों को मापने के परीक्षणों पर प्रकाश डाला। संसाधन व्यक्तियों ने प्रधानाचार्यों और व्यवस्थापकों के ज्ञानवर्धन हेतु शैक्षिक प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं पर विस्तारपूर्वक चर्चा थी। विषयवस्तु को सर्वांगीण शैक्षिक परिप्रेक्ष्य प्रदान करने हेतु और सामाजिक विकास में शिक्षा की भूमिका का सारांश प्रस्तुत करने हेतु तैयार किया गया था। संस्थान की इमारत, प्रधानाचार्यों की भूमिका, संपर्क युक्तियां, नेतृत्व की शैली और शैक्षिक प्रशासन में अभ्यासों जैसे विषयों पर विस्तृत सत्र संचालित किए गए।

चित्र
आई.आई.एम. बैंगलोर में आयोजित प्रथम प्रशिक्षण कार्यक्रम के उत्साही सहभागी

चित्र
श्री यू. सी. बोध सीबीएसई अध्यक्ष के कार्यकारी अधिकारी पाठ्यक्रम निदेशक प्रो. मालती सोमैया से प्रमाणपत्र ग्रहण करते हुए

चित्र
आई.आई.एम. बैंगलोर में द्वितीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के मध्य कार्यक्रम निदेशक के साथ सहभागी प्रधानाचार्य गण

आई.आई.एम. बैंगलोर प्रधानाचार्यों के लिए द्वितीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

श्रृंखला का दूसरा कार्यक्रम 1–5 जून 2009 के मध्य आयोजित किया गया जिसमें संपूर्ण देश से 25 प्रधानाध्यापकों ने भाग लिया। पांच दिन से इस कार्यक्रम में शैक्षिक प्रबंधन, संस्थान की इमारत, शिक्षार्थियों का बलवर्धन, समय का प्रबंध, आई.टी. का महत्त्व, अंशस्वामियों को प्रभावित करना, साइकोमेट्रिक मूल्यांकन और संपर्क युक्तियों पर चर्चा एवं वाद–विवाद विहित था। सहभागियों ने देखा कि समस्त संसाधन व्यक्ति निपुणता और ज्ञान से परिपूर्ण थे। समस्त विषयों पर सजीव विवेचन किए गए। प्रधानाचार्यों के कार्य जैसे विषयों – योजना बनाना, आयोजन करना, कर्मी नियुक्त करना, निर्देश

देना, मूल्यांकन करना – पर पर्याप्त बल दिया गया। सहभागियों को सोचने पर बाध्य किया गया कि एक बलवंत शिक्षार्थी कौन है; विद्यालय के प्रबंधन की कार्यनीति कैसे तैयार करें और एक प्रधानाचार्य अपने कर्मियों और विद्यार्थियों की कैसे दर्शन, योग्यता और शक्ति प्रदान कर सकता है। सत्र सबके लिए अत्यधिक रुचिकर और प्रेरणादायक थे और सहभागियों द्वारा प्रतिसूचना एवं सुझाव देने से समाप्त हुए।

> ज्ञान में शिक्षा की बृहत परिभाषा के समस्त अवयव नहीं होते है। भावनाओं को अनुशासन में रखना होता है। जोश को सीमाओं में रखना होता है। सच्ची और सुयोग्य उद्देश्यों को प्रेरित करना होता है... ... और परिशुद्ध नैतिकता को हर परिस्थिति में अपनाना होता है।
>
> **डेनियल वेबस्टर**

क्रीड़ा जगत

डी.ए.वी पब्लिक स्कूल, चंद्रशेखरपुर – खेलकूद समागम

डी.ए.वी पब्लिक स्कूल, चंद्रशेखरपुर ने हाल ही में वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया। विद्यालय के विद्यार्थी चार 'हाउस' में विभाजित थे, विद्यालय के विद्यार्थियों अपाल्ला, गर्गी, मैत्री, और सिकता ने रंगारंग 'ड्रिल' द्वारा शान्ति और एकता के विचार को सृजित किया। विद्यालय के विद्यार्थियों ने आतंकवाद पर भी कार्यक्रम प्रस्तुत किया। सीबीएसई के भुवनेश्वर क्षेत्र के प्रभारी, श्री पीयूष शर्मा ने कहा कि खेल–कूद मानव की सहज क्षमता है। जिसे प्रधान महत्त्व दिया जाना चाहिए और बच्चों में इस गुण को बढ़ाने के सबसे उपयुक्त अभिकर्ता विद्यालय है।

मुख्य अतिथि ने विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को ट्राफी वितरित कीं।

चित्र
डी.ए.वी.पब्लिक स्कूल चंद्रशेखरपुर खेलकूद प्रतियोगिता के अवसर पर सलामी–मार्च करते हुए।

टीपीएस वैशाली, जयपुर द्वारा तैराकी पाठ्यक्रम का परिचय

विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर लक्ष्य साधते हुए **टैगोर पब्लिक स्कूल वैशाली नगर** ने तैराकी में एक नया पाठ्यक्रम आरंभ किया है।

यह निर्णय अधिकारियों द्वारा लिया गया था कि शारीरिक योग्यता कार्यक्रम का नियमित संचालन हो सके।

तैराकी प्रशिक्षण विशेषज्ञ मार्गदर्शन के अधीन दिया जाता है। लड़के और लड़कियों का समय अलग–अलग है। छात्राओं के लिए विशेष करके महिला प्रशिक्षक नियुक्त की गई हैं।

इसका परम उद्देश्य है कि देश के विभिन्न भागों में आयोजित वार्षिक सीबीएसई तैराकी प्रतियोगिता के लिए विद्यार्थियों का समूह तैयार किया जाए।

चित्र
टैगोर पब्लिक स्कूल, जयपुर के विद्यार्थी तैराकी का आनंद लेते हुए।

रामकृष्णा विवेकानंद विद्यापीठ – वार्षिक खेलकूद समागम

वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता रामकृष्ण विवेकानंद विद्यापीठ, बिजूरी का उद्‌घाटन कबूतरों को उड़ाने से किया गया। प्रधानाचार्य डॉ. एस. आर. सिंह ने अपने स्वागत संदेश में अतिथियों को विद्यालय के बच्चों के प्रोत्साहन एवं प्रेरणा देने के लिए धन्यवाद दिया।

यह तीन दिवसीय समागम दक्षता, दृढ़ता और स्पर्धा का प्रदर्शन था। प्रतियोगिता का आरंभ विद्यालय विभिन्न हाउस के केप्टन के नेतृत्व में सलामी – मार्च से आरंभ हुआ और इसके बाद आरंभ हुई प्रतियोगिता। प्रतियोगिता तीन वर्गों में विभाजित की गई थी – प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च माध्यमिक। चारों हाउस के विद्यार्थियों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लिया। समापन दिवस पर प्रफुल्लित विद्यार्थियों और हाउस मास्टर्स के बीच विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए। आरकेवीवी के पूर्व निदेशक ने विजेताओं में पुरस्कार वितरण किया। विद्यार्थियों और शिक्षकों की सक्रिय सहभागिता ने समागम को महान सफलता प्रदान की है।

चित्र
रामकृष्ण विवेकानंद विद्यापीठ, बिजूरी की वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता में एक विद्यार्थी स्पोर्ट्स चार्ट पर ब्योरा देते हुए

बॉस्को पब्लिक स्कूल दिल्ली, – खेलकूद प्रतियोगिता

बॉस्को पब्लिक स्कूल, पश्चिम विहार, नई दिल्ली ने हाल ही में अपनी वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता। 'अमोघ' का आयोजन किया।

प्रतियोगिता का मुख्य आकर्षण था, 'उमंग' के बच्चों की रंगभरी सहभागिता–विशिष्ट बच्चों के लिए बॉस्को की शाखा। उन्होंने प्रदर्शन को अपने अबोध और मंत्रमुग्ध करने वाली संस्कृति और पथ प्रदर्शनों द्वारा अभिभूत कर दिया। अंत में विद्यार्थियों को खेलकूद में उनके प्रदर्शन के लिए पुरस्कार दिए गए।

चित्र
बॉस्को पब्लिक स्कूल, दिल्ली में आयोजित वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता में उपस्थित विदेशी प्रतिनिधि।

सीबीएसई द्वारा प्रकाशित "स्कूल हेल्थ मैनुअल" के कुछ अंश

खण्ड 2 के अंश (ग्रेडेड एक्टीविटीज़ क्लासेज़ I – V)

कार्यकलाप – सुरक्षा थैला

विचार
सुरक्षित रूप से यात्रा करना चिंता का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है।

उद्देश्य
बच्चों में नवीनतर विचार उत्पन्न करना (रचनात्मक सोच)–मार्ग में यात्रा करते समय सुरक्षा विषयों के संबंध में

आवश्यक सामग्री
मार्ग सुरक्षा यातायात के नियमों के पोस्टर्स

आचरण
वैयक्तिक

समय
प्रत्येक बच्चे के लिए एक मिनट

पृष्ठभूमि :

प्रत्येक बच्चे को यह जानकारी होनी चाहिए कि सुरक्षित रहकर विद्यालय कैसे जाएं और चलकर सुरक्षित घर कैसे पहुंचे। आजकल यात्रा करने में दुर्घटनाएं एक आम बात हो गई हैं। बच्चे को यात्रा करते समय किसी भी समय न्यूनतम "जीवन कौशल" का ज्ञान होना आवश्यक है कि वह अपना और मार्ग में अपने साथी के जीवन संकट में न पड़ने दे। उसका उद्देश्य यह होना चाहिए कि स्वयं सुरक्षित गाड़ी चलाएं और दूसरों को भी सुरक्षित गाड़ी चलाने दें।

कार्यविधि :

1. कक्षा से सात वक्ताओं का चयन करें।
2. भाषा की किसी कक्षा के समय विद्यालय में आशु वाक् प्रतियोगिता का आयोजन किया जाए।
3. विद्यार्थियों को विभिन्न मुद्दों, होने वाली दुर्घटनाओं के बारे में शिक्षक समय समय पर संक्षेप में जानकारी देते रहें।
4. सूचित तिथि पर उचित निर्देश देते हुए बच्चे से आग्रह किया जाए कि वह सुरक्षा के संबंध में अपने विचार व्यक्त करें।
5. उन्हें अलग–अलग परिस्थितियां दी जाएं जैसे मार्ग में, हवाई यात्रा में, रेलगाड़ी में, चलते समय, लंबी पदयात्रा में आदि .....

प्रस्तुतीकरण में सुरक्षा मानदंडों पर प्रकाश डालने की आवश्यकता समझी जाए।

अवलोकन :
विद्यार्थी दिए गए विषय पर बोल सकेंगे और दूसरों के विचारों से लाभ प्राप्त करेंगे।

निष्कर्ष :
आशु वाक् प्रतियोगिता बच्चों में वाक्–दक्षता और रचनात्मक सोच विकसित करने की एक अत्यधिक स्वास्थ्यवर्धक विधि है।

अनौपचारिक आकलन

(i) ***संग्रह करना :*** ''माइ रोल इन बिल्डिंग ए सेफ सोसायटी'' (सुरक्षित समाज बनाने में मेरी भूमिका) विषय पर समाचार पत्रों से कतरनें एकत्रित करके संग्रह तैयार करें।

(ii) सुरक्षा थैला क्या है? इसमें क्या–क्या होना चाहिए।

(iii) विद्यार्थियों को बाहर मैदान में हॉकी/क्रिकेट/वॉलीबॉल मैच के लिए ले जाएं। उन्हें कक्षा के लिए अपना सुरक्षा थैला तैयार करने को कहें और उसे संपूर्ण सत्र संभाल कर रखें।

- यात्रा करते समय सुरक्षा संबंधित कौन कौन सी तैयारियां करनी चाहिए। बच्चा यातायात का अपना साधन स्वयं चुने।
- बच्चों को सतर्कता और आत्मविश्वास के साथ बैठना, खड़े होना और चलने का अभ्यास करवाया जाए। उन्हें देखने और बोलने का अभ्यास करवाया जाए जिससे कि श्रोता उन्हें कम परेशान करें और उनकी बात पर अधिक ध्यान दें। वे यह अभ्यास भी करें कि परिवेश की घटनाओं में जो हो रहा है उस पर ध्यान दें और उसका निरीक्षण करें जिससे कि वे दुर्घटना घटने से पहले बचाव कर पाएं।

मुख्य संदेश

(i) पहले से योजना बनाना
(ii) अपनी निगरानी करना
(iii) रोकथाम अभिमुख होना
(iv) सुरक्षा थैलों की युक्तियुक्त रचना करना

प्रस्तावित कार्यकलाप

- अपने बच्चे की आयु और क्षमता स्तर के अनुसार उचित कार्य का चयन करें। ऐसे आरंभिक कार्यों का चयन करें जिसमें आपका बच्चा असानी से सफल हो जाए। कार्यों को संभालने योग्य बनाएं। ऐसे काम दें जो रुचिकर प्रभाव उत्पन्न करें। कार्य संपन्न करने की प्रेरणा दें। निष्पादन मानक औसत रखें।
- मार्ग सुरक्षा नियमों का अभिनय।
- सुरक्षा सप्ताह का आयोजन।
- यात्रा करते समय बच्चों को सतर्क रहने की आवश्यकता संबंधित विषयों पर रचनात्मक लेखन कार्य। (लावारिस वस्तुएं, अपरिचितों से वार्तालाप, अच्छा एवं बुरा स्पर्श, वृद्धों की सहायता, युवक – युवतियां और विकलांग)
- सुरक्षा मानकों को लागू करने संबंधित समाचार पत्रों की कतरनें और रिपोर्ट।

कार्यकलाप – मैं उत्तरदायी हूं !

पृष्ठभूमि :

सार्वजनिक स्थानों में, जैसे कैंटीन, मॉल, चिड़ियाघर, सिनेमा हॉल, बाज़ार आदि, हमारा व्यवहार दायित्व से पूर्ण हो।

विधि :
बच्चों के लिए सामुदायिक परियोजना में भाग लेने की व्यवस्था करें जैसे मनपसंद बगीचे में पौधे लगाना। अपने बच्चे को समझने में सहायता करें कि खास तौर पर कोई सामाजिक विषय और अवधारण को क्यों चुना। उसे अवसर दें कि वह अपनी राय देने में पीछे न हटें।

ध्यान लगाकर सुनना
1. कक्षा को समूहों में विभाजित करें।
2. भारतीय नागरिक के उत्तरदायित्वों पर परिचर्चा आरंभ करें और विद्यार्थियों से अधिकाधिक विचारों की उत्पत्ति करवाएं।
3. उन्हें बोलने के लिए प्रेरित करें।
4. उत्तरदायी भारतवासी की आवश्यकता के विस्तृत संदर्भ में आने वाले अन्य उपविषयों को बदलते हुए परिचर्चा को विविधता प्रदान कीजिए। परिचर्चा को रोचक बनाने के लिए समाचार पत्रों से कतरने दिखाएं और विषय पर विचार मंथन करें।
5. एक विद्यार्थी को लिपिक नियुक्त करें जो कक्षा में चल रही परिचर्चा के बिंदुओं को लिखता जाए और सूचना पट पर लगाएं।
6. परिचर्चा का सार प्रस्तुत करके समापन किया जाए।

अवलोकन
विद्यार्थी कक्षा में स्वतंत्र होकर भाग लेंगे। नए–नए विचार उठेंगे और विद्यार्थी एक ही परिदृश्य को विभिन्न दृष्टिकोण से देखेंगे।

निष्कर्ष
यदि विद्यार्थी उत्तरदायी निर्णय लेने का सामर्थ्य ग्रहण करें और अपने पड़ोस, समुदाय और अपने राष्ट्र के संबंध में परिचर्चा के सहभागी हों तो वे उत्तरदायी नागरिक बनेंगे।

विचार सार्वजनिक स्थानों में उत्तरदायित्व अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है।
उद्देश्य बच्चों को सार्वजनिक स्थानों में दायित्व से पूर्ण कार्यों के प्रति जागरूक करना
आवश्यक सामग्री लेख, कहानियां संपादकीय
विधि समूह
समय 40 मिनट

अनौपचारिक मूल्यांकन

(i) रात के समय घरों से अकेले बाहर निकलना असुरक्षित क्यों हैं?
(ii) आप छुट्टी पर जाएं तो आपको अपना घर कौन–कौन से सुरक्षा साधनों से सुसज्जित करना होगा?
(iii) यातायात संकेतों और उनके अर्थ को अपनी पुस्तिका में लिखें।

मुख्य संदेश

(i) बेहतर भारत की चिंता
(ii) एकता
(iii) उत्तरदायित्व

प्रस्तावित कार्यकलाप

(i) आप सोचते हैं कि आपका घर सुरक्षित स्थान है, क्यों? अपने उत्तर की पांच तर्क संगत कारणों से पुष्टि करें।
(ii) उपरोक्त उत्तरों पर आधारित पारस्परिक क्रिया विज्ञप्ति पर अपनी कक्षा में तैयार करें।
(iii) बच्चे को आत्मनिर्भर गृहकार्य दें कि वह निम्न प्रश्नों के समाधान खोजे :

(क) क्या आपको विश्वास हैं कि आप या आपका परिवार संभवतः कभी दुर्घटनाग्रस्त नहीं होगा ?
(ख) क्या आपको विश्वास हैं कि दुर्घटना केवल दूसरों के साथ ही होती है ?
(ग) क्या आप सोचते हैं कि आपके परिवार को आज जो सुरक्षा ज्ञान है वह हर एक सदस्य को सुरक्षित रखने के लिए पर्याप्त है?
(घ) बालक / बालिका होने के नाते आप उत्तरदायी भारतीय नागरिक कहलाने के लिए कौन कौन से उपाय अपना सकते हैं?

खण्ड 3 के अंश (ग्रेडेड एक्टीविटीज़ क्लासेज़ VI – VII)

कार्यकलाप – विभिन्न परिस्थितियों में सुरक्षा नियमों का पालन

पृष्ठभूमि :

भारत एक आपदा संभावित देश है। वर्षों से इन आपदाओं ने जान और माल को बहुत हानि पहुंचाई है। अतः आपदा प्रबंधन में समय से पूर्व सर्वांगीण एवं अनवरत दृष्टिकोण और आपदा के विनाशकारी प्रभाव को कम करने के लिए आवश्यक है कि पहले ही कुछ किया जाए।

विधि :

- अध्यापक सुरक्षा नियमों के विषय विद्यार्थियों से पूछते हुए सत्र का आरंभ करें।
- तब वह नियमों को विभिन्न वर्गों में वर्गीकरण करें जैसे,
  1. सामान्य नियम 2. विशेष नियम
  (i) सड़क (ii) आग (iii) अपरिचित (iv) स्थानीय संकटों से संबंधित।

- पूरी कक्षा को छोटे–छोटे समूहों में बांटें और प्रत्येक समूह को प्रत्येक श्रेणी पर कार्य करने दें।
- प्रत्येक समूह अभिनय द्वारा और पोस्टर आदि द्वारा अपनी खोज प्रस्तुत करें।

अवलोकन :
विद्यार्थी सुरक्षा को अंतर्ग्रहण करना सुरक्षित माहौल बनाना, और आपात स्थिति को संभालना सीखेंगे।

निष्कर्ष :
विद्यार्थी को विभिन्न परिस्थितियों में पालन करने के लिए सुरक्षा नियम सीखने चाहिए, परिस्थितियां जैसे सड़क पार करने से परिवेश के अन्य खतरे जैसे अपरिचित जनों से व्यवहार।

मुख्य संदेश : सुरक्षा बचाव करती है और सावधानियां महत्त्वपूर्ण हैं।

विचार शिक्षा देना कि सुरक्षा नियम विद्यार्थियों को अपने आप को संभालने में सहायक होते हैं।
उद्देश्य • जोखिम उठाने वाले व्यवहार के परिणामों की शिक्षा देना। • उनके और दूसरों के लिए सुरक्षित निवास करने की सुविधा करना।
आवश्यक सामग्री इंटरनेट के साथ कंप्यूटर, लिखने की सामग्री, चार्ट पेपर आदि।
विधि सामूहिक कार्य
समय 2 पीरियड

अपना मूल्यांकन : हमें इन बातों को ध्यान में रखना चाहिए। जानकारी को देखें और पूरा करें।

- क्या आपके घर के सामने मकान संख्या लिखी है ?
- क्या आपकी मकान संख्या सड़क से दिन और रात में स्पष्ट दिखाई देती है? यह अत्यधिक आवश्यक है, विशेष करके एम्बुलेंस और अग्नि शमन ट्रक चालकों के लिए, कि आपका मकान खोजने में उन्हें कठिनाई न हो। ये अंक हार्डवेयर की दुकान पर सस्ते ही मिलते हैं।

पोस्टर / तथ्य पत्र के कुछ उदाहरण जिन्हें इस्तेमाल किया जा सकता है।

आग के बारे तथ्य

- आग बड़ी तेज़ी से फैलती है। कुछ ही मिनट में आपका पूरा घर आग की चपेट में होता है।
- आग का तापमान 600 डिग्री अंश होता है अर्थात् बहुत गर्म।
- आग से अंधकार छा जाता है। आपको न तो कुछ दिखता है और न ही सांस लेना संभव होता है।
- आग छोटी ही क्यों न हो, बहुत खतरनाक होती है। आग लगते ही तुरंत बाहर आकर सहायता खोजें।

आग से घर की सुरक्षा

- अपने घर का एक साधारण चित्र बनाएं जिसमें घर से बाहर निकलने के दो आपात निकास द्वार हों और प्रत्येक कमरे से निकलने के दो दरवाजे हों।
- बाहर के किसी एक सभागम स्थल पर सहमति बनाएं।
- यह निश्चित करें कि प्रत्येक बच्चे को कौन संभालेगा।
- आग लगने की स्थिति में आपातकालीन निकास द्वार के उपयोग का अभ्यास करें। (रात के समय अभ्यास करें क्योंकि रात ही में अधिकांश अग्नि कांड होते हैं।
- बच्चे जो बहुमंजिल इमारतों में रहते हैं, उन्हें सुरक्षित निकास के छोटे रास्ते दिखाएं। उन्हें चेतावनी दें कि लिफ्ट का उपयोग कदापि न करें।

आग लगने की स्थिति में

- अति शीघ्र बाहर निकलें, एक एक पल कीमती है। पड़ोसी के फोन से सहायता मांगें, जलती हुई इमारत से फोन न करें।
- अपना मुंह और नाक ढक कर रखें।
- धुंए के नीचे फर्श पर रेंगते हुए निकास द्वार तक जाएं।
- द्वार का परीक्षण करके देखें, यदि वह गर्म है तो दूसरे द्वार से बाहर निकलें।
- एक बार बाहर आ जाएं तो बाहर ही रुकें। आप से अधिक मूल्यवान कुछ नहीं है। यदि कोई दिखाई नहीं दे रहा है तो अग्नि शामक से कहें।
- अपने निर्धारित सभागम स्थल पर एकत्र हों।

- जलती हुई इमारत में कभी न जाएं।

यदि आपके कपड़ों में आग लग जाए....

- भागे नहीं। भागने से आग भड़कती है, आग से अधिक नुकसान होता है।
- सहायता के लिए चिल्लाएं, भागे नहीं।
- फर्श पर गिर कर अपना चेहरा ढक लें।
- आगे बुझाने के लिए दोनों ओर लुढ़कें।
- जले हुए अंग पर ठंडा पानी डालें।

धुआं घातक होता है।

- आग और जलने से प्रतिवर्ष सैंकड़ों बच्चों की मृत्यु होती है और हज़ारों बच्चों पर स्थायी दाग लग जाते हैं परंतु आग से जलने वालों की अपेक्षा धुएं से मरने वालों की संख्या अधिक होती है। धुआं कुछ ही मिनट में मनुष्य को घात कर सकता है।
- शयनकक्षों के अतिरिक्त घर में हर जगह ''स्मोक डिटेक्टर्स'' लगा कर अपने परिवार को सुरक्षित रखें।
- निर्माता के निर्देशों का पालन करते हुए उनका मासिक परीक्षण करते रहें। उनकी बैटरी हर वर्ष बदल दें चाहे वे काम ही क्यों न कर रही हों।
- सावधानी : खिलौनों, फ्लेश लाइट या रेडियो में इस्तेमाल के लिए बैटरी कभी नहीं निकालें।
- अपने बच्चों को ''स्मोक डिटेक्टर्स'' का प्रशिक्षण दें। डिटेक्टर्स के परीक्षण में उन्हें सहायता करने दें जिससे कि वे उसकी चेतावनी ध्वनि पहचान पाएं। इसके साथ ही आपातकालीन निकास का अभ्यास भी करें।

माचिस और बच्चों का मेल नहीं है।

- माचिस और लाइटर्स वयस्कों के लिए हैं, वे खिलौने नहीं है।
- माचिस और लाइटर्स से खेलने वाले बच्चे स्वयं तो आहत होते हैं, साथ में वे दूसरों को भी हानि पहुंचा सकते हैं।
- बच्चों को सिखाएं कि यदि वे कहीं माचिस देखें तो तुरंत वयस्कों को इसकी सूचना दें।

प्रस्तावित कार्यकलाप

कक्षा को समूहों में विभाजित करके निम्नलिखित कार्य करें एवं उन्हें विकसित भी करें।

- रुचि के अनुसार सांप – सीढ़ी खेल खेलें।
- ''क्रॉसवर्ड पज़ल'' खेलें कि शब्दकोश बढ़े।
- रंग भरने के अभ्यास करें।
- मिलान करने के खेल खेलें।
- क्विज़ खेलें।

खण्ड 4 के अंश (ग्रेडेड एक्टीविटीज़ क्लासेज़ IX – XII)

कार्यकलाप – शिक्षण अभ्यास

पृष्ठभूमि :

सब विद्यालयों में विद्यार्थियों की संख्या बढ़ जाने के कारण यह अनिवार्य हो गया है कि सब विद्यार्थियों को शिक्षा देने की ऐसी पद्धति काम में ली जाए जिससे वे संकट के समय धीरज न खोएं।

विधि :

विद्यार्थियों से एकत्र होने को कहा जाए, उन्हें सारांश में समझाया जाए, योजना बताई जाए और तब काल्पनिक स्थिति का अभ्यास आरंभ किया जाए। निश्चित समय का पालन किया जाए परिस्थिति के अनुसार प्रयोगात्मक अभ्यास किया जाए।

अवलोकन :

विद्यार्थी परिस्थिति को समझें, उसका विश्लेषण करें और घबराए बिना काम करें और संकट के प्रति मानसिक रूप से तैयार रहें।

मूल्यांकन :

- भावनाओं और प्रतिक्रियाओं की सूची बनाएं
- समय प्रबंधन
- संभावित खतरों के अनुसार अभ्यास
- नियमित अभ्यास

विचार अभ्यास एक ऐसी क्रिया है जिसे आपातकालीन स्थिति में यथावत किया जा सकता है।
उद्देश्य विद्यार्थियों को प्रशिक्षित किया जाए कि आग लगने पर, भूकंप आने पर या बाढ़ आने पर घबराए बिना, अधीरता के बिना और भगदड़ के बिना किसी इमारत को खाली किया जा सके। विद्यार्थियों को आपातकालीन अलार्म के प्रति प्रक्रिया दिखाने का प्रशिक्षण भी दें।
विधि संपूर्ण विद्यालय
आवश्यक समय 1 घंटा/2 पीरियड

कार्यकलाप – प्राथमिक चिकित्सा

पृष्ठभूमि :

जीवन की जटिलता बढ़ती जा रही है और विद्यार्थी अत्यधिक सक्रिय जीवन व्यतीत कर रहे हैं, इसलिए आवश्यक है कि वे छोटी–मोटी आपातकालीन स्थिति को स्वयं ही संभाल लें।

विधि :

कार्यकलाप का आरंभ पूर्वकालिक तैयारी से होता है, अर्थात् विद्यालय का दल – नर्स, डॉक्टर और परामर्शदाता सुनिश्चित करें कि स्थल तैयार है, सामग्री उपलब्ध हैं।

इस क्षेत्र में क्रियाशील माता–पिता भी भाग लें।

कार्यकलाप का आरंभ प्राथमिक चिकित्सा पर औपचारिक प्रस्तावना से होता है और इसके साथ ही आपातकालीन स्थिति को संभालने के मल्टीमीडिया प्रस्तुतीकरण दिखाए जाएं।

अवलोकन :
विद्यार्थी छोटी चोटों जैसे कट जाना या मोच आ जाना आदि का उपचार घबराए बिना और बिना धैर्य खोये कर सकते हैं और मोच तथा हड्डी टूटने में अंतर पहचान सकते हैं।

मूल्यांकन
- आपातकालीन स्थिति में आवश्यक सामग्री की सूची बनाएं।
- प्राथमिक चिकित्सा बॉक्स घर में तैयार करें।
- आपातकालीन स्थिति में काम में आने वाले महत्त्वपूर्ण लोगों और फोन नंबर की सूची बनाएं।

विचार प्राथमिक चिकित्सा साधारण और तात्कालिक आपात उपचार है, जो दुर्घटनाग्रस्त या रोगी व्यक्ति को दिया या प्राप्त किया जा सकता है।
उद्देश्य विद्यार्थियों को प्रशिक्षण देना कि विद्यालय के खेल के मैदान या आस–पड़ोस में छोटी–मोटी चोटों की देखभाल करें।
विधि सामूहिक कार्य
समय 1 दिवसीय कार्यशाला